केंद्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

कोलकाता संभाग

KOLKATA REGION

अध्ययन सामग्री (2023-24)

कक्षा - X

विषय - हिंदी 'अ' कोड - (002)

मुख्य संरक्षक

श्री वाई. अरुण कुमार

(उपायुक्त, के. वि. सं., क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता)

संरक्षक

श्री संजीव सिन्हा

(सहायक आयुक्त)

समन्वयक

श्री नंद किशोर सोनी, प्राचार्य के. वि. पानागढ़

संकलन, सुधार एवं जाँच समिति

डॉ. आर के पांडेय, पी.जी.टी. हिंदी के. वि. पानागढ़

श्री ब्रजेश चौधरी, टी.जी.टी. हिंदी, के. वि. पानागढ़

मुख्य संसाधक

श्री अजीत कुमार मिंज, टी.जी.टी. हिंदी, के. वि. सुकना

श्री दिनेश चंद्र तिवारी टी.जी.टी. के. वि. अलीपुरद्वार जं.

श्री प्रेम प्रकाश सिंह टी.जी.टी. हिंदी, काँचड़ापाड़ा नं. 1

योगदान कर्ता

SL. No.	Name of KV	Name of Teachers	WORK ASSIGN
1	सुकना	श्री अजित कु. मिंज (टी.जी.टी हिंदी)	संसाधक (RESOURCE PERSON) क्षितिज भाग-2 संकलन एवं संपादन, सूरदास के पद, नेताजी का चश्मा
2	मालदा (एन.एह.पी.सी.)	श्री रंजन प्रसाद शुक्ला (टी.जी.टी)	तीन अपठित गद्यांश, तीन अपठित पद्यांश
3	बरहामपुर	श्री मनोज कु. (टी.जी.टी हिंदी)	मेरे बचपन के दिन, इस जल प्रलय में
4	बेंगडुबी	श्री गोपाल प्रसाद गुप्ता (टी.जी.टी)	तीन पठित गद्यांश, तीन पठित पद्यांश
5	अलीपुरद्वार जं.	श्री दिनेश चंद्र तिवारी (टी.जी.टी हिंदी)	संसाधक (RESOURCE PERSON) व्याकरण - रचना के आधार पर वाक्य-भेद, वाच्य, पद-परिचय, अलंकार) रचनात्मक लेखन (अनुच्छेद लेखन, पत्र लेखन, स्ववृत्त लेखन, विज्ञापन लेखन, ईमेल लेखन, संदेश लेखन, संवाद लेखन, लघु कथा लेखन) संकलन एवं संपादन
6	(एन.एह.पी.सी.) सिंगटम	श्री अवनीश कु. (टी.जी.टी हिंदी)	राम -लक्ष्मण- परशुराम संवाद, माता का अंचल,
7	न. 2 खड़गपुर	श्री अनिल कु. (टी.जी.टी हिंदी)	रचना के आधार पर वाक्य भेद, पद- परिचय, अलंकार (श्लेष, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अतिशयोक्ति)
8	कांकीनाड़ा	सु. रजनी बाला (टी.जी.टी हिंदी)	उत्साह, अट नहीं रही है, लखनवी अंदाज़
9	सी. आर. पी. एफ. दुर्गापुर	श्री भूपेंद्र कु. (टी.जी.टी हिंदी)	यह दंतुरित मुस्कान, साना-साना हाथ जोड़ि
10	आई. आई. एम. सी. जोका	श्री दीपक प्रसाद (टी.जी.टी हिंदी)	एक कहानी यह भी, मैं क्यों लिखता हूँ
11	न. 1 कांचरापाड़ा	श्री प्रेम प्रकाश सिंह (टी.जी.टी हिंदी)	संसाधक (RESOURCE PERSON) कृतिका भाग-2 , अपठित गद्यांश एवं अपठित पद्यांश संकलन एवं संपादन
12	हासीमारा	श्री मिथिलेश कु. दीक्षित	नौबतखाने में इबादत, संगतकार, संस्कृति
13	बैरकपुर (आर्मी)	श्रीमती तिलोत्तमा (टी.जी.टी हिंदी)	विज्ञापन, संदेश लेखन, ई-मेल लेखन
14	न. 1 सॉल्ट लेक	सु. ज्योति सिंह (टी.जी.टी हिंदी)	स्ववृत्त लेखन, वाच्य, लघु कथा लेखन
15	पानागढ़	श्री ब्रजेश चौधरी (टी.जी.टी हिंदी)	बालगोबिन भगत, आत्मकथ्य, माता का अंचल

केंद्रीय विद्यालय संगठन, कोलकाता संभाग
विषय सूची

विषय सूची	विषय सूची
पाठ्यक्रम व प्रश्न-पत्र का प्रारूप	
अपठित बोध	
1. अपठित गदयांश और अपठित पद्यांश	
व्याकरण भाग	
1. रचना के आधार पर वाक्य भेद	
2. वाच्य	
3. पद परिचय	
4. अलंकार	
पठित बोध	
1. पठित गद्यांश और पठित पद्यांश	
क्षितिज भाग - 2 (गद्य खंड)	
1. नेताजी का चश्मा	
2. बालगोबिन भगत	
3. लखनवी अंदाज़	
4. एक कहानी यह भी	
5. नौबतखाने में इबादत	
6. संस्कृति	
कव्य खंड	
1. सूरदास के पद	
2. राम- लक्ष्मण- परशुराम संवाद	
3. आत्मकथ्य	
4. उत्साह, अट नहीं रही है	
5. यह दंतुरित मुस्कान, फसल	
6. संगतकार	
कृतिका भाग - 2	
1. माता का अंचल	
2. साना-साना हाथ जोड़ि...	
3. मैं क्यों लिखता हूँ	
रचनात्मक लेखन	
1. अनुच्छेद लेखन	
2. पत्र लेखन	
3. संदेश लेखन	
4. विज्ञापन लेखन	
5. ईमेल लेखन	
6. स्ववृत्त लेखन	

हिंदी पाठ्यक्रम -अ (कोड सं. 002)

कक्षा 10वीं हिंदी - अ परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2023-24

- **प्रश्नपत्र दो खंडों, खंड 'अ' और 'ब' में विभक्त होगा।**
- **खंड 'अ' में 44 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे।**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।**
- **भारांक-{80(वार्षिक बोर्ड परीक्षा)+20 (आंतरिक परीक्षा)**

निर्धारित समय- 3 घंटे **भारांक-80**

वार्षिक बोर्ड परीक्षा हेतु भार विभाजन				
खंड – अ (बहुविकल्पी प्रश्न)				
	विषयवस्तु		**उप भार**	**कुल भार**
1	अपठित गद्यांश व काव्यांश पर चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न।			**10**
	अ	एक अपठित गद्यांश लगभग 250 शब्दों का , इसके आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5=5)	5	
	ब	एक अपठित काव्यांश लगभग 120 शब्दों का , इसके आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5=5)	5	
2	व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषयवस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/ संरचना आदि पर बहुविकल्पी प्रश्न। (1x16) (कुल 20 प्रश्न पूछे जाएँगे, जिनमें से केवल 16 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे)			**16**
	व्याकरण			
	1	रचना के आधार पर वाक्य भेद (4 अंक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	2	वाच्य (4 अंक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	3	पद परिचय (4 अंक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	4	अलंकार- (शब्दालंकार : श्लेष) (अर्थालंकार : उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण) (4 अंक) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
3	**पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग – 2**			**14**
	अ	**गद्य खंड**	7	
		1 क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषयवस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x5)	5	

		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर विद्यार्थियों की उच्च चिंतन क्षमताओं एवं अभिव्यक्ति का आकलन करने हेतु एक अंकीय दो बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x2)	2	
	ब		**काव्य खंड**	7	
		1	क्षितिज से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर एक अंकीय पाँच बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1x5)	5	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु एक अंकीय दो बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे। (1x2)	2	
	खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)				
	पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग – 2 व पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग – 2				
1	अ		**गद्य खंड**		
			क्षितिज से निर्धारित पाठों में से विषयवस्तु का ज्ञान बोध, अभिव्यक्ति आदि पर तीन प्रश्न पूछे जाएँगे।(विकल्प सहित- 25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2x3)	6	
	ब		**काव्य खंड**		
			क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु तीन प्रश्न पूछे जाएँगे। (विकल्प सहित-25-30 शब्द-सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2x3)	6	**20**
	स		**पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग – 2**		
			कृतिका के निर्धारित पाठों पर आधारित दो प्रश्न पूछे जाएँगे । (4x2) (विकल्प सहित-50-60 शब्द-सीमा वाले 3 में से 2 प्रश्न करने होंगे)	8	
2	**लेखन**				
	i		विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत-बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लेखन	6	
	ii		अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र	5	**20**
	iii		उपलब्ध रिक्ति के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त लेखन अथवा विविध विषयों पर आधारित लगभग 80 शब्दों में औपचारिक ई-मेल लेखन	5	
	iv		विषय से संबंधित लगभग 40 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन लेखन	4	

		अथवा संदेश लेखन लगभग 40 शब्दों में (शुभकामना, पर्व-त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश)		
		कुल		**80**
		आंतरिक मूल्यांकन	**अंक**	20
	अ	**सामयिक आकलन**	5	
	ब	**बहुविध आकलन**	5	
	स	**पोर्टफ़ोलियो**	5	
	द	**श्रवण एवं वाचन**	5	
		कुल		**100**

निर्धारित पुस्तकें :

1. **क्षितिज, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **कृतिका, भाग–2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

नोट – निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे–

क्षितिज, भाग – 2	काव्य खंड	• देव- सवैया, कवित्त (पूरा पाठ) • गिरिजाकुमार माथुर – छाया मत छूना (पूरा पाठ) • ऋतुराज – कन्यादान (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• महावीरप्रसाद द्विवेदी – स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन (पूरा पाठ) • सर्वेश्वर दयाल सक्सेना- मानवीय करुणा की दिव्य चमक (पूरा पाठ)
कृतिका, भाग – 2	• एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! (पूरा पाठ) • जार्ज पंचम की नाक (पूरा पाठ)	

कक्षा दसवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिए कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

अपठित बोध

अपठित गद्यांश - 1

वर्तमान समय में कम्प्यूटर की शिक्षा के बिना मनुष्य को लगभग अशिक्षित ही माना जाता है, क्योंकि अब दैनिक जीवन में कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ा है। वर्तमान सन्दर्भ में यह आवश्यक है कि शिक्षा द्वारा उत्पादिता बढ़ाने, भारत का आधुनिकीरण करने एवं देश के आर्थिक विकास पर जोर दिया जाए। इसके लिए विज्ञान की शिक्षा, कार्यानुभव एवं व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया जाना आवश्यक है।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना होता है। इसलिए शिक्षा का उपयोग सामाजिक विकास के साधन के रूप में किया जाता है। यह राष्ट्रीय एकता एवं विकास को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके द्वारा सामाजिक कुशलता का विकास होता है। यह समाज को कुशल कार्यकर्ताओं की पूर्ति करता है। यह समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण, पोषण एवं उसका प्रसार करता है। यह समाज के लिए योग्य नागरिकों का निर्माण करता है। इस तरह सामाजिक सुधार एवं उसकी उन्नति में शिक्षा सहायक होती है। आधुनिक युग में मानव के संसाधन के रूप में विकास में शिक्षा की भूमिका प्रमुख है। उचित शिक्षा के अभाव में मनुष्य कार्यकुशल नहीं बन सकता। कार्यकुशलता के बिना व्यावसायिक एवं आर्थिक सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती, इस तरह शिक्षा द्वारा मनुष्य का आर्थिक एवं व्यावसायिक विकास होता है।

व्यावसायिक शिक्षा देश की कई प्रकार की आर्थिक समस्याओं; जैसे- बेरोजगारी, निर्धनता, आर्थिक असमानता इत्यादि के समाधान में सहायक सिद्ध होगी। इससे छात्रों की रोजगार पाने की क्षमता बढ़ेगी, कुशल जनशक्ति की माँग और आपूर्ति के बीच असंतुलन कम होगा और बिना विशेष रुचि अथवा प्रयोजन के उच्चतर अध्ययन जारी रखने वाले छात्रों के लिए एक विकल्प उपलब्ध हो जाएगा। इस तरह व्यावसायिक शिक्षा के कारण देश का तेजी के साथ आर्थिक विकास होगा। व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके लिए इन पाठ्यक्रमों एवं उद्योग धन्धों के बीच ताल-मेल स्थापित किया जाना चाहिए। ग्रामीण लड़कियाँ जो बहुत कम आयु में स्कूल छोड़ने को विवश होती हैं, उनके लिए गृह विज्ञान या सिलाई और शिल्प इत्यादि जैसे घरेलू उद्योगों से संबंधित पूर्णकालिक या अंशकालिक पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए। गाँवों में फलों की खेती, फूलों की खेती, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन जैसी कृषि संबंधी पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए। स्वास्थ्य, वाणिज्य, प्रशासन, छोटे पैमाने के उद्योगों और सभी सेवाओं में तरह-तरह के दूसरे पाठ्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए, जो छः महीने से लेकर तीन वर्ष तक के हो सकते हैं।

1) शिक्षा द्वारा संभव है-

क) सामाजिक विकास

ख) राष्ट्रीय विकास

ग) संस्कृति का संरक्षण

घ) ये सभी

2. व्यावसायिक शिक्षा से किसका समाधान संभव है?

क) राजनीतिक समस्या

ख) वैज्ञानिक समस्या

ग) आर्थिक समस्या

घ) ये सभी

3. किसके बिना आर्थिक सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती?

क) पुस्तक

ख) दूरदर्शन

ग) संचार साधन

घ) शिक्षा

4. व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए क्या किया जाना चाहिए:

क) शिक्षा को व्यावसायिक पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाए

ख) शिक्षकों को व्यावसायिक पाठ्यक्रम के बारे में जानकारी दी जाए

ग) पारंपरिक शिक्षा की अवहेलना की जाए।

घ) पाठ्यक्रमों एवं उद्योग धन्धों के बीच तालमेल बैठाया जाए

5. प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक निम्नलिखित में से क्या होगा?

क) कम्प्यूटर शिक्षा

ख) व्यावसायिक शिक्षा

ग) विज्ञान की शिक्षा

घ) शिक्षा का महत्व

अपठित गद्यांश - 2

गाँधी जी मानते थे कि सामाजिक या सामूहिक जीवन की ओर बढ़ने से पहले कौटुम्बिक जीवन का अनुभव प्राप्त करना आवश्यक है। इसलिए वे आश्रम जीवन बिताते थे। वहाँ सभी एक भोजनालय में भोजन करते थे। इससे समय और धन तो बचता ही था। सामूहिक जीवन का अभ्यास भी होता था, लेकिन यह सब होना चाहिए। समय पालन, सुव्यवस्था और शुचिता के साथ इस ओर लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए गाँधी जी स्वयं भी सामूहिक रसोईघर में भोजन करते थे। भोजन के समय दो बार घण्टी बजती थी। जो दूसरी घण्टी बजने तक भोजनालय में नहीं पहुँच पाता था। उसे दूसरी पंक्ति के लिए बरामदे में इन्तजार करना पड़ता था दूसरी घण्टी बजते ही रसोईघर का द्वार बन्द कर दिया जाता था, जिससे बाद में आने वाले व्यक्ति अन्दर न घुसने पाए। एक दिन गाँधी जी पिछड़ गए। संयोग से उस दिन आश्रमवासी श्री हरिभाऊ उपाध्याय भी पिछड़ गए। जब वे पहुँचे तो देखा कि बापू बरामदे में खड़े हैं। बैठने के लिए न बेंच है, न कुर्सी हरिभाऊ ने विनोद करते हुए कहा, "बापूजी आज तो आप भी गुनाहगारों के कठघरे में आ गए हैं।"

गाँधी जी खिलखिलाकर हँस पड़े। बोले. "कानून के सामने तो सब बराबर होते हैं न?"

हरिभाऊ जी ने कहा, “बैठने के लिए कुर्सी लाऊँ, बापू"

गाँधी जी बोले, "नहीं, उसकी जरूरत नहीं है। सजा पूरी भुगतनी चाहिए। उसी में सच्चा आन्नद है।"

1. गाँधी जी ने किस बात की पूरी सजा भुगतने की बात की?

क) देर से रसोईघर में पहुँचने की

ख) सामूहिक जीवन की

ग) आश्रम जीवन बिताने की

घ) गलत नियम बनाने की

2. सामूहिक जीवन बिताने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है-

क) समूह के लिए बनाए गए नियमों का पालन

ख) सब समान स्तर के हो

ग) समान विचारधारा होना

घ) समूह के सदस्यों की आपसी प्रतिस्पर्द्धा

3. “कानून के सामने तो सब बराबर होते हैं न?" गाँधी जी का यह कथन इस ओर संकेत करता है कि

क) गाँधी जी झेंप गए थे

ख) कानून किसी तरह का भेदभाव नहीं करता

ग) गाँधी जी पूरी ईमानदारी से नियमों का पालन करने में विश्वास रखते थे

घ) कानून के हाथ लम्बे होते हैं

4. दूसरी घण्टी के बाद रसोईघर का दरवाजा क्यों बन्द कर दिया जाता होगा:

क) लोग समय से भोजन करें और नियम का पालन भी

ख) ताकि लोग अन्दर ना आ सकें।

ग) लोग एकाध दिन उपवास कर सकें

घ) ऐसा गाँधी जी का निर्देश था

5. सभी भोजनालय में एक साथ भोजन करते थे। इससे-

क) सुव्यवस्था रहती थी

ख) गाँधी जी और हरिभाऊ जी को बहुत असुविधा हुई

ग) सामूहिक जीवन के महत्त्व का पता चलता था

घ) केवल धन की बचत होती थी

अपठित गद्यांश - 3

किसी भी देश की जनसंख्या उसके लिए संसाधन भी होती है और दायित्व भी। वस्तुतः कोई भी समाज मूलतः अपने सदस्यों से बनता है और वे सदस्य ही सामाजिक व्यवस्था के लक्ष्य के रूप में रहते हैं। उनकी जिनकी गुणवत्ता को सुरक्षित रखना और उसमें वृद्धि ही एक कल्याणकारी राज्य की प्रमुख प्रतिबद्धता होती है। जब जनसंख्या देश के संसाधनों की तुलना में अधिक हो जाती है, तब अनेक कठिनाइयाँ खड़ी होने लगती हैं। समाज के लिए भोजन, आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा की मूलभूत जरूरतों की अनदेखी कर कोई शासन सत्ता में नहीं रह सकता इतिहास और आज विश्व में तमाम क्षेत्रों में हो रही घटनाएँ इस बात की गवाह हैं कि समाज की जरूरतों के पूरा न होने पर जब क्षोभ, कुण्ठा और असन्तोष बढ़ता है, तो जनाक्रोश तख्ता पलट देता है, युद्ध होते हैं. क्रान्ति का बिगुल बज उठता है। दूसरी ओर जब समाज की आशा आकांक्षा पूरी होती है, तो उद्योग धन्धे, शिक्षा और स्वास्थ्य की दृष्टि से समृद्धि आती है अर्थात् जनसंख्या के दो पहलू हैं और वह एक साथ संसाधन भी है और उस संसाधन के उपभोक्ता भी हैं। इनके बीच सन्तुलन आवश्यक है।

भारत आज जनसंख्या की दृष्टि से केवल चीन से पीछे है और उसकी जन्म दर में पहली बार मात्र हल्की उल्लेखनीय गिरावट आई है। व्यापक स्तर पर देखें तो हम जनसंख्या विस्फोट की स्थिति में आ रहे हैं, जहाँ सभी संसाधनों पर भारी दबाव निरन्तर बढ़ता जा रहा है। चाहे पेय जल का प्रश्न हो या यातायात व्यवस्था हो, विद्यालय हो, नौकरी हो, स्वास्थ्य की सुविधा हो, सबकी जरूरतें बढ़ती जा रही हैं। शहरों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है। प्रदूषण की बढ़ती मात्रा इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

आज हर छोटे-बड़े शहर और महानगर के सामने अपने नागरिकों के लिए मूल सुविधाएँ जुटाना कठिन हो रहा है। बढ़ती जनसंख्या के कारण शुद्ध हवा और पानी मिलना भी दूर हो रहा है। माँग और पूर्ति का नियम काम करता है जैसा कि हम सब देख रहे हैं, प्रतिस्पर्द्धा बढ़ रही है और संसाधनों पर अधिकार जमाने के लिए जायज नाजायज हर तरह के हथकण्डे लोग अपनाने से बाज नहीं आ रहे हैं। अपराध की दर बढ़

रही है, महँगाई बढ़ रही है। इन सबका जनसंख्या वृद्धि के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह का सम्बन्ध है।

भारत में जनसंख्या का वितरण विभिन्न क्षेत्रों में एक सा नहीं है। मैदानी क्षेत्रों में, नगरों और महानगरों में जनसंख्या का घनत्व गाँव, पहाड़ और पठार की तुलना में बहुत ज्यादा है। ऐसा होना स्वाभाविक भी है जहाँ जीवन चलाने के अवसर अधिक उपलब्ध होते हैं वहाँ जनसंख्या करोड़ पार कर रही है और जो कभी एक नगर था उसे पूरे राज्य का दर्जा दिया जा रहा है। दिल्ली का विस्तार जितना हुआ हैं और जनसंख्या का दबाव जिस तरह बढ़ा है वह विलक्षण है। परिणाम हमारे सामने हैं यमुना का जल कचरा हो गया है और वायु प्रदूषण स्वीकृत सीमाओं के पार जा रहा है। वस्तुतः दिल्ली की नागरिक समस्याएँ जनसंख्या वृद्धि के परिणामों को समझने में और सामने रखने में उन्हें बखूबी उद्घाटित करने में सक्षम हैं।

1. हर प्रकार की जरूरतें क्यों बढ़ रही हैं?

क) जनसंख्या में वृद्धि के कारण
ख) आर्थिक प्रगति के कारण
ग) विज्ञान की प्रगति के कारण
घ) शैक्षिक प्रगति के कारण

2. प्रदूषण की बढ़ती मात्रा किसका उदाहरण है?

क) शहरों पर बढ़ता आक्रोश
ख) शहरों पर बढ़ता जनसंख्या दबाव
ग) लोगों की अशिक्षा
घ) जनसंख्या वृद्धि

3. क्रान्ति का कारण क्या होता है?

क) जनसंख्या वृद्धि
ख) समाज की जरूरतें पूरी न होना
ग) जीवन-स्तर में वृद्धि
घ) बढ़ता प्रदूषण

4. क्या विलक्षण है?

क) दिल्ली
ख) दिल्ली का विस्तार
ग) दिल्ली का प्रदूषण
घ) दिल्ली का विस्तार और बढ़ता जनसंख्या दबाव

5. 'जनसंख्या वृद्धि' से निम्नलिखित में से किसका सम्बन्ध नहीं है?

क) अपराध में वृद्धि
ख) महँगाई में वृद्धि
ग) प्रदूषण में वृद्धि
घ) जीवन स्तर में वृद्धि

अपठित गद्यांश -1 उत्तर

(घ) ये सभी
(ग) आर्थिक समस्या
(घ) शिक्षा
(घ) पाठ्यक्रमों एवं उद्योग धन्धों के बीच तालमेल बैठाया जाए
(ख) व्यावसायिक शिक्षा

अपठित गद्यांश - 2 उत्तर

(क) देर से रसोईघर में पहुँचने की
(क) समूह के लिए बनाए गए नियमों का पालन
(ग) गाँधी जी पूरी ईमानदारी से नियमों का पालन करने में विश्वास रखते थे
(ग) ताकि लोग एकाध दिन उपवास कर सकें
(ग) सामूहिक जीवन के महत्त्व का पता चलता था

अपठित गद्यांश - 3 उत्तर

(क) जनसंख्या में वृद्धि के कारण
(ख) शहरों पर बढ़ता जनसंख्या दबाव
(ख) समाज की जरूरतें पूरी न होना
(घ) दिल्ली का विस्तार और बढ़ता जनसंख्या दबाव
(घ) जीवन स्तर में वृद्धि

अपठित पद्यांश - 1

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत घन के नर्तन,
मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन ।
मैं अविराम पथिक अलबेला, रुके न मेरे कभी चरण,
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन ।
मैं विपदाओं में मुसकाता, नव आशा के दीप लिए
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे, जीवन के उत्थान-पतन,
मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल
रोक सकी पगले कब मुझको, यह युग की प्राचीर निबल
आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये जग के खंडन-मंडन ।
मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,
मुझे पथिक कब रोक सके हैं, अग्नि शिखाओं के नर्तन |
मैं बढ़ता अविराम निरंतर, तन-मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

(1) उपर्युक्त काव्यांश में कवि के स्वभाव की किन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

क) गतिशीलता, साहस व संघर्षशीलता

ख) सुंदरता का

ग) मुस्कुराहट की शक्ति का

घ) उन्माद का

(II) कविता में आए मेघ, विद्युत और ज्वालामुखी किनके प्रतीक हैं?

क) गतिशीलता, साहस व संघर्षशीलता

ख) जीवनपथ में आई बाधाओं के

ग) जीवन के उत्थान-पतन के

घ) बादल-विद्युत नर्तन के

(III) कवि की राह में कौन बाधक नहीं है ?

क) प्रलय मेघ विद्युत घन के नर्तन

ख) विद्युत घन के तर्जन

ग) सागर के गर्जन-तर्जन

घ) उन्माद

(iv) निर्देश नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथनों को अभिकथन (अ) और कारण (ब) के किया गया है। अपने उत्तर को नीचे दिए गए कोड के अनुसार चिन्हित कीजिए-

अभिकथन - (अ) पथिक को युग की बाधाएँ नहीं रोक सकती।

कारण - (ब) कवि अविराम निरंतर बढ़ता जाता है

क) ब सत्य है लेकिन अ असत्य

ख) अ सत्य है लेकिन व असत्य

ग) अ और ब दोनों सत्य हैं लेकिन ब अ की सही व्याख्या नहीं है

घ) अ और व दोनों सत्य हैं और ब अ की सही व्याख्या है।

(v) 'युग की प्राचीर' से क्या तात्पर्य है?

क) जीवन- पथ में आई बाधाएँ

ख) आँधी, ओले वर्षा

ग) समय की बाधाएँ

घ) जीवन मार्ग की सुविधाएँ

अपठित पद्यांश - 2

जो साथ फूलों के चले
जो ढाल पाते ही ढले
वह जिंदगी क्या जिंदगी
जो सिर्फ पानी-सी बही
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए ।
हम या कि तुम
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों कृत से झरकर कुसुम
जो भी परिस्थितियां मिलें
काँटे चुभे कलियाँ खिलें
हारे नहीं इंसान है, संदेश जीवन का यही
सच तुम नहीं सच हम नहीं सच है महज संघर्ष ही
जब तक बँधी है चेतना
जब तक हृदय दुख से घना को ही मैं सही।
तब तक न मानूंगा कभी इस राह
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
सच है महज संघर्ष ही

(i) फूलों के साथ चलने से क्या तात्पर्य है?

क) फूलों-सा संक्षिप्त जीवन

ख) सुविधाओं को ही ध्येय मानना

ग) बाग में चलना

घ) कांटो से डरना

(II) कवि नत को मृत क्यों मानता है?

क) अपनी हार स्वीकार करना

ख) कायरता मृत्यु के समान है

ग) पराजय कमजोर बनाती हैं

घ) विनम्रता गुण है मृत्यु नहीं

(III) दुनिया का सबसे बड़ा सत्य क्या है?

क) साहस

ख) स्वार्थ

ग) संघर्ष

घ) समर्पण

(iv) बंधी हुई चेतना को कवि सही क्यों नहीं मानता?

क) बंधन में सही निर्णय नहीं होता

ख) बंधन डराता है

ग) बंधन स्वतंत्र नहीं रहने देता

घ) बंधन मन को भी बांध देता है

(v) कांटे किसके प्रतीक है?

क) चुभन के

ख) कष्टों के

ग) नुकीली चीजों के

घ) तराजू के

अपठित पद्यांश - 3

एक दिन भी जी मगर तू ताज बन कर जी
अटल विश्वास बनकर जी
अमर युग-गान बनकर जी!
आज तक तू समय के पद चिन्ह सा खुद को मिटाकर कर
रहा निर्माण जग-हित एक सुखमय स्वर्ग सुंदर
स्वार्थी दुनिया मगर बदला तुझे यह दे रही है-
भूलता युग-गीत तुझको ही सदा तुझसे निकलकर
'कल' न बन तू जिंदगी का 'आज' बनकर जी
जगत सरताज बनकर जी!
जन्म से उड़ रहा निस्सीम इस नीले गगन पर,
किन्तु फिर भी छांह मंजिल की पड़ती नहीं नयन पर,
और जीवन लक्ष्य पर पहुँचे बिना जो मिट गया तू-
जग हँसेगा खूब तेरे इस करुण असफल मरण पर,
ओ मनुजा मत विहंग बन आकाश बनकर जी,
अटल विश्वास बनकर जी !

(i) कवि ने मनुष्य को एक ही दिन जीने की प्रेरणा क्यों दी है?

क) सम्मानित एक दिन अपमानित दस दिनों से अच्छा होता है
ख) अच्छी परंतु छोटी जिंदगी स्वीकार्य नहीं है।
ग) स्वार्थी परंतु लंबी जिंदगी अच्छी होती है
घ) एक दिन के लिए ही सही ताज की तरह सुंदर बनकर जीना अच्छा

(II) दुनिया को स्वार्थी क्यों कहा गया है?

क) वह केवल अपने लिए जीती है
ख) वह मनुष्य के कल्याण मार्ग से केवल अपना स्वार्थ साधती है
ग) वह दूसरों के बारे में भी सोचती है।
घ) वह दूसरों का बुरा सोचती है

(iii) 'कल' और 'आज' शब्द किसके प्रतीक हैं?

क्) 'कल' आने वाला कल और 'आज' वर्तमान का
ख) 'कल' मशीन का और 'आज' वर्तमान के
ग) 'कल' अतीत का और 'आज' सबको याद आने वाला सुख का
घ) 'कल' भुला देने वाला और 'आज' सबको याद आने वाला

(iv) 'विहंग' शब्द का तात्पर्य है -

क) धरती

ख) गगन

ग) पंछी

घ) आकाश

ङ)

(v) इस काव्यांश का शीर्षक है-

क) राजा का ताज बनकर जी

ख) तू ताज बनकर जी

ग) स्वार्थी बनकर जी

घ) निःस्वार्थी बनकर जी

अपठित पद्यांश-1 उत्तर

1. क) गतिशीलता, साहस व संघर्षशीलता
2. ख) जीवन-पथ में आई बाधाओं के
3. घ) उन्माद
4. घ) अ और व दोनों सत्य हैं और ब अ की सही व्याख्या है।
5. ग) समय की बाधाएँ

अपठित पद्यांश -2 उत्तर

1. ख) सुविधाओं को ही ध्येय मानना
2. ख) कायरता मृत्यु के समान है
3. ग) संघर्ष
4. ख) बंधन डराता है
5. ख) कष्टों के

अपठित पद्यांश -3 उत्तर

1. घ) एक दिन के लिए ही सही ताज की तरह सुंदर बनकर जीना अच्छा
2. ख) वह मनुष्य के कल्याण मार्ग से केवल अपना स्वार्थ साधती है
3. घ) 'कल' भुला देने वाला और 'आज' सबको याद आने वाला
4. ग) पंछी
5. ख) तू ताज बनकर जी

पठित गद्यांश- 1

हालदर साहब को आदत पड़ गई, हर बार कस्बे से गुजरते समय चौराहे पर रुकना, पान खाना और मूर्ति को ध्यान से देखना। एक बार जब कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा तो पानवाले से ही पूछ लिया, "क्यों भाई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है ?" पानवाले की खुद के मुँह में पान ठूंसा हुआ था । वह एक काला , मोटा और खुशमिजाज आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों ही आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी । पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका और अपनी लाल- काली बत्तीसी दिखाकर बोला, "कैप्टन चश्मेवाला करता है।"

क्या करता है ? हालदार साहब कुछ समझ नहीं पाए । चश्मा चेंज कर देता है । पानवाले ने समझाया । क्या मतलब क्या चेंज कर देता है ? हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए । कोई गिराक आ गया समझो । उसके चौड़े चौखर चाहिए कैप्टन किदर से लाएगा ? तो उसको मूर्ति वाला दे दिया । उदर दूसरा बिठा दिया ।

(क) कैप्टन चश्मे वाला मूर्ति का चश्मा बार-बार क्यों बदल देता था?

i) ग्राहक को मूर्ति पर लगा चश्मा पसंद आने पर चश्मे वाला उसे ग्राहक को देकर वहाँ दूसरा चश्मा लगा देता था
ii) उसे मूर्ति पर चश्मा बदलना अच्छा लगता था
iii) मूर्ति पर चश्मा गंदा होने पर वह उसे दूसरा चश्मा पहना देता था
iv) मूर्ति से बच्चे चश्मा उतार लेते थे

(ख) हालदार साहब के सवाल पर पानवाला क्यों हँसा?

i) उसका पहनावा देखकर
ii) इसका उद्देश्य कैप्टन चश्मे वाले का मजाक उड़ाना था
iii) हालदार साहब का प्रश्न सुनकर
iv) मूर्ति की दशा को देखकर

(ग) पान वाला देखने में कैसा था?

i) हँसमुख, मोटा व काले रंग का
ii) चिड़चिड़ा व क्रोधी स्वभाव का
iii) हँसमुख, पतला व गोरे रंग का
iv) भावुक व सॉवले रंग का

(घ) प्रस्तुत गद्यांश में 'कैप्टन' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

i) पानवाले के लिए
ii) चश्मे वाले के लिए
iii) हालदार साहब के लिए
iv) नेताजी के लिए

(ड.) कैप्टन चश्मे वाला नेताजी की मूर्ति पर चश्मा क्यों लगाता था?

i) केवल अपने चश्मे बचने के लिए
ii) अपने मनोरंजन के लिए
iii) चश्मा लगाने पर नेताजी की मूर्ति वास्तविक रूप में सुंदर लगती थी
iv) मूर्तिकारों को चश्मा न बनाने का एहसास कराने के लिए

पठित गद्यांश- 2

आषाढ़ की रिमझिम है । समूचा गाँव खेतों में उत्तर पड़ा है । कहीं हल चल रहे हैं , कहीं रोपनी हो रही है । धान के पानी- भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं । औरतें कलेवा लेकर मेंड़ पर बैठी हैं ।आसमान बादल से घिरा धूप का नाम नहीं है।ठंडी पुरवाई चल रही है । ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर तरंग झंकार सी उठी । यह क्या है? यह कौन है ? यह पूछना ना पड़ेगा । बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़ा, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं । उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधें को पंक्तिबद्ध खेत में बिठा रही है । उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर। बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं, मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं, वे गुनगुनाने लगती हैं , हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं, रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती है। बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जादू।

(क) गद्यांश के आधार पर बताइए कि भगत के संगीत के जादू का प्रभाव किस पर और क्या पड़ता है?

i) हलवाहों के पैर उनके संगीत की लय पर उठने लगते हैं
ii) बच्चे खेलते हुए झूमने लगते हैं
iii) मेंड पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं
iv) ये सभी

(ख) गद्यांश के अनुसार बालगोबिन भगत इस समय क्या कार्य कर रहे हैं?

i) मेंड पर बैठकर गीत गा रहे है
ii) अपने खेत में धान की रोपनी कर रहे हैं
iii) अपने खेत में पानी दे रहे हैं
iv) अपने खेत में हल चल रहे हैं

(ग) बालगोबिन भगत के संगीत की क्या विशेषता है?

i) उनका संगीत लय-तालबध्द नहीं है
ii) उनका संगीत सामान्यजन को प्रभावित नहीं कर पाता
iii) उनका संगीत प्रत्येक व्यक्ति को रोमांचित वह मुक्त कर देता है
iv) उनके संगीत में मन को हरने की शक्ति नहीं है

(घ) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है? इसके लेखक का नाम बताइए।

i) नेताजी का चश्मा (स्वयं प्रकाश)
ii) बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)
iii) लखनवी अंदाज (यशपाल)
iv) एक कहानी यह भी (मन्नू भंडारी)

(ड.) भगत अपने संगीत का प्रभाव बढ़ाने के लिए क्या करते थे?

i) स्वर को ऊंचा करते थे
ii) स्वर को नीचा करते थे
iii) स्वर को ऊंचा-नीचा करते थे
iv) इनमें से कोई नहीं

पठित गद्यांश- 3

खेती बारी करते , परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे -साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते । कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते । किसी से भी दो टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते । किसी की चीज नहीं छूते न बिना पूछे व्यवहार में लाते। इस नियम को कभी-कभी इतनी बारीकी तक ले जाते कि लोगों को कुतूहल होता । कभी वह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते । वह गृहस्थ थे लेकिन उनकी सब चीज साहब की थी । जो कुछ खेत में पैदा होता सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते जो उनके घर से चार कोस दूरी पर था -एक कबीरपंथी मठ से मतलब ! वह दरबार में भेंट रूप रख लिया जाता 'प्रसाद' रूप में जो उन्हें मिलता , उसे घर लाते और उसी से गुजर चलाते ।

(क) लेखक के अनुसार बालगोबिन भगत साधु क्यों थे ?

i) क्योंकि वे साधु की तरह दिखते थे
ii) क्योंकि वह मोह- माया से दूर थे
iii) क्योंकि वे सच्चे साधुओं की तरह आचार विचार रखते थे
iv) क्योंकि वह किसी से लड़ते नहीं थे

(ख) बालगोबिन भगत का कौन सा कार्य व्यवहार लोगों के आश्चर्य का विषय था ?

i) जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का गहराई से अपने आचरण में पालन करना
ii) गीत गाते रहना
iii) किसी से झगड़ा ना करना
iv)अपना काम स्वयं करना

(ग) बालगोबिन भगत कबीर के ही आदर्शों पर चलते थे ,क्योंकि

i) कबीर भगवान का रूप थे
ii) वह कबीर की विचारधारा से प्रभावित थे
iii) कबीर उनके गांव के मुखिया थे
iv) कबीर उनके मित्र थे

(घ) बालगोबिन भगत के खेत में जो कुछ पैदा होता उसे वे सर्वप्रथम किसे भेंट कर देते?

i) गरीबों में
ii) घर में
iii) मंदिर में
iv) कबीरपंथी मठ में

(ड.) 'वह गृहस्थ थे, लेकिन उनकी सब चीज 'साहब' की थी । यहाँ 'साहब' से क्या आशय है ?

i) गुरु
ii) मुखिया
iii) कबीर

iv) भगवान

उत्तर तालिका

1- क) (i) ग्राहक को मूर्ति पर लगा चश्मा पसंद आने पर चश्मे वाला उसे ग्राहक को देकर वहाँ दूसरा चश्मा लगा देता था

ख) (ii) इसका उद्देश्य कैप्टन चश्मे वाले का मजाक उड़ाना था

ग) (i) हँसमुख , मोटा व काले रंग का

घ) (ii) चश्मे वाले के लिए

ड.) (iii) चश्मा लगाने पर नेताजी की मूर्ति वास्तविक रूप में सुंदर लगती थी

2- क) (iv) ये सभी

ख) (ii) अपने खेत में धान की रोपनी कर रहे हैं

ग) (iii) उनका संगीत प्रत्येक व्यक्ति को रोमांचित वह मुक्त कर देता है

घ) (ii) बालगोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)

ड.) (iii) स्वर को ऊँचा-नीचा करते थे

3- क) (iii) क्योंकि वे सच्चे साधुओं की तरह आचार विचार रखते थे

ख) (i) जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का गहराई से अपने आचरण में पालन करना

ग) (ii) वह कबीर की विचारधारा से प्रभावित थे

घ) (iv) कबीरपंथी मठ में

ड.) (iii) कबीर

पठित पद्यांश – 1

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा ।।
आयेसु काह कहिअ किन मोही । सुनी रिसाइ बोले मुनि कोही ।।
सेवकु सो जो करै सेवाकाई । अरिकरनी करी करिअ लराई ।।
सुनहु राम जेही सिवधुन तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा ।।
सुनि मुनीबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुही तोरी लरिकाईं । कबहुं न असि रिस कीन्हि गोसाईं ।।
येही धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतु ।।

1. परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम ने उनसे क्या कहा?

क) धनुष तोड़ने वाला कोई राजकुमार है
ख) धनुष तोड़ने वाला आपका कोई सेवक होगा
ग) धनुष तोड़ने वाला आपका कोई मित्र होगा
घ) यह धनुष अपने आप टूट गया

2. स्वयंवर में जो धनुष टूट गया था, वह किसका था?

क) राजा जनक का
ख) राम जी का
ग) जी का
घ) परशुराम जी के आराध्य शिवजी का

3. शिव धनुष टूटने पर परशुराम क्रोधित क्यों हुए?

क) परशुराम शिव-भक्त थे और उन्हें शिव-धनुष प्रिय था
ख) उन्हें सीता- स्वयंवर में आमंत्रित नहीं किया गया था
ग) वे क्षत्रिय कुल के विद्रोही थे
घ) परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे

4. 'सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू' इस पंक्ति में 'भृगुकुलकेतू' शब्द किसके लिए प्रयोग किया गया है?

क) लक्ष्मण के लिए
ख) राजा जनक के लिए
ग) परशुराम के लिए
घ) विश्वामित्र के लिए

5. शिव- धनुष तोड़ने वाले की तुलना परशुराम ने किससे की है?

क) अपने शत्रु कर्ण से
ख) अपने शत्रु सहस्त्रबाहु से
ग) अपने शत्रु वशिष्ठ मुनि से

घ) अपने शत्रु राजा जनक से

पठित पद्यांश – 2

हमारैं हरि हारिल की लकरी ।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

1. "हमारैं हरि हारिल की लकरी" पंक्ति में हारिल की लकरी किसे कहा गया है ?

क) गोपियों को
ख) श्रीकृष्ण को
ग) उद्धव को
घ) इनमें से कोई नहीं ।

2. "तिनहिं लैं सौंपो" पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है ?

क) जिनका मन चकरी के समान चंचल है ।
ख) मन स्थिर है ।
ग) जो योग का संदेश देते हैं।
घ) इनमें से कोई नहीं ।

3. गोपियाँ योग की शिक्षा क्यों नहीं लेना चाहती थीं ?

क) क्योंकि उनके पास पहले से ही योग की शिक्षा थी ।
ख) क्योंकि वे अपने-अपने कार्य में बहुत व्यस्त थी ।
ग) क्योंकि वे योग की शिक्षा श्री कृष्ण से लेना चाहती थी ।
घ) क्योंकि उनके हृदय में श्री कृष्ण बसे हुए थे ।

4. योग का नाम सुनते ही गोपियों को कैसा लगता है ?

क) जैसे श्री कृष्ण उनके पास गए हों ।
ख) जैसे पैरों में काँटा चुभ गया हो ।
ग) जैसे उनके मुँह में कडवी ककड़ी चली गई है ।
घ) जैसे कानों में मधुर रस घुल गया हो ।

5. 'देखी सुनी न करी' पंक्ति में गोपियाँ क्या कहना चाहती हैं ?

क) गोपियों ने उद्धव के बारे में न तो कभी सुना है और न ही उसे देखा है
ख) गोपियों ने योग के बारे में न तो कभी सुना है और न ही किया है
ग) गोपियाँ श्रीकृष्ण के पास जाना चाहती थी

घ) गोपियों को उद्धव से योग की शिक्षा लेनी है

पठित पद्यांश – 3

बादल, गरजो! -
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो -
बादल, गरजो!
विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा , जल से फिर
शीतल कर दो -
बादल, गरजो!

1. कवि बादलों को संबोधित करते हुए क्या कह रहा है ?

क) लोगों के मन को सुख से भरने के लिए ।
ख) आकाश को साफ करने के लिए ।
ग) सम्पूर्ण आकाश को घेर-घेर कर बरसने के ।
घ) बिजली चमकाने के लिए

2. कवि ने बादलों की व्याख्या किस प्रकार की है ?

क) हृदय की बिजली के समान नव जीवन प्रदान करने वाला ।
ख) सम्पूर्ण आकाश को ढकने वाला,गरजकरशोर मचाने वाला
ग) काले केश वाला , संसार में जोश भरने वाला
घ) कल्पना के समान , बिजली गिराने वाला

3. निराला बादलों के माध्यम से कवि को क्या संदेश दे रहे हैं ?

क) हृदय में बिजली की चमक पैदा करने के लिए
ख) अपनी इच्छा पूर्ति करने के लिए
ग) नवीन सृष्टि का निर्माण और संसार में जोश भरने के लिए
घ) पीड़ितजन की प्यास बुझाने के लिए

4. पद्यांश में बदल क्या संकेत कर रहे हैं ?

क) मनुष्य में उत्साह वृद्धि, संघर्ष के प्रति प्रेरित करने और जीवन में नवीनता व परिवर्तन लाने की ओर
ख) मनुष्य को लड़ने, संघर्ष से भागने और जीवन में नवीनता व परिवर्तन लाने की ओर
ग) मनुष्य को हतोत्साहित करने, संघर्ष के लिए उत्प्रेरित करने और जीवन में नवीनता लाने की ओर

घ) मनुष्य को उत्साहित, संघर्ष से पीछे हटने और जीवन में परिवर्तन लाने की ओर

5. कवि के अनुसार, नूतन कविता कैसी होनी चाहिए ?

क) संपूर्ण संसार में जोश भर देने वाली
ख) संपूर्ण संसार को नीरवता से भर देने वाली
ग) संपूर्ण संसार का अंत कर देने वाली
घ) संपूर्ण संसार में नवजीवन लाने वाली

उत्तर तालिका

1- 1. ख) धनुष तोड़ने वाला आपका कोई सेवक होगा
2. घ) परशुराम जी के आराध्य शिवजी का
3. क) परशुराम शिव-भक्त थे और उन्हें शिव-धनुष प्रिय था
4. ग) परशुराम के लिए
5. ख) अपने शत्रु सहस्त्रबाहु से

2- 1. ख) श्रीकृष्ण को
2. क) जिनका मन चकरी के समान चंचल है
3. घ) क्योंकि उनके हृदय में कृष्ण बसे हुए थे
4. ग) जैसे उनके मुँह में कड़वी ककड़ी चली गई हो
5. ख) गोपियों ने योग के बारे में न तो कभी सुना है और न ही किया है

3- 1. ख) सम्पूर्ण आकाश को घेर-घेर कर बरसने के ।
2. क) हृदय की बिजली के समान नव जीवन प्रदान करने वाला ।
3. ग) नवीन सृष्टि का निर्माण और संसार में जोश भरने के लिए
4. क) मनुष्य में उत्साह वृद्धि, संघर्ष के प्रति प्रेरित करने और जीवन में नवीनता व परिवर्तन लाने की ओर
5. क) संपूर्ण संसार में जोश भर देने वाली

वाक्य -विचार

वाक्य - शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जिसका कुछ अर्थ निकलता हो, उसे वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) मोहन पुस्तक पढ़ता है। (2) तुम अभी सो जाओ। (3) शिक्षक ने समझाया कि भाषा अर्जित संपत्ति है।

वाक्य के भेद - वाक्य भेद के दो आधार हैं **(1) अर्थ का आधार (2) रचना का आधार**

(1) अर्थ के आधार पर वाक्य के **आठ भेद** हैं। **इनके विषय में आप कक्षा नौवीं में पढ़ चुके हैं।**

(2) रचना के आधार पर वाक्य के **तीन भेद** हैं **-सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र या मिश्रित वाक्य ।**

वाक्य के अंग - 1 उद्देश्य 2 विधेय

1 उद्देश्य- वाक्य के कर्ता को एवं कर्ता से संबंधित अन्य पदों को उद्देश्य भाग में सम्मिलित किया जाता है।

उद्देश्य – कर्ता

उद्देश्य का विस्तार – कर्ता की विशेषता प्रकट करने वाले अन्य पद।

2 विधेय- वाक्य की क्रिया को एवं क्रिया से संबंधित अन्य पदों को विधेय भाग में शामिल किया जाता है।

विधेय- क्रिया

विधेय का विस्तार – क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाले अन्य पद ।

जैसे – मेरा भाई राम धार्मिक पुस्तकें अधिक पढ़ता है।

उद्देश्य – राम उद्देश्य का विस्तार – मेरा भाई

विधेय – पढ़ता है। विधेय का विस्तार – धार्मिक पुस्तकें अधिक

रचना के आधार पर वाक्य

1 सरल वाक्य- जिस वाक्य में कर्ता की एक ही मुख्य क्रिया होती है उसे सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) लोकेन्द्र चित्र **बनाता** है। (2) पुष्पा विद्यालय **जाएगी**। (3) हमने खेल **देखा** ।

- इन वाक्यों में एक ही मुख्य क्रिया बनाता, जाएगी, देखा का प्रयोग है।

2 संयुक्त वाक्य- जब दो या दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य किसी योजक (समुच्चयबोधक)पद से जुड़े

रहते हैं, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। उपवाक्यों में समाधिकारण का संबंध होता है । स्वतंत्र उपवाक्य भी पूर्ण अर्थ बोध कराने में समर्थ होते हैं।

- उपवाक्य आपस में योजक पद -***किन्तु ,लेकिन ,पर ,इसलिए ,या,अथवा,तथा,और*** आदि द्वारा जुड़े होते हैं ।

जैसे- (1)वे घर आ गए हैं ***लेकिन*** थोड़ी देर ही रुकेंगे ।

(2) बैठ जाओ **अथवा** चले जाओ।

(3) साईकिल खराब हो गई ***इसलिए*** उसे पैदल आना पड़ा ।

3 मिश्र या मिश्रित वाक्य- जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) शिक्षक ने बताया कि भारत एक कृषि प्रधान देश है।

प्रधान उपवाक्य शिक्षक ने बताया व आश्रित उपवाक्य भारत एक कृषि प्रधान देश है। **'कि'** योजक पद है।

(2) **वे** लोग यहीं रुकेंगे **जो** आज शाम को आएँगे।

प्रधान उपवाक्य लोग यहीं रुकेंगे व आश्रित उपवाक्य आज शाम को आएँगे। वे... जो योजक पद हैं।

(3) बच्चे **वहाँ** गए थे **जहाँ** ऊँचे मकान हैं।

प्रधान उपवाक्य बच्चे गए थे तथा आश्रित उपवाक्य ऊँचे मकान हैं । **वहाँ... जहाँ** योजक पद हैं।

उपवाक्य- वाक्य का वह भाग जिससे अधूरा अर्थ व्यक्त होता है तथा जिसमें उद्देश्य और विधेय भी होता है। उसे उपवाक्य कहते हैं।

जैसे- मैं उसे खूब पहचानता हूँ जो कल घर आया था।

इस उदाहरण में दो उपवाक्य हैं- एक- मैं उसे खूब पहचानता हूँ दूसरा- जो कल घर आया था।

उपवाक्य दो तरह के हैं- (1) प्रधान उपवाक्य (2) आश्रित उपवाक्य

प्रधान उपवाक्य- वाक्य का वह अंश जो स्वतंत्र होता है और जिसमें मुख्य क्रिया होती है, वह प्रधान उपवाक्य कहलाता है।

जैसे ऊपर के उदाहरण में, **मैं उसे खूब पहचानता हूँ - प्रधान उपवाक्य है।**

आश्रित उपवाक्य- वाक्य का वह अंश जो प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होता है और जिसमें क्रिया पूरक के रूप में होती है, वह आश्रित उपवाक्य कहलाता है।

जैसे ऊपर के उदाहरण में, **जो कल घर आया था। - आश्रित उपवाक्य है।**

आश्रित उपवाक्य के पहले **कि, क्योंकि, जब, जो, जिसे, जहाँ, जितना, जिसमें, जिसको** इत्यादि योजक शब्द जुड़े होते हैं।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद हैं- (1) संज्ञा आश्रित उपवाक्य (2) विशेषण आश्रित उपवाक्य (3) क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य ।

(1) संज्ञा आश्रित उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य संज्ञा की तरह व्यवहृत हों, उसे 'संज्ञा-उपवाक्य' कहते हैं।
दूसरे शब्दों में- जो गौण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य का उद्देश्य (कर्ता), कर्म या पूरक बनकर संज्ञा अथवा सर्वनाम के स्थान पर प्रयुक्त हो, वह संज्ञा उपवाक्य कहलाता है।
यह कर्म (सकर्मक क्रिया) या पूरक (अकर्मक क्रिया) का काम करता है, जैसा संज्ञा करती है। 'संज्ञा-उपवाक्य' की पहचान यह है कि इस उपवाक्य के पूर्व 'कि' होता है।
जैसे -
'राम ने कहा कि मैं पढ़ूँगा'
यहाँ 'मैं पढ़ूँगा' संज्ञा-उपवाक्य है।
'मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है'
इस वाक्य में 'वह कहाँ है' संज्ञा-उपवाक्य है।
"गाँधी जी ने कहा कि सदा सत्य बोलो।"
इस वाक्य में कि "सदा सत्य बोलो।" संज्ञा उपवाक्य है।

(2) विशेषण आश्रित उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य विशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे विशेषण-उपवाक्य कहते हैं।
दूसरे शब्दों में- जो गौण य़ा आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की संज्ञा, सर्वनाम या संज्ञा पदबंध की विशेषता बताए, वह विशेषण उपवाक्य कहलाता है।
इसमें 'जो', 'जैसा', 'जितना' इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता हैं।
जैसे -
वह आदमी, जो कल आया था, आज भी आया है।
यहाँ 'जो कल आया था' विशेषण-उपवाक्य है।
यह वही लड़का है जो कक्षा में प्रथम आया था।
इस वाक्य में "जो कक्षा में प्रथम आया था।" विशेषण-उपवाक्य है।

(3) क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य

जो आश्रित उपवाक्य क्रियाविशेषण की तरह व्यवहृत हो, उसे क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं।
दूसरे शब्दों में- जो गौण या आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की क्रिया की काल या स्थान आदि से सम्बद्ध विशेषता बताएँ, उन्हें क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं।
इसमें प्रायः जब, जहाँ, जिधर, ज्यों, यद्यपि इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता हैं। इसके द्वारा समय, स्थान, कारण, उद्देश्य, फल, अवस्था, समानता, मात्रा इत्यादि का बोध होता हैं।
जैसे-

जब पानी बरसता है, तब मेढक बोलते हैं।

यहाँ 'जब पानी बरसता है' क्रियाविशेषण-उपवाक्य हैं।

यदि मोहन मेहनत करता, तो अवश्य उत्तीर्ण होता।

इस वाक्य में 'तो अवश्य उत्तीर्ण होता' क्रियाविशेषण-उपवाक्य हैं।

अर्थ के आधार पर
रचना के आधार पर
विधानवाचक वाक्य
निषेधवाचक वाक्य
प्रश्नवाचक वाक्य
आज्ञावाचक वाक्य
इच्छावाचक वाक्य
संकेतवाचक वाक्य
संदेहवाचक वाक्य
विस्मयसूचक वाक्य
सरल वाक्य
संयुक्त वाक्य
मिश्र या मिश्रित वाक्य
प्रधान उपवाक्य
आश्रित उपवाक्य
संज्ञा आश्रित उपवाक्य
विशेषण आश्रित उपवाक्य
क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य

प्रश्न- अभ्यास

i. सोहन ने परिश्रम किया किन्तु सफल नहीं हो पाया। रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए -

(क) सरल वाक्य

(ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य

(घ) इनमें से कोई नहीं

ii. निम्नलिखित में से सरल वाक्य का उदाहरण है-

(क) किसान बीज बोते हैं और फसल उगाते हैं।

(ख) रमेश सड़क पर तेजी से दौड़ सकता है। (ग) रमेश जैसे ही बाजार पहुँचा वैसे ही बिजली चली गई।

(घ) क और ख दोनों

iii. जो व्यक्ति परिश्रम करता है वह सफल होता है। रचना के आधार पर वाक्य भेद है-

(क) मिश्र वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) सरल वाक्य

(घ) इनमें से कोई नहीं

iv. निम्नलिखित में से मिश्रित वाक्य है -

(क) आज श्यामा को पुरस्कार मिला था। (ख) श्यामा पुरस्कार पाने से खुश थी।

(ग) श्यामा को पुरस्कार मिला और वह बहुत खुश थी। (घ) श्यामा बहुत खुश थी क्योंकि उसे पुरस्कार मिला था ।

v. जो सदा सच बोलते हैं वे सज्जन होते हैं। - वाक्य का सरल वाक्य में रूपांतरण होगा-

(क) सच बोलने वाले और सज्जन व्यक्ति दोनों एक ही हैं।

(ख) सदा सच बोलने वाले सज्जन होते हैं।

(ग) सज्जन व्यक्ति अलग होते हैं और सच बोलने वाले अलग होते हैं।

(घ) जो सज्जन होगा वह सच बोलेगा।

उत्तर- i- (ग) संयुक्त वाक्य ii- (ख) रमेश सड़क पर तेजी से दौड़ सकता है। iii- (क) मिश्र वाक्य iv (घ) श्यामा बहुत खुश थी क्योंकि उसे पुरस्कार मिला था v- (ख) सदा सच बोलने वाले सज्जन होते हैं।]

वाच्य

परिभाषा- वाच्य क्रिया के उस परिवर्तन को कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का पता चलता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता (पहचान) है|

जैसे -
राधा पत्र लिखती है।
पत्र राधा द्वारा लिखा जाता है।
तुमसे लिखा नहीं जाता।

प्रथम वाक्य में लिखना क्रिया का संबंध कर्ता यानि राधा से है। दूसरे वाक्य में कर्म प्रधान है। जिसमें पत्र (कर्म) उद्देश्य के स्थान पर आया है और इसी की प्रधानता है। 'तुमसे लिखा नहीं जाता'वाक्य में क्रिया का संबंध न तो कर्ता से है और न ही कर्म से, इसका सम्बन्ध भाव से है।

वाच्य में तीन की प्रधानता होती है
1. कर्ता
2. कर्म
3. भाव

जैसे -
1. माधव क्रिकेट खेलता है।
(क्रिया कर्ता के अनुसार)
2. माधव द्वारा क्रिकेट खेला जाता है।
(क्रिया कर्म के अनुसार)
3. माधव से क्रिकेट खेला जाता है।
(क्रिया भाव के अनुसार)

वाच्य के भेद -

कर्तृवाच्य - जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हों, तो कर्तृवाच्य कहलाया जाता है।

सरल शब्दों में - क्रिया के जिस रूप में कर्ता प्रधान हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इसमें लिंग एवं वचन प्रायः कर्ता के अनुसार होते हैं।

उदाहरण -

रमेश केला खाता है।

दिनेश पुस्तक पढ़ता है।

इन दोनों वाक्यों में कर्ता प्रधान है तथा उसी के लिए 'खाता है' तथा 'पढ़ता है' क्रियाओं का प्रयोग हुआ है, इसलिए यहाँ कर्तृवाच्य है।

कर्मवाच्य

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हो, तो कर्मवाच्य कहलाता है अथवा क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते हैं जिससे यह ज्ञात हो कि वाक्य में कर्ता की प्रमुखता न होकर कर्म की प्रमुखता है।

सरल शब्दों में - क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं या जहाँ क्रिया का संबंध सीधा कर्म से हो तथा क्रिया का लिंग तथा वचन कर्म के अनुसार हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

उदाहरण

राम के द्वारा कार्य किया गया|

कवियों द्वारा कविताएँ लिखी गयी |

उपर्युक्त उदाहरणों में 'कर्म' प्रधान हैं तथा उन्हीं के लिए 'किया गया', 'लिखी गई', 'दी गई' क्रियाओं का विधान हुआ है। अतः यह कर्मवाच्य के उदाहरण है।

यहाँ क्रियाएँ कर्ता के अनुसार परिवर्तित न होकर कर्म के अनुसार परिवर्तित हुई है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अंग्रेजी की भांति हिन्दी में कर्ता के रहते हुए कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं किया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि यहाँ कर्मवाच्य है।

ध्यान रखने योग्य बात यह है कि कर्मवाच्य सदैव सकर्मक क्रिया का ही होता है।

भाववाच्य

जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर एकवचन, पुंलिंग तथा अन्य पुरुष हो, तो भाववाच्य कहलाता है।

दूसरे शब्दों में - क्रिया के जिस रूप में न तो कर्ता की प्रधानता हो, न कर्म की, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान हो, वहाँ भाववाच्य होता है। इसमें मुख्यतः अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है और साथ ही प्रायः निषेधार्थक वाक्य ही भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं। इसमें क्रिया सदैव पुल्लिंग, अन्य पुरुष के एक वचन की होती है।

उदाहरण -

मोहन से टहला भी नहीं जाता।

मुझसे उठा नहीं जाता।

धूप में चला नहीं जाता।

उक्त वाक्यों में कर्ता या कर्म प्रधान न होकर भाव मुख्य हैं, अतः इनकी क्रियाएँ भाववाच्य का उदाहरण हैं।

ध्यान रखने योग्य कुछ बातें हैं -

1. भाववाच्य का प्रयोग विवशता, असमर्थता व्यक्त करने के लिए होता है।

2. भाववाच्य में प्रायः अकर्मक क्रिया होता है।
3. भाववाच्य में क्रिया सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिंग और एकवचन में होती है।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित में से कर्ता वाच्य का पहचान कीजिए:

1. राम ने किताब पढ़ी।
2. किताब पढ़ी गई थी।

दिए गए वाक्य में से कर्म वाच्य को पहचानिए

1. गायक ने संगीत संध्या में गायन किया।
2. संगीत संध्या में गायन किया गया था।

निम्नलिखित में से भाव वाच्य की पहचान कीजिए:

1. उसने प्रेम से गीत गाया
2. गीत प्रेम से गाया गया था।

निम्नलिखित में से कर्म वाच्य को पहचानिए:

1. वह पत्र लिख रहा है|
2. पत्र लिखा जा रहा है|

निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य का नाम लिखिए

1. वह खाना खाकर चला गया।
2. मोहन से चला नहीं जाता।
3. आज निश्चित होकर सोया जाएगा।
4. ड्राईवर बस चलाता जा रहा था।
5. उससे पत्र नहीं पढ़ा जाता।
6. रुक्मिणी से यह सामान नहीं उठाया जाता।
7. छात्राएँ रात-रात भर पढ़ाई करती रही।
8. वह रामलीला देख रहा है।
9. तन्वी रात भर सो न सकी।
10. अक्षर से एक भी गेंद नहीं फेंकी गगई

उत्तरः

1. कर्तृवाच्य
2. भाववाच्य
3. भाववाच्य

4. कर्तृवाच्य
5. कर्मवाच्य
6. कर्मवाच्य
7. कर्तृवाच्य
8. कर्तृवाच्य
9. भाववाच्य
10. कर्मवाच्य

निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में बदलिए

1. दीप्ति द्वारा नहीं लिखा जाता।
2. शोभना से पढ़ा नहीं जाता।
3. श्रद्धालु काशीवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है।
4. झूठेसमर्थकों द्वारा पुष्प वर्षा की गई।
5. आपके द्वारा उनके विषय में क्या सोचा जाता है।

उत्तर

1. दीप्ति नहीं लिखती है।
2. शोभना नहीं पढ़ती है।
3. श्रद्धालु काशीवासी इस सभा का आयोजन करते हैं।
4. समर्थकों ने पुष्पवर्षा की।
5. आप उनके विषय में क्या सोचते हैं।

6. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए

1. उन्होंने दोनों भाइयों को पढ़ाया।
2. रामपाल ने बड़े दुखी मन से अपना अपराध स्वीकार किया।
3. उसने भगत को दुनियादारी से निवृत्त कर दिया।
4. आओ, कुछ बातें करें।
5. हमने उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया।

उत्तरः

1. उनके द्वारा दोनों भाईयों को पढ़ाया गया।
2. रामपाल द्वारा अत्यंत दुखी मन से अपना अपराध स्वीकार किया गया।
3. उसके द्वारा भगत को दुनियादारी से मुक्त कर दिया गया।
4. आइए, कुछ बातें की जाएँ।
5. हमारे द्वारा उसको अच्छे संस्कार देने का प्रयास किया गया।

निम्नलिखित वाक्यों को भाववच्य में बदलिए

1. घायल होने के कारण वह उड़ नहीं पाया।
2. मोहिनी क्षणभर के लिए भी शांत नहीं बैठती है।
3. चलो, अब चलते हैं।
4. माँ रो भी नहीं सकती।
5. हम इतनी गरमी में नहीं रह सकते।

6. उत्तरः

1. घायल होने के कारण उससे उड़ा नहीं गया।
2. मोहिनी से क्षण भर भी शांत नहीं बैठा जाता है।
3. चलिए अब चला जाए।
4. माँ से रोया भी नहीं जाता।
5. हमसे इतनी गरमी में भी नहीं रहा जाता।

- पद-परिचय -

पद- व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयोग किए गए शब्द को ही पद कहते हैं। जैसे- प्रमोद पत्र लिखेगा। इस वाक्य में प्रमोद, पत्र ,लिखेगा कुल तीन पद हैं। वाक्य से स्वतंत्र होने पर ये सभी शब्द कहलाएँगे।

शब्द व पद में अंतर

1. शब्द वर्णों की स्वतंत्र एवं सार्थक इकाई है।	1. पद वाक्य में प्रयुक्त शब्द है।
2. शब्द का मात्र अर्थ परिचय होता है।	2. पद का व्याकरणिक परिचय होता है।
3. शब्द सार्थक और निरर्थक दोनों होते हैं।	3. पद वाक्य में अर्थ का संकेत देता है।
4. शब्द का क्रिया, काल से कोई सम्बन्ध नहीं होता।	4.पद का लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया से सम्बन्ध होता है।

पद-परिचय से तात्पर्य है- 'पदों का विश्लेषण'। वाक्य में प्रयुक्त पदों का व्याकरणिक परिचय ही 'पद-परिचय' कहलाता है।

- **वाक्य में उस 'पद' की स्थिति बताना, उसका लिंग, वचन, कारक तथा अन्य पदों के साथ संबंध बताना।**
  जैसे - राजेश ने रमेश को पुस्तक दी।

राजेश = संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'ने' के साथ कर्ता कारक, द्विकर्मक क्रिया 'दी' के साथ।

रमेश = संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

पुस्तक = संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक।

- **पद पाँच प्रकार के होते हैं –**

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय।

इन सभी पदों का परिचय देते समय हमें निम्नलिखित बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए।

	पद	पद-परिचय
1	संज्ञा	संज्ञा के भेद (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक), लिंग, वचन, कारक, क्रिया का 'कर्ता'है? / क्रिया का 'कर्म' है?

2	सर्वनाम	सर्वनाम के भेद (पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक), लिंग, वचन, कारक, क्रिया का 'कर्ता/क्रिया का 'कर्म'।
3	विशेषण	विशेषण के भेद (गुणवाचक, संख्यावाचक, सार्वनामिक, परिमाणवाचक), अवस्था (मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था), लिंग, वचन, विशेष्य।
4	क्रिया	क्रिया के भेद, लिंग, वचन, पुरुष, धातु, काल, वाच्य, क्रिया का 'कर्ता' कौन है? क्रिया का 'कर्म' कौन है?
5	अव्यय	क्रिया विशेषण (स्थान वाचक, काल वाचक, रीतिवाचक, परिमाणवाचक), संबंधबोधक, समुच्चयबोधक (संयोजक एवं विभाजक), विस्मयादिबोधक, निपात ।

पद परिचय कैसे पहचानते है? -

सबसे पहले आपको संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, निपात, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक आदि के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

इसके बारे में संक्षिप्त जानकारी नीचे दी गई है-

1 - अगर शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पक्षी, भाव, जाति आदि के बारे में बताता है, तो वह शब्द संज्ञा है।

2 - अगर शब्द किसी संज्ञा के स्थान पर शब्द का प्रयोग जैसे मेरा, मै, तुम, आपका, उस, वह आदि शब्द है, तो वह शब्द सर्वनाम है।

3 - अगर शब्द किसी वस्तु, स्थान, पशु, पक्षी आदि की विशेषता बताता है, अर्थात वह कैसा है - लंबा है, सुंदर है, डरावना है आदि, तो वह शब्द विशेषण है।

4 - अगर शब्द वाक्य में जो क्रिया है उसकी विशेषता बताता है, तो वह क्रिया विशेषण है। जैसे कि - क्रिया कब हो रही है (कल, अभी, दिन भर), क्रिया कैसे हो रही है (चुपचाप, अवश्य, तेजी से), क्रिया कहाँ हो रही है (अंदर, ऊपर, आसपास), क्रिया कितनी मात्रा में हो रही है (कम, पर्याप्त, ज्यादा)

5 - अगर शब्द किसी दो या अधिक संज्ञा और सर्वनाम के बीच का संबंध दर्शाता है, तो वह संबंधबोधक अव्यय है।
जैसे - के पास, के ऊपर, से दूर, के कारण, के लिए, की ओर।

6 - अगर शब्द किसी दो वाक्यों के बीच का संबंध दर्शाता है, तो वह समुच्चयबोधक अव्यय है।
जैसे - और, अतएव, इसलिए, लेकिन।

7 - अगर शब्द किसी विस्मय, हर्ष, घृणा, दुःख, पीड़ा आदि भावों को प्रकट करते है, तो वह विस्मयादिबोधक अव्यय है।
जैसे - अरे!, वाह!, अच्छा! आदि।

8 - अगर शब्द किसी बात पर ज्यादा भार दर्शाता है, तो वह निपात है।
जैसे - भी, तो, तक, केवल, ही।

उदाहरण के लिए कुछ वाक्य निचे दिए जा रहे हैं, जिनमें कुछ पद रेखांकित किए गए हैं। आपको इन रेखांकित पदों का पद परिचय दिया गया है।

1) आज समाज में विभीषणों की कमी नहीं है।
विभीषणों (देशद्रोहियों) – संज्ञा (जातिवाचक), बहुवचन, पुल्लिंग, संबंध कारक (कारक 'की)
2) रात में देर तक बारिश होती रहीं।
देर तक - क्रिया-विशेषण (कालवाचक)
3) हर्षिता निबंध लिख रही है।
लिख रही है - क्रिया (संयुक्त), स्त्रीलिंग, एकवचन, धातु 'लिख', वर्तमान काल, क्रिया का कर्ता 'हर्षिता', क्रिया का कर्म 'निबंध'
4) इस पुस्तक में अनेक चित्र है ।
अनेक - विशेषण (अनिश्चित संख्यावाचक), बहुवचन, पुल्लिंग, विशेष्य 'चित्र '
5) गांधीजी आजीवन मानवता की सेवा करते रहे ।
आजीवन - क्रिया-विशेषण (कालवाचक)

➢ संज्ञा शब्द का पद परिचय

किसी भी संज्ञा पद के पद परिचय हेतु निम्न 5 बातें बतलानी होती है -
(1) संज्ञा का प्रकार
(2) उसका लिंग
(3) वचन
(4) कारक तथा
(5) उस शब्द का क्रिया के साथ सम्बन्ध

संज्ञा शब्द का क्रिया के साथ सम्बन्ध 'कारक'के अनुसार जाना जा सकता है।
राम पुस्तक पढ़ता है।
उक्त वाक्य में राम तथा 'पुस्तक' शब्द संज्ञाएँ हैं। यहाँ इनका पद परिचय उक्त पाँचों बातों के अनुसार निम्नानुसार होगा -

राम - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एक वचन, कर्ता कारक, 'पढ़ता है' क्रिया का कर्ता।
पुस्तक - जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक, 'पढ़ता है' क्रिया का कर्म।

➢ सर्वनाम शब्द का पद परिचय

किसी सर्वनाम के पद परिचय हेतु निम्नलिखित बातों का उल्लेख करना होता है -

(1) सर्वनाम का प्रकार पुरुष सहित

(2) लिंग

(3) वचन

(4) कारक

(5) क्रिया के साथ सम्बन्ध आदि।

यह उसकी वही कार है, जिसे कोई चुराकर ले गया था।

इस वाक्य में 'यह, 'उसकी, 'जिसे, तथा 'कोई'पद सर्वनाम है। इनका पद परिचय इस प्रकार होगा-

यह - निश्चयवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग, एक वचन, सम्बन्ध कारक, 'कार' संज्ञा शब्द से सम्बन्ध।

जिसे - सम्बन्धवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग, एकवचन कर्मकारक, 'चुराकर ले गया' क्रिया का कर्म।

कोई - अनिश्चयवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, पुल्लिंग एकवचन, कर्ता कारक, 'चुराकर ले गया' क्रिया का कर्ता।

➢ विशेषण शब्द का पद परिचय

किसी विशेषण शब्द के पद परिचय हेतु निम्न बातों का उल्लेख करना होता है-

(1) विशेषण का प्रकार

(2) अवस्था

(3) लिंग

(4) वचन

(5) विशेष्य व उसके साथ सम्बन्ध।

वीर राम ने सब राक्षसों का वध कर दिया।

उक्त वाक्य में 'वीर' तथा 'सब शब्द विशेषण हैं, इनका पद-परिचय निम्नानुसार होगा -

वीर - गुणवाचक विशेषण, मूलावस्था, पुल्लिंग, एकवचन, 'राम' विशेष्य के गुण का बोध कराता है।

सब - संख्यावाचक विशेषण, मूलावस्था, पुल्लिंग, बहुवचन, 'राक्षसों' विशेष्य की संख्या का बोध कराता है।

➢ क्रिया शब्द का पद परिचय

क्रिया शब्द के पद परिचय में क्रिया का प्रकार, लिंग, वचन, वाच्य, काल तथा वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध को बतलाया जाता है।

राम ने रावण को **मारा**।

मारा - क्रिया, सकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, भूतकाल। 'मारा' क्रिया का कर्ता राम तथा कर्म रावण।

मैं सवेरे **उठा**।

उठा - क्रिया, अकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य, भूतकाल। उठा क्रिया का कर्ता मैं ।

➢ अव्यय शब्द का पद परिचय

अव्यय शब्द चूंकि लिंग, वचन, कारक आदि से प्रभावित नहीं होता, अतः इनके पद परिचय में केवल अव्यय शब्द के प्रकार, उसकी विशेषता या सम्बन्ध ही बताया जाता है।

(1) क्रियाविशेषण – क्रियाविशेषण के भेद (रीतिवाचक, स्थानवाचक, कालवाचक, परिमाणवाचक) उस क्रिया का उल्लेख, जिसकी विशेषता बताई जा रही हो।

मैं भीतर बैठी थी और बच्चे धीरे-धीरे पढ़ रहे थे।

भीतर - क्रियाविशेषण, स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 'बैठी'क्रिया के स्थान की विशेषता।
धीरे-धीरे - क्रियाविशेषण, रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'पढ़ रहे थे'क्रिया की रीति की विशेषता।

(2) संबंधबोधक - संबंधबोधक के भेद, किस संज्ञा/सर्वनाम से संबंद्ध है।

कुर्सी के नीचे बिल्ली बैठी है।

के नीचे - संबंधबोधक, 'कुर्सी' और 'बिल्ली' इसके संबंधी शब्द हैं।

(3) समुच्चयबोधक - भेदों का उल्लेख, जुड़ने वाले पदों का उल्लेख।

तुम कॉपी और किताब ले लो लेकिन फाड़ना नहीं।

और - समुच्चयबोधक (समानाधिकरण) कॉपी-किताब शब्दों का संबंध करने वाला।
लेकिन - भेद दर्शक (विरोध-दर्शक) तुम.....ले लो तथा 'फाड़ना नहीं इन दो वाक्यों को जोड़ता है।

(4) विस्मयादिबोधक - भेदों और भावों का उल्लेख।

वाह! कितना सुंदर बग़ीचा है। ठीक! मैं रोज़ आऊँगा।

वाह! - विस्मयादिबोधक, हर्ष - उल्लास
ठीक! - विस्मयादिबोधक, स्वीकार बोधक

कुछ अतिरिक्त उदाहरण -

(1) अपने गाँव की मिट्टी छूने के लिए मै तरस गया ।
अपने – विशेषण (सार्वनामिक), एकवचन, पुल्लिंग, विशेष्य 'गाँव'
गाँव की – संज्ञा (जातिवाचक), एकवचन, पुल्लिंग, संबंधकारक (कारक 'की')

मिट्टी – संज्ञा (द्रव्यवाचक)
मैं – सर्वनाम (उत्तम पुरुष), एकवचन, पुल्लिंग, 'तरस गया'क्रिया का कर्ता
तरस गया – क्रिया (अकर्मक, संयुक्त), भूतकाल, एकवचन, पुल्लिंग, कर्तृवाच्य, कर्ता "मै"

(2) निर्धन लोगों की ईमानदारी देखों ।
निर्धन – विशेषण (गुणवाचक), बहुवचन, पुल्लिंग, विशेष्य 'लोगो'
लोगो की – संज्ञा (जातिवाचक), बहुवचन, पुल्लिंग, संबंध कारक (कारक 'की')
ईमानदारी – संज्ञा (भाववाचक), कर्म कारक, 'देखो' क्रिया का कर्म
देखो – क्रिया (सकर्मक), बहुवचन, धातु 'देख', वर्तमानकाल, क्रिया का कर्म 'ईमानदारी'

(3) यह पुस्तक मेरे मित्र की है।
यह – विशेषण (सार्वनामिक), एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य 'पुस्तक'
पुस्तक – संज्ञा (जातिवाचक), एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक, 'है' क्रिया का कर्म
मेरे – सर्वनाम (पुरुषवाचक – उत्तम पुरुष), पुल्लिंग, एकवचन, संबंधकारक
मित्र की – संज्ञा (जातिवाचक), एकवचन, पुल्लिंग, संबंध कारक (कारक 'की), 'है' क्रिया से संबंध
है – क्रिया, वर्तमानकाल, एकवचन

(4) नेहा यहाँ इसी मकान में रहती है।
नेहा – संज्ञा (व्यक्तिवाचक संज्ञा), स्त्रीलिंग,एकवचन, करता कारक, 'नेहा'रहना क्रिया की कर्ता है
यहाँ – क्रिया विशेषण (स्थानवाचक क्रिया विशेषण)
इसी – विशेषण (सार्वनामिक), पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य – 'मकान'
मकान में – संज्ञा (जातिवाचक), पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक (कारक 'में), मकान 'रहना' क्रिया का कर्म है
रहती है – क्रिया (सकर्मक), स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, वर्तमानकाल, कर्तृवाच्य, 'रहती है 'क्रिया की कर्ता 'नेहा' और कर्म 'मकान'है

(5) अरे वाह! तुम भी पुस्तक पढ़ सकते हो।
अरे वाह! – विस्मयादिबोधक, आश्चर्य का भाव
तुम – सर्वनाम (मध्यमपुरुष), एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, 'पढ़ सकते हो' क्रिया का कर्ता है
भी – निपात
पुस्तक – संज्ञा (जातिवाचक), स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, पुस्तक 'पढ़ सकते हो'क्रिया का कर्म है
पढ़ सकते हो – क्रिया (सकर्मक), पुल्लिंग, एकवचन, अन्य पुरुष, वर्तमानकाल, कर्तृवाच्य, क्रिया का कर्ता तुम व कर्म पुस्तक।

प्रश्न- अभ्यास

i. कौटिल्य का एक अन्य नाम चाणक्य भी है। रेखांकित पद का पद परिचय दीजिए-

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, मध्यम पुरुष

(ख) जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुलिंग, उत्तम पुरुष

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, प्रथम पुरुष

(घ) भाववाचक संज्ञा, बहुवचन, स्त्रीलिंग, अन्य पुरुष

ii. रामचरित मानस की चौपाइयाँ आराम से पढ़नी चाहिए। 'आराम से पद का पद परिचय है-

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, अकर्मक

(ख) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'पढ़नी चाहिए क्रिया की विशेषता बताने वाला पद

(ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुलिंग, अकर्मक

(घ) गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, स्त्रीलिंग, सकर्मक

iii. भक्त ने पुजारी को दो दर्जन केले दिए । 'दो दर्जन' पद व्याकरणिक-परिचय बताइए-

(क) गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुलिंग, केले विशेष्य का विशेषण

(ख) परिणामवाचक विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, केले विशेष्य का विशेषण

(ग) सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, दूँगा क्रिया की विशेषता

(घ) संख्यावाची विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, केले विशेष्य का विशेषण

iv. मैं देश के लिए अपने प्राण निछावर कर दूँगा। 'मैं का पद-परिचय दीजिए- -

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुलिंग, उत्तम पुरुष, कर्ता कार

(ख) निश्चयवाचक सर्वनाम, बहुवचन, पुलिंग, मध्यम पुरुष, कर्म कारक

(ग) निजवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, उत्तम पुरुष, कर्ता कारक

(घ) भाववाचक संज्ञा, बहुवचन, पुलिंग, मध्यम पुरुष, कर्म कारक

V. वाह! तुमने बहुत अच्छा किया। रेखांकित पद का पद परिचय क्या होगा ?

(क) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, कर्ता कारक

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक

(ग) संख्यावाची विशेषण, एकवचन, पुलिंग, करण कारक

(घ) विस्मयादि बोधक अव्यय, हर्षसूचक, उत्साह प्रकट करने वाला

उत्तर-

i- (ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, प्रथम पुरुष

ii- (ख) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'पढ़नी चाहिए' क्रिया की विशेषता बताने वाला पद

iii- (घ) संख्यावाची विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, केले विशेष्य का विशेषण

iv- (क) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुलिंग, उत्तम पुरुष, कर्ता कारक

V- (घ) विस्मयादि बोधक अव्यय, हर्षसूचक, उत्साह प्रकट करने वाला पद

अलंकार

अलंकार शब्द का अर्थ हैगहना या आभूषण।- जिस प्रकार एक स्त्री का सौंदर्य आभूषण धारण करते ही उभर जाता है ठीक उसी प्रकार काव्य में यदि अलंकारों का प्रयोग किया जाए तो काव्य भी सौंदर्य की दृष्टि से, उच्चकोटि का हो जाता है।

अलंकार के मुख्य रूप से दो भेद माने जाते हैं-

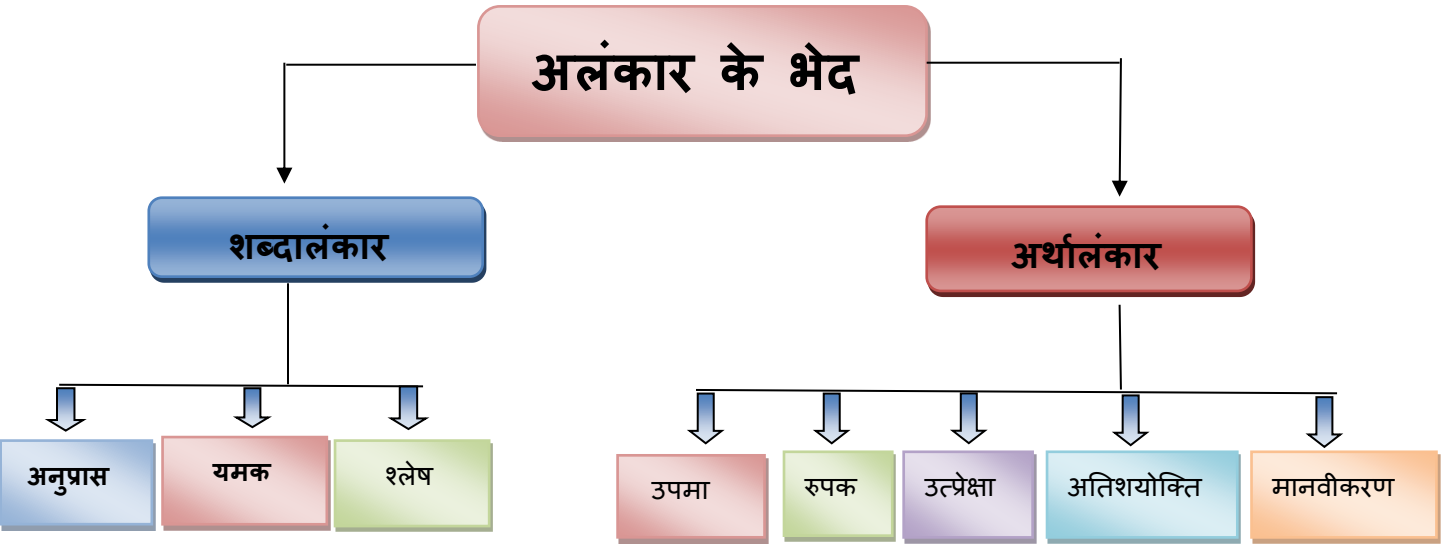

(क) शब्दालंकार (ख) अर्थालंकार

(क) शब्दालंकार- जब काव्य में शब्द प्रयोग के कारण सौंदर्य उत्पन्न हो तो उसे शब्दालंकार कहते हैं।

(ख) अर्थालंकार- काव्य में जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होता हैउसे अर्थालंकार कहते हैं।,

शब्दालंकार

श्लेष अलंकार

'श्लेष' शब्द का अर्थ है-'चिपकना'। जहाँ किसी एक ही शब्द में एक से अधिक अर्थ चिपके श्लेष' वहाँ ,होते हैं ' - श्लेष' वहाँ ,होता है। अर्थात जहाँ काव्य में कोई शब्द एक से अधिक अर्थों को व्यक्त करता है 'अलंकार -जैसे ;होता है 'अलंकार

• रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरेमोती मानुष च ,ून।।

यहाँ दूसरी पंक्ति में आए -शब्द के तीन अर्थ है 'पानी' मोती के संदर्भ में 'चमक', मनुष्य के संदर्भ में 'इज्जत', चूने के संदर्भ में 'जल'।

अन्य उदाहरण :

1 चरन धरत चिंता करत चितवत चारहुं ओर,

सुबरन को खोजत फिरत कवि व्यभिचारी चोर।।

2 जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोय।

बारै उजियारो करै, बढ़ै अंधेरो होय।।

अर्थालंकार

1. उत्प्रेक्षा अलंकार

उत्प्रेक्षा अलंकार में प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत के गुण धर्म की समानता के कारण समान होने की संभावना कर- जैसा मान लिया जाता 'उपमान' को 'उपमेय' ली जाती है। याहै।

उत्प्रेक्षा अलंकार में संभावना करने के लिए प्रायः,'मानो' 'मनु','मनहु', मनहुँ, 'जानो', 'जनहु' जनहुँ, 'ज्यों', 'जनु' आदि वाचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अतः ये वाचक शब्द जिस कविता में आएँ समझ लीजिए वहाँ , अलंकार 'उत्प्रेक्षा' है-जैसे ;

• पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के,

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

अर्थात- यहाँ कवि ने मेघों के बन-ठन के आने पर कवि ने संभावना व्यक्त की है कि मानो शहर के मेहमान गाँव में आए हों । वाचक शब्द 'ज्यों' है, अतः यहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' है।

उत्प्रेक्षा अलंकार के उदाहरण :

- **ले चला साथ मैं तुझे कनक। ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण।।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में जैसा कि आप देख सकते हैं कनक का अर्थ धतुरा है। कवि कहता है कि वह धतूरे को ऐसे ले चला मानो कोई भिक्षु सोना ले जा रहा हो।

काव्यांश में 'ज्यों' शब्द का इस्तेमाल हो रहा है एवं कनक – उपमेय में स्वर्ण – उपमान के होने कि कल्पना हो रही है। अतएव यह उदाहरण उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **सिर फट गया उसका वहीं। मानो अरुण रंग का घड़ा हो।**

दिए गए उदाहरण में सिर कि लाल रंग का घड़ा होने कि कल्पना की जा रही है। यहाँ सिर – उपमेय है एवं लाल रंग का घड़ा – उपमान है। उपमेय में उपमान के होने कि कल्पना कि जा रही है। अतएव यह उदाहरण उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **नेत्र मानो कमल हैं।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में 'नेत्र' – उपमेय की 'कमल' – उपमान होने कि कल्पना की जा रही है। मानो शब्द का प्रयोग कल्पना करने के लिए किया गया है। अतएव यह उदाहरण उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात | मनहुँ नीलमणि सैल पर, आतप परयौ प्रभात ||**

यहाँ इन पंक्तियों में श्रीकृष्ण के सुंदर श्याम शरीर में नीलमणि पर्वत की और शरीर पर शोभायमान पीताम्बर में प्रभात की धूप की मनोरम संभावना की गई है।

जैसा कि आप देख सकते हैं मनहूँ शब्द का प्रयोग संभावना दर्शाने के लिए किया गया है। अतः यह उदाहरण उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल बाहर सोहत मनु पिये, दावानल की ज्वाल।।**

ऊपर दी गयी पंक्तियों में 'गूंज की माला' – उपमेय में 'दावानल की ज्वाल' – उपमान की संभावना होने से उत्प्रेक्षा अलंकार है। दी गयी पंक्ति में मनु शब्द का प्रयोग संभावना दर्शाने के लिए किया गया है अतः यह उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **बहुत काली सिल जरा-से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में जैसा कि आप देख सकते हैं बहुत काले पत्थर की ज़रा से लाल केसर से धुलने कि कल्पना कि गयी है। अतः यह उदाहरण उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **उस वक्त मारे क्रोध के तनु कांपने उनका लगा। मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।**

इस उदाहरण में अर्जुन के क्रोध से कांपते हुए शरीर (उपमेय) की कल्पना हवा के जोर से जागते सागर (उपमान) से कि गयी है। दिए गए उदाहरण में मानो शब्द का प्रयोग किया गया है अतः यह उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए| हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए|**

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरण में देख सकते हैं कि पंक्तियों में उत्तरा के अश्रुपूर्ण नेत्रों (उपमेय) में ओस जल-कण युक्त पंकज (उपमान) की संभावना प्रकट की गयी है। वाक्य में मानो वाचक शब्द प्रयोग हुआ है अतएव यह उदाहरण उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

2. अतिशयोक्ति अलंकार

'अतिशयोक्ति' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'अतिशय' तथा 'उक्ति' अर्थात ऐसी उक्ति जो अतिशयता के साथ कही गई हो या बढ़ा-चढ़ाकर कही गई हो।

इस तरह कविता में जब ,चढ़ाकर अतिशयपूर्ण ढंग से किया जाता है-का वर्णन बहुत बढ़ा 'उपमेय' या 'प्रस्तुत' तब वहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है।

• देखि सुदामा की दीन दशा, करुणा करके करुणानिधि रोए ।

पानी परात को हाथ छुओ नहिं, नैनन के जल सों पग धोए ।।

अर्थात - सुदामा की दीन दशा देखकर श्री कृष्ण करुणापूर्वक रो पड़े। सुदामा के पैरों को धोने के लिए परात में जो पानी मँगाया था, उसको तो छुआ ही नहीं, अपने आँसुओं के जल से ही सुदामा के पग (पैर) धो दिए। सुदामा के पैरों को धोने का वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण है। अतः यहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।

अतिशयोक्ति अलंकार के उदाहरण :

- **हनुमान की पूंछ में लगन न पाई आग, लंका सिगरी जल गई गए निशाचर भाग।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में कहा गया है कि हनुमान की पूंछ में आग लगने से पहले ही पूरी लंका जलकर राख हो गयी और सारे राक्षस भाग खड़े हुए।
यह बात बिलकुल असंभव है एवं लोक सीमा से बढ़ाकर वर्णन किया गया है। अतः यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **आगे नदियां पड़ी अपार घोडा कैसे उतरे पार। राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पार।।**

ऊपर दी गयी पंक्तियों में बताया गया है कि महाराणा प्रताप के सोचने की क्रिया ख़त्म होने से पहले ही चेतक ने नदियाँ पार कर दी।
यह महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक की अतिशयोक्ति है एवं इस तथ्य को लोक सीमा से बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया गया है। अतः यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **धनुष उठाया ज्यों ही उसने, और चढ़ाया उस पर बाण | धरा–सिन्धु नभ काँपे सहसा, विकल हुए जीवों के प्राण।**

ऊपर दिए गए वाक्यों में बताया गया है कि जैसे ही अर्जुन ने धनुष उठाया और उस पर बाण चढ़ाया तभी धरती, आसमान एवं नदियाँ कांपने लगी ओर सभी जीवों के प्राण निकलने को हो गए। यह बात बिलकुल असंभव है क्योंकि बिना बाण चलाये ऐसा हो ही नहीं सकता है। इस तथ्य का लोक सीमा से बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया गया है। अतः यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

अतिशयोक्ति अलंकार के अन्य उदाहरण:-

- **भूप सहस दस एकहिं बारा। लगे उठावन टरत न टारा।।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में कहा गया है कि जब धनुर्भंग हो रहा था कोई राजा उस धनुष को उठा नहीं पा रहा था तब दस हज़ार राजा एक साथ उस धनुष को उठाने लगे लेकिन वह अपनी जगह से तनिक भी नहीं हिला। यह बात बिलकुल असंभव है क्योंकि दस हज़ार लोग एक साथ धनुष को नहीं उठा सकते। अतः यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **परवल पाक, फाट हिय गेहूँ।**

ये पंक्तियाँ प्रसिद्ध कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने नायिका नागमती के विरह का वर्णन करते हुए कहा है कि उसके विरह के ताप के कारण परवल पाक गए एवं गेहूं का हृदय फट गया।

लेकिन यह कथन बिलकुल असंभव हा क्योंकि गेहूं का कभी हृदय नहीं फट सकता है। अतः यह बात बढ़ा-चढ़ाकर बोली गयी है। अतएव यह उदाहरण अतिशयोक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **देख लो साकेत नगरी है यह। स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में जैसा की आप देख सकते हैं यहां एक नगरी की सुंदरता का वर्णन किया जा रहा है। यह वर्णन बहुत ही बढ़ा चढ़कर किया जा रहा है। जैसा की हम जानते हैं की जब किसी चीज़ का बहुत बढ़ा चढाकर वर्णन किया जाता है तो वहां अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

- **मैं बरजी कै बार तू, इतकत लेती करौंट। पंखुरी लगे गुलाब की, परि है गात खरौंट।**

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरण में देख सकते हैं यहां गुलाब की पंहुरियों से शरीर में खरोंच आने की बात कही गयी है। अर्थात नारी को बहुत ही कोमल बताया गया है। जैसा की हम जानते हैं गुलाब की पंखुरिया बहुत ही कोमल होती हैं और उनसे हमें चोट नहीं लगती। यहां गुलाब की पंखुरियों से चोट लगने की बात कही गयी है जो की एक अतिश्योक्ति है। अतः यह उदाहरण अतिश्योक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **बाँधा था विधु को किसने इन काली ज़ंजीरों में, मणिवाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ है हीरों से।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में जैसा की आप देख सकते हैं कि कवि ने मोतियों से भरी हुई प्रिया की मांग का वर्णन किया है। इन पंक्तियों में चाँद का मुख, से काली ज़ंज़ीर का बालों से तथा मणिवाले फणियों से मोती भरी मांग का अतिश्योक्ति पूर्ण वर्णन किया गया है। जैसा की हम जानते हैं की जब किसी चीज़ का बढ़ा-चढ़कर उल्लेख किया जाता है तब वहां अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

- **दादुर धुनि चहुँ दिशा सुहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ।।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में जैसा की आप देख सकते हैं, यहाँ मेंढकों की आवाज़ (उपमेय) में ब्रह्मचारी समुदाय द्वारा वेद पढ़ने की संभावना प्रकट की गई है। यह एक तथ्य है की मेंढकों की आवाज़ में एवं वेड पढने में बहुत ही ज्यादा फर्क होता है अतः मेंढकों के आवाज़ निकालने को वेड पढने से तुलना किया गया है।

अतः यह उदाहरण अतिश्योक्ति अलंकार के अंतर्गत आएगा।

3. मानवीकरण अलंकार

'मानवीकरण' शब्द का अर्थ है-'किसी को मानव बना देना।'

वस्तुतः काव्य में कवि जब प्रकृति का वर्णन करता है, तो प्रकृति को इस रूप में चित्रित करता है, जैसे वह कोई **'मानव' या 'मानवी'** हो। ऐसे स्थलों पर 'मानवीकरण अलंकार' होता है।

दिवसावसान का समय

मेघमय आसमान से उतर रही

वह संध्या-सुंदरी परी-सी

धीरेधीरे।-धीरे-

यहाँ धीरे उतरते हुए चित्रित करना मानवीकरण-को एक सुंदर परी के रूप में आसमान से धीरे 'संध्या' अलंकार का सुंदर उदाहरण है।

मानवीकरण अलंकार के उदाहरण :

- **फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।**

जैसा कि ऊपर दिए गए उदाहरण में दिया गया है की फूल हंस रहे हैं एवं कलियाँ मुस्कुरा रही हैं। जैसा की हम जानते हैं की हंसने एवं मुस्कुराने की क्रियाएं केवल मनुष्य ही कर सकते हैं प्राकृतिक चीज़ें नहीं। ये असलियत में संभव नहीं है

एवं हम यह भी जानते हैं की जब सजीव भावनाओं का वर्णन चीज़ों में किया जाता है तब यह मानवीकरण अलंकार होता है।

- **मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।**

ऊपर के उदाहरण में दिया गया है कि बादल बड़े सज कर आये लेकिन ये सब क्रियाएं तो मनुष्य कि होती हैं न कि बादलों की। अतएव यह उदाहरण मानवीकरण अलंकार के अंतर्गत आएगा।ये असलियत में संभव नहीं है एवं हम यह भी जानते हैं की जब सजीव भावनाओं का वर्णन चीज़ों में किया जाता है तब यह मानवीकरण अलंकार होता है।

- **मेघमय आसमान से उतर रही है संध्या सुन्दरी परी सी धीरे-धीरे |**

ऊपर दी गयी पंक्तियों में बताया गया है कि संध्या सुन्दर परी की तरह धीरे-धीरे आसमान से नीचे उतर रही है।इस वाक्य में संध्या की तुलना एक सुन्दर परी से की है। ये असलियत में संभव नहीं है एवं हम यह भी जानते हैं की जब सजीव भावनाओं का वर्णन निर्जीव चीज़ों में किया जाता है तब यह मानवीकरण अलंकार होता है।

- **उषा सुनहरे तीर बरसाती, जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में उषा यानी भोर को सुनहरे तीर बरसाती हुई नायिका के रूप में दिखाया जा रहा है। यहाँ भी निर्जीवों में मानवीय भावनाओं का होना दिख रहा है। हम जानते हैं की नायिका एक मनुष्य होती हैं ना की एक निर्जीव अतः यह संभव नहीं है। हम यह भी जानते हैं की जब सजीव भावनाओं का वर्णन निर्जीव चीज़ों में किया जाता है तब यह मानवीकरण अलंकार होता है।

मानवीकरण अलंकार के अन्य उदाहरण:

- **कलियाँ दरवाज़े खोल-खोल जब झुरमुट में मुस्काती हैं।**

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरण में देख सकते हैं कि कलियों को दरवाज़े खोल खोल कर झुरमुट में मुस्कुराते हुए वर्णित किया गया है। हम जानते हैं कि मुस्कुराने की क्रिया सिर्फ मनुष्य सजीव ही कर सकते हैं कलियाँ ये क्रिया नहीं कर सकती हैं। यह उनके लिए असंभव है। मुस्कुराना आदि क्रियाएं तो सिर्फ मानव ही करते हैं। अतः यहाँ पर प्राकर्तिक चीज़ों में मानवीय भावनाएं दर्शायी जा रही है। हम यह भी जानते हैं की जब सजीव भावनाओं का वर्णन निर्जीव चीज़ों में किया जाता है तब यह मानवीकरण अलंकार होता है।

- **जगी वनस्पतियाँ अलसाई मुह धोया शीतल जल से।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में बताया गया है कि वनस्पतियाँ जागी फिर अलसाई ओर शीतल यानी ठन्डे जल से उन्होंने मुह धोया। जैसा कि हमें पता है कि वनस्पतियों के मुह नहीं होता है। ये मुह धोने वाली अलसाने वाली आदि क्रियाएं सिर्फ मनुष्यों कि होती हैं। ये क्रियाएं वनस्पति द्वारा किया जाना असंभव है। अतः यहाँ मानवीकरण अलंकार है.

- **सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुर गान।**

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरण में देख सकते हैं कि लहरों को नाचता हुआ व गाता हुआ वर्णित किया है। नाचना गाना आदि क्रियाएं सिर्फ मनुष्य की क्रियाएं होती हैं ना कि किसी निर्जीव की। जैसा हम जानते हैं नाचने गाने यहाँ निर्जीवों में सजीवों की भावनाएं दिखाई गयी हैं। अतः यह उदाहरण मानवीकरण अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **है वसुंधरा बिखेर देती मोती सबके सोने पर। रवि बटोर लेता है उसको सदा सवेरा होने पर।**

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरण में देख सकते हैं कि यहाँ वसुंधरा द्वारा मोती बिखेरने और सूर्य द्वारा उसे सवेरे एकत्र कर लेने में मानवीय क्रियाओं का आरोप है। अतः यह उदाहरण मानवीकरण अलंकार के अंतर्गत आएगा।

प्रश्न- अभ्यास

निम्नलिखित पंक्तियों में निहित अलंकारों का चयन कीजिए।

1. मधुबन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ।

(क) उत्प्रेक्षा अलंकार (ख) श्लेष अलंकार (ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

2. मेघ आए बड़े बन ठन के सँवर के।

(क) श्लेष अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार (ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

3. भूप सहस दस एक ही बारा लगे उठावन टरई न टारा।

(क) श्लेष अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार (ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

4. जो रहीम गति दीप की कुल कपूत गति सोय । बारे उजियारो करै, बढ़े अँधरो होय || (क) श्लेष अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

5. हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग। लंका सगरी जल गई, गए निशाचर भाग ।। (क) श्लेष अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

6. है वसुंधरा बिखेर देती, मोती सबके सोने पर।

रवि बटोर लेता है उनको सदा सवेरा होने पर।

(क) श्लेष अलंकार (ख) मानवीकरण अलंकार

(ग) अतिशयोक्ति अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

उत्तर-1. (ख) श्लेष अलंकार 2. (ख) मानवीकरण अलंकार 3. (ग) अतिशयोक्ति अलंकार 4. (क) श्लेष अलंकार 5. (ग) अतिशयोक्ति अलंकार 6. (ख) मानवीकरण अलंकार

क्षितिज भाग - 2

नेताजी का चश्मा

- स्वयं प्रकाश

लेखक परिचय : स्वयं प्रकाश का जन्म सन् **1947** में **इंदौर**, **मध्यप्रदेश** में हुआ| मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करके उन्होंने औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी की | वे स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद भोपाल में रहते थे और **वसुधा** पत्रिका के संपादन से जुड़े थे| उनका निधन **2019** में हुआ|

रचनाएँ: स्वयं प्रकाश समकालीन कहानी के चर्चित कहानीकार हैं| उनके तेरह कहानी-संग्रह प्रकाशित हैं| कुछ प्रमुख संग्रह इस प्रकार हैं- **सूरज कब निकलेगा, आएँगे अच्छे दिन भी, आदमी जात का आदमी, संधान|**

उपन्यास : **बीच में विनय, ईंधन|**

उनकी कृतियों पर उन्हें **पहल सम्मान, बनमाली पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार** आदि प्राप्त हो चुके हैं|

साहित्यिक विशेषताएँ : स्वयं प्रकाश मध्यवर्गीय जीवन-शैली का कुशल चित्रण करते हैं| वे देशभक्ति की नारे के विरूद्ध सामान्य मनुष्य के आचरण में देशप्रेम देखना चाहते हैं| उनकी कहानियों में जातीय भेदभाव के विरूद्ध आक्रोश दिखाई देता है|

भाषा शैली: स्वयं प्रकाश की भाषा सरल, सहज और अपने विषय-संसार के अनुरूप होती है| वे वर्ण्य विषय का सूक्ष्मता के साथ वर्णन करते हैं | उनकी कहानियों में व्यंग्य की चेतना स्पष्ट सुनाई देती है|

पाठ का सार

हालदार साहब कंपनी के काम से उस कस्बे से आया-जाया करते थे| कस्बा छोटा था| अधिकतर मकान कच्चे थे| एक नगरपालिका भी थी| लगता है, उस पालिका ने कभी कस्बे के मुख्य बाजार के चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की संगमरमर की मूर्ति लगवा दी होगी| ऐसा लगता है कि मूर्ति किसी स्थानीय कलाकार ने ही बनाई होगी | शायद कस्बे के

एकमात्र स्कूल के ड्राइंग मास्टर मोतीलाल ने उस मूर्ति को एक महीने में बनाकर खड़ा करने का वादा किया होगा| मूर्ति टोपी से कोट के दूसरे बटन तक थी| दो फुट ऊँची यह मूर्ति बहुत सुन्दर लग रही थी| मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' या 'तुम मुझे खून दो' का नारा याद आने लगता था|

हालदार साहब को आते-जाते एक बात खटकती थी| नेताजी की आँखों में चश्मा का न होना | यानी संगमरमर का नहीं था| उसकी जगह किसी ने एक सचमुच का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया था| पहली बार उन्होंने देखा था तो उनके होठों पर कौतुक भारी मुसकान फ़ैल गई थी| पत्थर की मूर्ति पर वास्तविक चश्मा ! क्या आइडिया है! हालदार जीप पर बैठे-बैठे सोचने लगे- इस कस्बे के नागरिक सचमुच देशभक्त हैं | वे नेताजी को चश्मा पहनाकर कम-से-कम नेताजी के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हैं|

हालदार साहब का कौतुक तब और भी बढ़ा, जब उन्होंने देखा कि अगली बार मूर्ति पर लगे चश्मे का फ्रेम बदल गया है| तीसरी बार फिर फ्रेम बदला दिखाई दिया| हालदार ने सोचा – सचमुच बढ़िया आइडिया है| मूर्ति के कपड़े नहीं बदले जा सकते| किन्तु चश्मा तो बदला सकता है|

आखिरकार हालदार ने एक बार अपनी जीप रूकवा ली| उन्होंने चौराहे पर एक पानवाले से पूछा कि ये नेताजी के चश्मे के फ्रेम कौन बदलता है? पानवाला मोटा-सा खुशमिजाज आदमी था| उसने बताया कि ये फ्रेम कैप्टन चश्मेवाला बदलता है| अगर किसी ग्राहक को मूर्ति पर लगा चश्मा पसंद आ गया तो वह चश्मा ग्राहक को देकर कैप्टन मूर्ति पर नया चश्मा फिट कर देता है|परन्तु वह सुभाष की मूर्ति को बिना चश्मे के नहीं रहने देता| मानो इससे उसे कोई असुविधा हो रही हो|

हालदार ने पानवाले से पूछा कि मूर्ति का ओरिजिनल चश्मा कहाँ गया? पानवाले ने हँसते हुए बताया कि उसे मास्टर बनाना भूल गया| हालदार साहब यह सुनकर द्रवित हो गए| उनका अनुमान सही निकला| यह मूर्तिकार सचमुच कस्बे का अध्यापक था| लगता है, वह एक महीने के कम समय में मूर्ति बनाते-बनाते चश्मे के बारे में कुछ तय नहीं कर पाया, या असफल रहा होगा, या चश्मा टूट गया होगा या पत्थर का चश्मा अलग से लगाया होगा और वह निकल गया होगा|

हालदार साहब को यह विचित्र लगता| उन्होंने एक बार फिर पानवाले के पास जीप रूकवा ली| पूछा- यह कैप्टन चश्मे वाला नेताजी का साथी था? या आजाद हिन्द फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही था? इस प्रश्न पर पानवाला हँसा | मुसकराकर बोला- वो लंगड़ा क्या फ़ौज में जाएगा ! पागल है पागल | वो देखो, वो आ रहा है| उसी से बात कर लो| फोटो-वोटो छपवा दो कहीं उसका|

हालदार साहब को एक देशभक्त का ऐसा मजाक अच्छा नहीं लगा| मुड़कर देखा तो एक बेहद बूढा मरियल-सा लंगड़ा, सिर पर गाँधी-टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए, आ रहा था| उसके हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में बाँस पर टंगे बहुत-से चश्मे थे| पता चला कि वह फेरी लगाकर चश्मे बेचता है| हालदार पूछना चाहते थे कि फिर इसका नाम कैप्टन कैसे पड़ा? परन्तु न तो पानवाले के पास फुर्सत थी, न जीप के ड्राइवर के पास|

उस दिन के बाद कोई दो साल लगातार वे आते-जाते मूर्ति की ओर देखते रहे| कभी चश्मा गोल होता, कभी चौकोर, कभी लाल, कभी काला| परन्तु कोई-न-कोई चश्मा होता जरूर था|

एक बार ऐसा हुआ कि मूर्ति पर कोई भी चश्मा नहीं था | उस दिन पानवाले की तथा चौराहे की सारी दुकानें बंद थीं| अगली बार आकर उन्होंने पानवाले से पूछा- इस बार मूर्ति पर चश्मा क्यों नहीं है? पानवाले ने अपनी आँखें पोंछते हुए उदास स्वर में बताया कि कैप्टन मर गया है| यह सुनकर हालदार साहब उदास होकर जीप में बैठकर चले गए| वे सोचने लगे- उस देश का क्या होगा जहाँ के निवासी देशभक्त बलिदानियों पर हँसते हैं और स्वयं बिकने के लिए, मौके ढूँढते हैं|

हालदार साहब पंद्रह दिन बाद फिर-से उस कस्बे से होकर गुजरे| सोचा कि अब वे बिना चश्मे वाली नेताजी की मूर्ति को नहीं देखेंगे| परंतु जैसे ही चौराहा करीब आया| हालदार साहब ने चीखकर आदेश दिया- जीप रोको! उन्होंने देखा- नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का बना चश्मा रखा हुआ था| हालदार साहब की आँखें नम हो गई| वे भावुक हो गए|

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'हालदार साहब' भावुक क्यों हो गए?**
   क) बिना चश्मे की मूर्ति देखकर
   ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर
   ग) कैप्टन की मृत्यु का समाचार सुनकर
   घ) पानवाले के व्यंग्य को सुनकर
2. **हालदार साहब ने कैप्टन द्वारा नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाने के जो अनुमान लगाए| उनमें कौन-सा सही नहीं है ?**
   क) उसे नेताजी की बगैर चश्मे वाली मूर्ति बुरी लगती है
   ख) उसे अपने चश्मों का विज्ञापन करने के लिए मूर्ति उपयुक्त लगती होगी|
   ग) उसे नेताजी की बिना चश्मे मूर्ति आहत करती है|
   घ) उसे लगता कि नेताजी को बिना चश्मे के असुविधा हो रही होगी|
3. **'कैप्टन' कौन था?**
   क) अवकाश प्राप्त सैनिक
   ख) आज़ाद हिन्द फ़ौज का सिपाही
   ग) चश्मा विक्रेता
   घ) नगरपालिका का सदस्य
4. **'नेताजी का चश्मा' एक ..... कहानी है | रिक्त स्थान हेतु सही विकल्प चुनें-**
   क) भाव प्रधान
   ख) व्यंग्य प्रधान
   ग) दृश्य प्रधान
   घ) सौंदर्य प्रधान
5. **'पानवाले के द्वारा साफ़ बता दिया गया था|' इस वाक्य में प्रयुक्त वाच्य-भेद चुनें-**
   क) कर्मवाच्य ख) भाव वाच्य ग) कर्तृ वाच्य घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : 1. ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखकर
2. ख) उसे अपने चश्मों का विज्ञापन करने के लिए मूर्ति उपयुक्त लगती होगी|
3. ग) चश्मा विक्रेता 4. ख) व्यंग्य प्रधान 5. क) कर्मवाच्य

लघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा –

क) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है? {*CBSE 2010, 2012, 2017* }

ख) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे? {*CBSE 2012, 2019* }

उत्तर क) मूर्ति पर लगा सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि यह धरती देशभक्तों से शून्य नहीं हुई है| एक कैप्टन नहीं रहा, तो अन्य लोग उस दायित्व को सँभालने के लिए तैयार हैं| सबसे बड़ी बात यह है कि सरकंडे का चश्मा किसी गरीब बच्चे ने बनाया है| अत: उम्मीद है कि ये बच्चे गरीबी के बावजूद भी देश को ऊपर उठाने का प्रयास करते होंगे |

ख) हालदार साहब के लिए सुभाष की मूर्ति पर चश्मा लगाना इतनी-सी बात नहीं थी| यह उनके लिए बहुत बड़ी बात थी| यह उनके मन में आशा जगाती थी कि कस्बे-कस्बे में देशभक्ति जीवित है| देश की नई पीढ़ी में देश-प्रेम जीवित है| इसी खुशी और आशा से वे भावुक हो उठे|

प्रश्न 2. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे? {*CBSE 2019* }

उत्तर: चश्मेवाला कभी सेनानी नहीं रहा| वह तन से बहुत बूढ़ा और मरियल-सा था| परंतु उसके मन में देशभक्ति की भावना प्रबल थी| वह सुभाषचंद्र बोस का सम्मान करता था| वह सुभाष की बिना चश्मे वाली मूर्ति को देखकर आहत था| इसलिए अपनी ओर से एक चश्मा नेताजी की मूर्ति पर अवश्य लगाता था| उसकी इसी भावना को देखकर ही लोगों ने उसे सुभाषचंद्र बोस का साथी या सेना का कैप्टन कहकर सम्मान दिया| चाहे उसका यह नाम व्यंग्य में रखा गया हो, फिर भी वह ठीक नाम था| वह कस्बे का अगुआ था|

प्रश्न 3. 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पानवाले का रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए| {*CBSE 2017* }

उत्तर: पानवाला साक्षात पान-भण्डार था| उसकी दुकान पर ही नहीं, मुँह में भी पान ठूँसा रहता था| पान के कारण वह बात भी ठीक से नहीं कर पाता था| यदि उससे कोई कुछ पूछ ले तो पहले उसे पीछे मुड़कर थूकना पड़ता था| हाँ, स्वभाव से वह बहुत ही रसिया, हँसोड़ और मजाकिया था| वह शरीर से मोटा था| उसकी तोंद निकली रहती थी| अत: वह जब भी हँसता था तो उसकी तोंद थिरकने लगती थी| हँसने पर उसके पानवाले दाँत खिल उठाते थे| वह बातें बनाने में उस्ताद था| उसकी बोली में हँसी और व्यंग्य का पुट बना रहता था |

प्रश्न 4. हालदार साहब और कैप्टन के चरित्र की दो विशेषताएँ लिखिए | {*CBSE 2020* }

उत्तर: हालदार साहब और कैप्टन के चरित्र की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

देशभक्त – दोनों देशभक्त और नेताजी सुभाषचंद्र बोस के पक्के भक्त हैं| कैप्टन नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाकर अपनी श्रद्धा प्रकट करता है और हालदार साहब उसकी प्रशंसा करते हैं|

श्रद्धालु- दोनों परम श्रद्धालु हैं वे सुभाषचंद्र बोस के प्रति अपनी श्रद्धा को छिपाते नहीं, प्रकट करते हैं| वे अपने व्यस्त समय में से समय नेताजी के लिए निकालना अपना कर्तव्य समझते हैं|

प्रश्न 5. 'सरकंडे का चश्मा चश्मा- भर नहीं था बल्कि हालदार साहब के लिए उसके कई अर्थ थे' उन अर्थों को स्पष्ट कीजिए| {*CBSE 2020* }

उत्तर: कैप्टन की मृत्यु के बाद कस्बे वालों ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर सरकंडे का बना हुआ चश्मा लगा दिया| यह चश्मा हालदार साहब के लिए केवल एक चश्मा-भर नहीं था, अपितु देशभक्ति का प्रतीक था| कस्बे वालों ने सरकंडे का चश्मा लगाकर सुभाषचंद्र के प्रति और अपने देश के प्रति श्रद्धा प्रकट की थी|

बालगोबिन भगत

- रामवृक्ष बेनीपुरी

<u>लेखक परिचय</u>

रामवृक्ष बेनीपुरी जी का जन्म सन् **1899** में **बिहार** के **मुजफ्फरपुर** जिले के **बेनीपुर** गांव में हुआ था। बचपन में ही इनके माता-पिता का निधन हो जाने के कारण इनका प्रारंभिक जीवन अभावों-कठिनाइयों और संघर्षों में बीता। लेखक सन् **1920** में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रूप से जुड़े तथा कई बार जेल भी गए। इनकी रचनाएं मात्र 15 वर्ष की अवस्था में ही पत्र पत्रिकाओं में छपने लगी। इन्होंने अनेकानेक दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र-पत्रिकाओं जैसे- **तरुण भारत, किसान मित्र, जनवाणी, नई धारा** आदि का संपादन कार्य भी किया। विशिष्ट शैलीकार होने के कारण इन्हें '**कलम का जादूगर**' भी कहा जाता है। इनका देहांत सन् **1968** में हुआ।

पाठ का सार

'बालगोबिन भगत' रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा रचित रेखाचित्र है, इसके माध्यम से लेखक ने एक ऐसे विलक्षण चरित्र का उद्घाटन किया है जो मनुष्यता, लोक संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है। लेखक ने बालगोबिन भगत के चरित्र की विशेषताओं द्वारा एक सच्चे संन्यासी का चित्र खींचा है। लेखक के अनुसार, वेश भूषा या बाह्य आडम्बरों से कोई संन्यासी नहीं हो सकता है। बल्कि संन्यास का असली आधार जीवन में मानवीय सरोकार होते हैं। बालगोबिन भगत को इसी आधार पर लेखक संन्यासी मानते हैं। इस पाठ द्वारा लेखक ने एक ओर जहां सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया है वहीं दूसरी ओर ग्रामीण जन - जीवन की झांकियों को भी बड़ी सुंदरता और रोचकता के साथ इस रेखाचित्र में उकेरा है।

भारतीय संस्कृति में साधु-संतों का विशेष रूप से आदर-सम्मान किया जाता है। उनकी वेशभूषा देखकर ही लोग उन्हें आदर भाव देने लगते हैं, परंतु लेखक ने अपने इस रेखाचित्र द्वारा बालगोबिन भगत के माध्यम से साधु-संतों की सही परिभाषा को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उसके अनुसार, साधुओं- सा वस्त्र धारण कर लेने और घर-परिवार छोड़ देने मात्र से व्यक्ति साधु-संत नहीं बन सकता। साधु-संत बनने के लिए उनके आदर्शों को जीवन में उतारना सही अर्थों में साधुत्व कहलाता है। बालगोबिन भगत ने संन्यासी बनने के लिए कभी अपने परिवार को नहीं छोड़ा। वे अपने कर्त्तव्यों को पूरी निष्ठा के साथ निभाते रहें तथा ईश्वरीय भक्ति में लीन होकर गाना भी गाते। वे न कभी झूठ बोलते, न ही बिना पूछे किसी से कुछ चीज़ लेते, सबके साथ खरा व्यवहार करते, हमेशा भजन गाते, खेती करके जो कुछ मिलता उसे ईश्वर को भोग लगाए बिना स्वयं ग्रहण नहीं करते। उनके ये समस्त गुण उन्हें सच्चे साधु-संतों की श्रेणियों में सबसे ऊपर रखते। अपने एकमात्र बेटे की मृत्यु के पश्चात अपनी बहु के भाई को उसका दूसरा विवाह करने का आदेश देकर उन्होंने समाज में वर्षों से चली आ रही सड़ी-गली परंपराओं को भी तोड़ा। बालगोबिन जैसे सच्चे साधु समाज में अब लुप्त हो गए हैं।

बालगोबिन भगत, कबीरपंथी विचारधारा से अनुप्राणित एक गृहस्थ संत थे। उनकी उम्र साठ से ऊपर की थी। बाल पके थे। कपड़े के नाम पर सिर्फ एक लंगोटी, सर्दी के मौसम में एक काला कंबल, रामानंदी चन्दन और गले में तुलसी की माला पहनते थे। उनके परिवार में उनका एक मात्र बेटा और पोतहु थे। वे खेतिहर गृहस्थ थे। झूठ, छल प्रपंच से दूर रहते। कबीर को अपना आदर्श मानते तथा उन्हीं के गीतों को गाते। अनाज पैदा होने पर उसे लादकर कबीरपंथी मठ में ले जाकर दे आते और वहाँ से जो कुछ प्रसाद के रूप में मिलता, उसी से वे अपना गुजर बसर करते।

बालगोबिन भगत अपना समस्त कार्य पूरी ईमानदारी, निष्ठा और तल्लीनता के साथ किया करते थे। आषाढ़ के दिनों में जब समूचा गाँव खेतों में काम कर रहा होता था, तब बालगोबिन अपना पूरा शरीर कीचड़ में लपेटे खेत में रोपनी करते हुए, अपने मधुर गानों का गायन किया करते थे। भादो की अंधियारी में उनकी खँजरी बजती थी। जब सारा संसार सोया होता, तब उनका संगीत जागता था। कार्तिक मास में उनकी प्रभातियाँ शुरू हो जातीं। वे पहले सवेरे नदी स्नान - ध्यान को जाते और लौटकर पोखर के ऊँचे भिंडे पर अपनी खँजरी लेकर बैठ जाते तथा अपना भक्तिमय संगीत शुरू कर देते। उनकी संगीत साधना का चरमोत्कर्ष उनके इकलौते बेटे की मृत्यु के समय दिखा। बड़े शौक से उन्होंने अपने बेटे का

विवाह करवाया था, पोतहु भी बड़ी सुशील थी। उन्होंने मरे हुए बेटे को आँगन में चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढंक रखा था तथा उसपर कुछ फूल बिखरा पड़ा था। उसी के सिरहाने बालगोबिन ज़मीन पर आसन जमाये गीत गाये जा रहे थे और बहू को रोने के बजाए उत्सव मनाने को कह रहे थे। उनके अनुसार आत्मा परमात्मा के पास चली गयी है, ये आनंद की बात है। उन्होंने बेटे की चिता को आग भी बहू से दिलवाई। जैसे ही श्राद्ध की अवधि पूरी हुई, बहू के भाई को बुलवाकर उसके दूसरा विवाह करने का आदेश दिया। बहू जाना नहीं चाहती थी, साथ रहकर उनकी सेवा करना चाहती थी। परन्तु बालगोबिन के आगे उसकी एक न चली। उन्होंने दलील रखी कि "अगर वो नहीं गयी तो वे घर छोड़कर चले जायेंगे।"

बालगोबिन भगत की मृत्यु भी उनके अनुरूप ही हुई। वे हर वर्ष गंगा स्नान को जाते। गंगा तीस कोस दूर पड़ती थी, फिर भी वे पैदल ही जाते। घर से खाकर निकलते तथा वापस लौटकर ही खाते थे, बाकी दिन उपवास रहते थे। किन्तु वे अत्यंत बूढ़े हो चूके थे। अतः जब वे लौटे तो तबीयत ख़राब हो चुकी थी, किन्तु वे नेम-व्रत छोड़ने वाले न थे। लोगों के मना करने के बावजूद भी उन्होंने वही पुरानी दिनचर्या शुरू कर दी। उस दिन संध्या में गाना तक गाया परन्तु सुबह में किसी ने गीत नहीं सुना, जाकर देखा तो पता चला बालगोबिन भगत परलोक सिधार गए।

<u>बहुविकल्पी प्रश्न</u>

1. बेटे की मृत्यु के पश्चात् बालगोबिन भगत की आखिरी दलील क्या थी?

(क) पतोहू को घर से निकालना

(ख) पतोहू से घृणा करना

(ग) पतोहू का पुनर्विवाह करवाना

(घ) पतोहू को शिक्षा दिलवाना

उत्तर : (ग)पतोहू का पुनर्विवाह करवाना

2. भगत जी की बहू उन्हें छोड़कर क्यों नहीं जाना चाहती थी?

(क) ससुर की चिंता के कारण

(ख) पति से प्यार होने के कारण

(ग) संपत्ति के लोभ में

(घ) सामाजिक मर्यादा के कारण

उत्तर- (क) ससुर की चिंता के कारण

3. बालगोबिन भगत की आयु कितनी थी?

(क) 60 वर्ष

(ख) 100 वर्ष से अधिक

(ग) 60 वर्ष से अधिक

(घ) 70 वर्ष

उत्तर: (ग) 60 वर्ष से अधिक

4. कातिक मास आने पर बालगोबिन भगत क्या करने लगते थे?

(क) भजन करने लगते

(ख) सत्संग करने लगते

(ग) प्रभातफेरी शुरू करने लगते

(घ) गंगा स्नान करने लगते

उत्तर: (ग) प्रभातफेरी शुरू करने लगते

5. बालगोबिन भगत अपनी फसल को पहले कहाँ ले जाते थे?

(क) मंदिर में

(ख) कबीरपंथी मठ में

(ग) गुरुद्वारे में

(घ) मस्जिद में

उत्तर: (ख) कबीरपंथी मठ में

6. बालगोबिन भगत के गाँव के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या था?

(क) पठन-पाठन

(ख) व्यापार

(ग) दस्तकारी

(घ) खेतीबाड़ी

उत्तर: (घ) खेतीबाड़ी

7. लेखक ने 'रोपनी' किसे कहा है?

(क) रोपण को

(ख) धान की खेती को

(ग) धान की कटाई को

(घ) धान की रोपाई को

उत्तर: (घ) धान की रोपाई को

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न</u>

1. बालगोबिन भगत की पतोहू किन कारणों से अपने भाई के साथ जाने को तैयार नहीं हो रही थी?

उत्तर: बालगोबिन भगत की पतोहू के मन में अपने ससुर के प्रति बहुत श्रद्धा, आत्मीयता और सम्मान था। भगत के पुत्र की मृत्यु के पश्चात् वे अकेले हो गए थे साथ ही वे अत्यंत वृद्ध भी हो गए थे। अतः उनकी बुढ़ापे में देखभाल हेतु तथा सेवा करने हेतु अपने भाई के साथ जाने को तैयार नहीं हो रही थी। पति के मृत्यु के पश्चात् इसे अपना सर्वोच्च कर्तव्य समझती थी।

2. 'बालगोबिन भगत की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई। कैसे?

उत्तर: बालगोबिन भगत की परमात्मा पर असीम आस्था थी। उन्होंने अपना पूरा जीवन ईश्वरीय भक्ति में बिताया था। वे अपनी अंतिम साँस तक ईश्वरीय भक्ति के पद गाते रहें। साथ ही वे अंत तक स्नान-ध्यान और व्रत-नियम की विशिष्ट क्रियाएँ करते रहें। अतः ईश्वरीय भक्ति का गुणगान करते हुए ही वे मृत्यु को वरन किए। इस प्रकार उनकी मृत्यु उन्हीं के अनुरूप हुई।

3. भगत जी ने पुत्र की मृत्यु होने पर क्या किया?

उत्तर: भगत जी ने मरे हुए पुत्र को आँगन में चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढंक रखा था तथा उसपर कुछ फूल बिखरा पड़ा था। उसी के सिरहाने बालगोबिन जी ज़मीन पर आसन जमाये तल्लीन होकर भक्ति-गीत गाए जा रहे थे।

4. बालगोबिन भगत किस संत के अनुयायी थे? उन पर उनका कितना प्रभाव था?

उत्तर: बालगोबिन भगत संत कबीरदास के अनुयायी थे। कबीरदास पर उनकी अगाध श्रद्धा थी। वे कबीर को अपना साहब मानते थे और उन्हीं की दी गई शिक्षाओं का पालन करते थे। उनका सब कुछ साहब का था। खेत में जो फ़सल होती थी, वे कबीर के दरबार में ले जाते और वहाँ प्रसाद स्वरुप जो कुछ मिलता, उसी में अपना गुजारा चलाते थे। कबीर की ही भाँति वे परमात्मा में विश्वास रखते थे। वास्तव में कबीर के विचारों पर उनकी अगाध श्रद्धा थी।

5. लेखक बालगोबिन भगत को गृहस्थ साधु क्यों मानता है?

उत्तर: बालगोबिन भगत घर-परिवार वाले आदमी थे। उनके परिवार में उनका बेटा और पतोहू थे। उनके पास खेतीबारी और साफ़ सुथरा मकान था। इसके बाद भी बालगोबिन भगत साधुओं की तरह रहते और साधु की सारी परिभाषाओं पर खरा उतरते थे, इसलिए लेखक ने भगत को गृहस्थ साधु माना है।

6. बालगोबिन भगत अपने सुस्त और बोदे से बेटे के साथ कैसा व्यवहार करते थे और क्यों?

उत्तर: बालगोबिन भगत अपने सुस्त और बोदे बेटे के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करते थे तथा उनका अधिक देखभाल रखते थे। उनका यह मानना था कि ऐसे लोग निगरानी व देखभाल के ज़्यादा हकदार होते हैं। उनके बेटे के पास कम अक्ल थी और बालगोबिन भगत सदैव उसे अपने संरक्षण में रखते थे।

7. 'बालगोबिन भगत' पाठ में किन सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया गया है?

उत्तर: बालगोबिन भगत' पाठ में बालगोबिन भगत द्वारा अपनी पुत्रवधु के हाथों अपने बेटे को मुखाग्नि दिलाई जबकि उस समय के समाज में स्त्रियों को अंतिम संस्कार करना तो दूर स्त्रियों को श्मसान में जाने की भी अनुमति नहीं दी जाती थी। भगत ने उसके पश्चात अपनी पुत्रवधु का पुनर्विवाह करने का निश्चय किया जबकि समाज में विधवा स्त्री के पुनर्विवाह का प्रचलन नहीं है।

लखनवी अंदाज़

- यशपाल

लेखक परिचय: इनका जन्म सन **1903** में **पंजाब** के **फिरोजपुर छावनी** में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा **काँगड़ा** में ग्रहण करने के बाद **लाहौर** के **नेशनल कॉलेज से बी.ए.** किया। वहाँ इनका परिचय भगत सिंह और सुखदेव से हुआ। स्वाधीनता संग्राम की क्रांतिकारी धारा से जुड़ाव के कारण ये जेल भी गए। इनकी मृत्यु सन **1976** में हुई।

<u>प्रमुख कार्य</u>: कहानी संग्रह - **ज्ञानदान, तर्क का तूफ़ान, पिंजरे की उड़ान, वा दुलिया, फूलों का कुर्ता।**

उपन्यास - झूठा सच, अमिता, दिव्या, पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, मेरी तेरी उसकी बात

पाठ का सार

लेखक को पास में ही कहीं जाना था। लेखक ने यह सोचकर सेकंड क्लास का टिकट लिया की उसमे भीड़ कम होती है, वे आराम से खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखते हुए किसी नए कहानी के बारे में सोच सकेंगे। पैसेंजर ट्रेन खुलने को थी। लेखक दौड़कर एक डिब्बे में चढ़े परन्तु अनुमान के विपरीत उन्हें डिब्बा खाली नही मिला। डिब्बे में पहले से ही लखनऊ की नबाबी नस्ल के एक सज्जन पालथी मारे बैठे थे, उनके सामने दो ताजे चिकने खीरे तौलिये पर रखे थे। लेखक का अचानक चढ़

जाना उस सज्जन को अच्छा नही लगा। उन्होंने लेखक से मिलने में कोई दिलचस्पी नही दिखाई। लेखक को लगा शायद नबाब ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए लिया है ताकि वे अकेले यात्रा कर सकें परन्तु अब उन्हें ये बिल्कुल अच्छा नही लग रहा था की कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे। उन्होंने शायद खीरा भी अकेले सफर में वक़्त काटने के लिए ख़रीदा होगा परन्तु अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खायें। नबाब साहब खिड़की से बाहर देख रहे थे परन्तु लगातार कनखियों से लेखक की ओर देख रहे थे।

अचानक ही नबाब साहब ने लेखक को सम्बोधित करते हुए खीरे का लुत्फ़ उठाने को कहा परन्तु लेखक ने शुक्रिया करते हुए मना कर दिया। नबाब ने बहुत ढंग से खीरे को धोकर छिले, काटे और उसमे जीरा, नमक-मिर्च बुरककर तौलिये पर सजाते हुए पुनः लेखक से खाने को कहा किन्तु वे एक बार मना कर चुके थे इसलिए आत्मसम्मान बनाये रखने के लिए दूसरी बार पेट ख़राब होने का बहाना बनाया। लेखक ने मन ही मन सोचा कि मियाँ रईस बनते हैं लेकिन लोगों की नजर से बच सकने के ख्याल में अपनी असलियत पर उतर आयें हैं। नबाब साहब खीरे की एक फाँक को उठाकर होठों तक ले गए, उसको सूँघा। खीरे की स्वाद का आनंद में उनकी पलकें मूँद गयीं। मुंह में आये पानी का घूँट गले से उतर गया, तब नबाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। इसी प्रकार एक-एक करके फाँक को उठाकर सूँघते और फेंकते गए। सारे फाँको को फेकने के बाद उन्होंने तौलिये से हाथ और होठों को पोछा। फिर गर्व से लेखक की ओर देखा और इस नायब इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक ने सोचा की खीरा इस्तेमाल करने से क्या पेट भर सकता है तभी नबाब साहब ने डकार ले ली और बोले खीरा होता है लजीज पर पेट पर बोझ डाल देता है। यह सुनकर लेखक ने सोचा की जब खीरे के गंध से पेट भर जाने की डकार आ जाती है तो बिना विचार, घटना और पात्रों के इच्छा मात्र से नई कहानी बन सकती है।

बहुविकल्पी प्रश्न

1) लेखक के अनुमान से नवाब साहब ने सेकण्ड क्लास का टिकट क्यों खरीदा होगा?

क) बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में

ख) लेखक के साथ यात्रा कर सकने के अनुमान से।

ग) किफायत के लिए

घ) क और ग दोनों

2) खीरे के इस्तेमाल करने का एब्स्ट्रैक्ट तरीका क्या था?

(क) खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होना

ख) खीरे की फाँकें बनाना

ग) खीरे धोकर इस्तेमाल करना

घ) खीरे धोकर तौलिए से पोंछना

3) नवाब क्यों नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखें?

क) वे अकेले सफर करना चाहते थे

ख) उनकी नवाबीपन पर आंच आ सकती थी

ग) वे खीरे का शौक फरमानेवाले थे

(घ) उपरोक्त सभी

4) नवाब के मुँह में पानी क्यों भर आया?

क) नमक मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की और देखने से

ख) खीरा का शौक करने की इच्छा से

ग) वासना से उत्तेजित इच्छा से

घ) तीनों कारणों से

5) 'सफ़ेदपोश' का अर्थ है-

क) सफ़ेद कपड़े ख) सफ़ेद कपड़े पहनने वाला ग) साफ़-सुथरा घ) भद्रपुरुष

उत्तर - 1) घ) क और ग दोनों 2) (क) खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होना
3) (घ) उपरोक्त सभी 4) घ) तीनों कारणों से 5) घ) भद्रपुरुष

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

1) बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर - अपने इस कथन के द्वारा लेखक ने नई कहानी के दौर के लेखकों पर व्यंग्य किया है। किसी भी कहानी की रचना उसके आवश्यक तत्वों - कथावस्तु, घटना, पात्र आदि के बिना संभव नहीं होती। घटना तथा कथावस्तु कहानी को आगे बढ़ाते हैं, पात्रों द्वारा संवाद कहे जाते हैं। ये कहानी के लिए आवश्यक तत्व हैं। अतः बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी नहीं लिखी जा सकती।

2) लेखक का डिब्बे में घुसने पर सज्जन की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर- लेखक का डिब्बे में घुसने पर सज्जन की आँखों में एकांत चिंतन में विघ्न का असंतोष दिखाई दिया। शायद वे नयी कहानी की सूझ में थे या फिर खीरे जैसे अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में थे। उन्होंने लेखक से संगति करने का कोई उत्साह भी नहीं दिखाया।

3) नवाब साहब की असुविधा और संकोच के संबंध में लेखक ने क्या-क्या अनुमान लगाया?

उत्तर- नवाब साहब की असुविधा और संकोच के संबंध में लेखक ने ये अनुमान लगाए कि उन्होंने अकेले यात्रा करने के विचार से सेकंड क्लास का अपेक्षाकृत सस्ता टिकट ले लिया होगा। यही नहीं अकेले सफर का वक्त काटने के लिए खीरे खरीदे, लेकिन किसी दूसरे सफ़ेदपोश के सामने उसे खाने में नवाब को लज्जा का अनुभव होने लगा।

4) लखनवी अंदाज़' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर- 'लखनवी अंदाज़' शीर्षक के मूल में व्यंग्य निहित है। इस कहानी में वर्णित स्थान लखनऊ के आसपास का प्रतीत होता है। इसके अलावा नवाब साहब की शान, दिखावा, रईसी का प्रदर्शन, नवाबी ठसक, नज़ाकत आदि सभी लखनऊ के उन नवाबों जैसी है, जिनकी नवाबी कबकी छिन चुकी है पर उनके कार्य व्यवहार में अब भी इसकी झलक मिलती है। पाठ को पूरी तरह अपने में समेटे हुए यह शीर्षक 'लखनवी अंदाज़' पूर्णतया सार्थक एवं उपयुक्त है।

5) 'लखनवी अंदाज' नामक व्यंग्य का क्या संदेश है?

उत्तर- 'लखनवी अंदाज' नामक व्यंग्य में लेखक कहना चाहता है कि जीवन में स्थूल और सूक्ष्म दोनों का महत्व है। केवल गंध और स्वाद के सहारे पेट नहीं भर सकता। जो लोग इस तरह पेट भरने और संतुष्ट होने का दिखावा करते हैं, वे ढोंगी हैं, अवास्तविक हैं। इस व्यंग्य का दूसरा संदेश यह है कि कहानी के लिए कोई-न-कोई घटना, पात्र और विचार अवश्य चाहिए। बिना घटना और पात्र के कहानी लिखना निरर्थक है।

- मन्नू भण्डारी

जीवन परिचय :- स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की सशक्त कहानीकार मन्नू भण्डारी का जन्म सन **1931** में मध्य प्रदेश राज्य के **मंदसौर** के **भानपुरा** गाँव में हुआ | उन्होंने राजस्थान के अजमेर शहर में स्नातक की शिक्षा प्राप्त की | बाद में वहीं से एम॰ ए॰ किया | दिल्ली के मिरांडा हाउस कालेज में अध्यापन कार्य किया | फिर स्वतन्त्र लेखन में सक्रिय रहीं | उन्हें लेखन कार्य के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया |

रचनाएँ – एक प्लेट सैलाब, मई हार गई, यही सच है, त्रिशंकु (कहानी संग्रह): **आपका बंटी, महाभोज (उपन्यास)**

उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए हिन्दी अकादमी के शिखर सम्मान सहित उन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जिनमें भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के पुरस्कार शामिल हैं|

पाठ का सार

प्रस्तुत आत्मकथा में लेखिका मन्नू भंडारी ने सिलसिलेवार आत्मकथा न लिखकर उन व्यक्तियों और घटनाओं का वर्णन किया है जिन्होंने उसके लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने किशोर जीवन से जुड़ी घटनाओं के साथ-साथ अपने पिताजी, कॉलेज की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल के बारे में लिखा है। यहाँ लेखिका ने पारिवारिक बंधनों में बंधी लड़की को अनेक पड़ावों से गुजरते हुए एक असाधारण क्रांतिकारी लड़की के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने सन् 1946-47 के स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया उसमें उनका उत्साह, ओज, संगठन क्षमता एवं विरोध प्रकट करने का भाग अद्भुत था।

लेखिका बताती है कि उनका जन्म मध्यप्रदेश के भानपुरा गांव में हुआ था और जैसे ही वह कुछ समझने-बुझने लगी तो अपने आपको राजस्थान के अजमेर शहर के ब्रह्मापुरी मोहल्ले के दो मंजिलें मकान में पाया। उस मकान के ऊपरी मंजिल पर पिताजी का साम्राज्य था। बड़े ही आजा बस्ती ढंग से फैली पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों के बीच वे या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर डिक्टेशन देते रहते थे। नीचे के हिस्से में अपने भाई-बहनों के साथ रहती थी।

उनकी माँ पढ़ी-लिखी नहीं थी। फिर भी घर की जिम्मेदारियों को बहुत ही अच्छी तरह निभाती थी। अजमेर शहर में आने से पूर्व लेखिका के पिता इंदौर के एक प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्ति थे। कांग्रेस के साथ-साथ समाज सुधार के कार्यों में लगे हुए थे। वे न केवल शिक्षा का उपदेश देते थे अपितु छात्रों को घर पर बुलाकर पढ़ाते भी थे। लेखिका के पिताजी का जीवन बहुत खुशहाल था। वह बड़े कोमल स्वभाव के व्यक्ति होने के साथ-साथ क्रोधी एवं अहमवादी भी थे।

पठित गढ़यांश के आधार पर वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. पर यह सब तो मैंने केवल सुना । देखा , तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे । एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे , जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बलबूते और हौसले से अंग्रेज़ी हिंदी शब्दकोश-(विषयवार) के अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरू किया जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था । इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी , पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक

स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया । सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम -से-कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं के भागीदार बनाएँ। नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ , हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थीं । अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया कि जब तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते-ही रहते।

(क) गुणों के भग्नावशेष कौन ढोता था?

(i) लेखिका स्वयं (ii) माताजी (iii) पिताजी (iv) सुशीला

(ख) लेखिका के पिताजी इंदौर से अजमेर क्यों आए?

(i) राजस्थानी संस्कृति के होने के कारण (ii) आर्थिक झटके के कारण

(iii) रईस थे हर भारतीय शहर में रहना चाहते थे (iv) लेखिका की गतिविधियों के कारण

(ग) लेखिका के पिताजी को यश और प्रतिष्ठा मिली-

(i) शब्दकोश रचना से (ii) लेखिका की गतिविधियों से (iii) पैसे के कारण (iv) उपरोक्त सभी

(घ) **निम्न में किसमें लेखिका के पिता ने बच्चों को भागीदार नहीं बनाया?**

(i) अपनी निजी जीवन में (ii) राजनीतिक क्षेत्र में (iii) ज्ञान में (iv) आर्थिक विवशता में

(ङ) लेखिका के पिता शक्की क्यों हो गए थे?

(i) आँख मूँदकर सब पर विश्वास करने के कारण (ii) सामाजिक गतिविधियों के कारण

(iii) अपनों के हाथों विश्वासघात के कारण (iv) राजनीतिक गतिविधियों के कारण

उत्तर :- (क) - iii , (ख) - ii , (ग) - i , (घ) - ii , (ङ)- iii

2. यह पितृ – गाथा मैं इसलिए नहीं गा रही कि मुझे उनका गौरव – गान करना है , बल्कि मैं तो यह देखना चाहती हूँ कि उनके व्यक्तित्व की कौन सी खूबी और खामियाँ मेरे व्यक्तित्व के ताने बाने में गूँथी हुई है या कि अनजाने –अनचाहे किए उनके व्यवहार ने मेरे भीतर किन ग्रंथियों को जन्म दे दिया | मैं काली हूँ | बचपन में दुबली और मरियल भी थी | गोरा रंग पिताजी की कमजोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी , खूब गोरी , स्वस्थ्य और हंसमुख बहन सुशीला से हर बात में तुलना और उसकी प्रशंसा ने ही , क्या मेरे भीतर ऐसे गहरे हीन –भाव की ग्रंथि पैदा कर दी कि नाम ,सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई ? आज भी परिचय करवाते समय जब कोई कुछ विशेषता लगाकर मेरे लेखनीय उपलब्धियों का जिक्र करने लगता है तो मैं संकोच से सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने –गड़ने को हो आती हूँ | शायद अचेतन की किसी पार्ट के नीचे दबी इसी हीन –भावना के चलते ही मैं अपनी किसी उपलब्धि पर भरोसा नहीं कर पाती ..... सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है |

(क) लेखिका के पिता का गौरव गान क्यों किया है ?

(i) स्वयं में उनका गुण परखने के लिए (ii) प्रसिद्ध व्यकितत्व होने के कारण

(iii) पिता की सामाजिक प्रतिष्ठा हेतु (iv) उपरोक्त सभी

(ख) लेखिका के पिताजी की कमजोरी थी-

(i) पैसा (ii) सामाजिक प्रतिष्ठा (iii) राजनीतिक पहुँच (iv) गोरा रंग

(ग) निम्न में लेखिका की विशेषता है-

(i) काला रंग (ii) दुबली (iii) मरियल (iv) उपरोक्त सभी

(घ) लेखिका की तुलना किससे होती थी?

(i) कौए से (ii) बड़ी बहन सुशीला से (iii) पिता से (iv) माता से

(ङ) लेखिका किस भावना से ओत-प्रोत थी?

(i) प्रेम भावना से (ii) गर्व भावना (iii) हीन भावना से (iv) उपरोक्त सभी

उत्तर :- (क) - i (ख) - iv (ग)- iv (घ) - ii (ङ)- iii

3. पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढी-लिखी माँ। धरती से कुछ ज़्यादा ही धैर्य और सहनशक्ति थी शायद उनमें। पिता की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित अनुचित फरमाइश और ज़िद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थीं वे। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं... केवल दिया ही दिया। हम भाई बहनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ, लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका । न उनका त्याग , न उनकी सहिष्णुता । खैर जो भी हो, अब पैतृक पुराण यहीं समाप्त कर अपने पर लौटती हूँ ।

(क) लेखिका की माँ थी-

(i) अनपढ़ (ii) धैर्यवान (iii) पति के प्रति समर्पित (iv) उपरोक्त सभी

(ख) लेखिका की माँ की धैर्य की तुलना किससे की गई है?

(i) पिता से (ii) धरती से। (iii) आकाश से (iv) पर्वत से

(ग) लेखिका की माँ का मुख्य कार्य था -

(i) पिता की ज्यादती सहना। (ii) बच्चों की फरमाइश पूरी करना। (iii) उपरोक्त दोनों।
(iv) बाज़ार घूमना

(घ) पैतृक पुराण से अभिप्राय है-

(i) पितरों की कहानी। (ii) पिता की कहानी (iii) परिवार की कहानी। (iv) पुरानी कहानी

(ङ) माँ को लेखिका ने अपना आदर्श नहीं बनाया क्योंकि-

(i) माँ ज्यादती सहती थीं। (ii) उनका विचार माँ से नहीं मिलता था (iii) माँ को असहाय समझती थी
(iv) उपरोक्त सभी

उत्तर- (क) iv, (ख) ii, (ग) iii, (घ) ii, (ङ) iv

लघूत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा ?

उत्तर:- लेखिका के जीवन पर दो लोगो का विशेष प्रभाव पडा था - पिता का प्रभाव - लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का अनेक रूपों में प्रभाव पड़ा | लेखिका के पिता गोरा रंग पसंद करते थे | लेखिका काली थी , जबकि उसकी बड़ी बहन सुशीला गोरी | इस कारण वे सुशीला को पसंद करते थे | उनके इस कार्य से लेखिका के भीतर हीन भाव की ग्रंथि पैदा हो गई | लेखिका के व्यक्तित्व पर उसके पिता का प्रभाव कहीं कुंठा , कहीं प्रतिक्रिया तो कहीं प्रतिछाया के रूप में पड़ा |

शीला अग्रवाल का प्रभाव :- लेखिका के व्यक्तित्व पर सीला अग्रवाल की साहित्यिक रुचि और उनकी संघर्ष शीलता का व्यापक प्रभाव पड़ा | इस कारण लेखिका के साहित्य का दायरा बढ़ गया | वह देश और समाज के प्रति अधिक जागरूक हो

गई तथा स्वतन्त्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाने लगी | इसलिए उसके जीवन में संघर्ष शील और जुझारूपन आ गया |

2. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है ?

उत्तर:- 'भटियारखाना' शब्द भटी से बना था यहाँ पर प्रतिभाशाली लोग नहीं जाते थे लेखिका के पिता का मानना है रसोई के काम में लग जाने के कारण लडकियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है वे पकाने खाने तक ही सीमित रह जाती थी ।

3. वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर:- :एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि लेखिका के पिताजी आकर मिले और बताए कि लेखिका की गतिविधियों के खिलाफ क्यों न अनुशासनात्मक कार्यवाही किया जाए पत्र पढकर पिताजी गुस्से से भन्नाते हुए कॉलेज गए थे इससे लेखिका बहुत भयभीत हो गई थी | गुस्से से भनभनाते हुए गए थे | लेखिका डर से मित्र के यहाँ बैठ गई | माँ से कह दिया जब गुब्बार थोड़ा निकाल जाए तो बुला लेना | लेकिन जब माँ ने आकार कहा कि वे खुश हैं और जो कुछ उन्होंने कहा उसे सुन न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न कानों पर |

4. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- 1. लेखिका के पिता लड़की की शादी जल्दी करने के पक्ष में है लेकिन लेखिका जीवन की आकांक्षाओं को पुरा करना चाहती है ।

2. पिताजी का लेखिका की माँ के साथ अच्छा व्यवहार नहीं है अपनी माँ के प्रति ऐसा व्यवहार लेखिका को उनके पिताजी की ज्यादती लगती है ।

3. यद्यपि उसके पिताजी भी देश के स्थितियो के प्रति जागरूक थे। वे शिक्षा के विरुद्ध नहीं थे परन्तु लेखिका खुले विचारों की महिला है इस बात पर लेखिका की उनसे वैचारिक टकराहट हो जाती है ।

5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

उत्तर:- 1942-47 का समय स्वत्रंता - आन्दोलन का समय है हर एक युवा पुरे जोश खरोश से इस आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे थे ऐसे में लेखिका मन्नू भडारी ने भी आन्दोलन का अभिन्न हिस्सा बनकर अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी । मन्नू भी उस समय युवा थी | उसकी रगों में भी लहू की जगह लावा बह रहा था | उसने हड़तालों और जुलूसों में पूरे उत्साह और जोश के साथ भाग लिया | अंग्रेजों के विरुद्ध नारेबाजी लगाए भाषणबाजी की, पिता से टकराव मोल लिया | उसका उत्साह,ओज, संगठन क्षमता और विरोध करने का ढंग देखते ही बंनता था |

6. आँख मूंदकर सबका विश्वास करने वाले क्लेखिका के पिता शक्की स्वभाव के कैसे बन गए ?

उत्तर - लेखिका के पिता बिना सोचे समझे प्रत्येक व्यकित पर विश्वास कर लेते थे | उनके साथ अपनों ने ही विश्वासघात किया | उन्हें आर्थिक रूप से इतनी चोट पहुँचाई कि उनका सबसे विश्वास उठ गया और वे अपने बच्चों पर भी शक करने लगे | इस प्रकार वे शक्की स्वभाव के बन गए |

नौबतखाने में इबादत

-यतीन्द्र मिश्र

लेखक का परिचय:

यतीन्द्र मिश्र का जन्म सन **1977** में अयोध्या, उत्तर प्रदेश में हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय में हिंदी में एम.ए. करने के बाद वे आजकल स्वतंत्र लेखन के साथ ही अर्द्धवार्षिक सहित' पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। सन **1999** से वे साहित्य और कलाओं के संवर्धन और अनुशीलन के लिए एक **सांस्कृतिक न्यास 'विमला देवी फाउंडेशन** का सञ्चालन कर रहे हैं। इन्होंने शास्त्रीय गायिका 'गिरिजा देवी' के जीवन तथा व्यक्तित्व पर **'गिरिजा'** नामक पुस्तक की रचना की। कवि द्विजदेव की ग्रंथावली का सहसंपादन किया । इन्हें **भारत भूषण अग्रवाल कविता सम्मान, हेमंत स्मृति कविता पुरस्कार, ऋतुराज सम्मान** आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

पाठ का सार

बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म बिहार में डुमराँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। इनके बड़े भाई का नाम शम्सुद्दीन था जो उम्र में उनसे तीन वर्ष बड़े थे। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम पैग़म्बरबख़्श खाँ तथा माँ मिट्ठन थीं। पाँच-छह के वर्ष होने पर वे डुमराँव छोड़कर अपने ननिहाल काशी आ गए। वहाँ उनके मामा सादिक हुसैन और अलीबक्श तथा नाना रहते थे जो जाने माने शहनाईवादक थे। वे लोग बाला जी के मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाकर अपनी दिनचर्या का आरम्भ करते थे। वे विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने का काम करते थे।

डुमराँव को वैसे तो इतिहास में कोई नहीं जानता है| बस अमीरूद्दीन का जन्म स्थल यही है और शहनाई बजाने के लिए जिस पोली रीड का प्रयोग होता है, वह डुमराँव में सों नदी के किनारे नरकट नाम की घास से बनी होती है| बस इन्हीं दोनों कारणों की वजह से डुमराँव का नाम जाना जाता है| ननिहाल में 14 साल की उम्र से ही बिस्मिल्लाह खाँ ने बाला जी के मंदिर में रियाज़ करना शुरू कर दिया। उन्होंने वहाँ जाने का ऐसा रास्ता चुना जहाँ उन्हें रसूलन और बतूलन बाई की गीत सुनाई देती जिससे उन्हें ख़ुशी मिलती। अपने साक्षात्कारों में भी इन्होनें स्वीकार किया कि बचपन में इनलोगों ने इनका संगीत के प्रति प्रेम पैदा करने में भूमिका निभायी। भले ही वैदिक इतिहास में शहनाई का जिक्र नहीं मिलता | इसे सुषिर वाद्यों की श्रेणी में रखा जाता है| सुषिर का अर्थ है फूँक मारकर बजाए जाने वाले यंत्र| अरब देश में ऐसे यंत्रों को 'नय'कहते हैं| शहनाई को 'शाहे-नय' की उपाधि दी गई है| यह दक्षिण भारत के मंगल वाद्य 'नागास्वरम' की तरह ही मंगलध्वनि का सम्पूरक है। बिस्मिल्लाह खाँ ने अस्सी वर्ष के हो जाने के वाबजूद हमेशा पाँचों वक्त वाली नमाज में शहनाई के सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में बिताया। मुहर्रम के दसों दिन बिस्मिल्लाह खाँ अपने पूरे खानदान के साथ ना तो शहनाई बजाते थे और ना ही किसी कार्यक्रम में भाग लेते। आठवीं तारीख को वे शहनाई बजाते और दालमंडी से फातमान की आठ किलोमीटर की दूरी तक भींगी आँखों से नोहा बजाकर निकलते हुए सबकी आँखों को भिंगो देते।

अपने जवानी के दिनों को याद करते हुए बिस्मिल्ला खाँ कहते हैं कि कुलसुम हलवाई जब कचौड़ी को कढ़ाही में डालती थी तो उन्हें उसमें भी संगीत का आरोह-अवरोह सुनाई देता था| सुलोचना उनकी पसंदीदा हीरोइन थी| उसकी कोई भी फिल्म बिना देखे नहीं छोड़ी| अपने नाना को शहनाई बजाते हुए सुनते थे और उनके जाने के बाद उनकी शहनाई को ढूँढने का प्रयास करते थे|

अक्सर उत्सवों में शहनाई को देखकर लोग कहते हैं- यह है शहनाई, शहनाई का मतलब बिस्मिल्ला खाँ| एक दिन एक शिष्या ने डराते-डरते कहा कि, "बाबा! आप भारत रत्न पा चुके हैं| यह फटी तहमद न पहना करें|" इस पर

बिस्मिल्ला खाँ बोले,"पगली, भारत रत्न हमको शहनाई पर मिला है लुंगी पर नहीं| बस मालिक से यह दुआ है कि फटा सुर न बख्शे | लुंगी का क्या है आज फटी है तो कल सी जाएगी|"

काशी में होने वाले परिवर्तन से बिस्मिला खाँ व्यथित हैं| पक्का महल से मलाई बर्फ़ बेचने वाले गायब हो चुके हैं| गायक अब संगतकारों को आदर की दृष्टि से नहीं देखते | घंटों रियाज को अब कोई नहीं पूछता| कजली, चैती का ज़माना अब नहीं रहा पर फिर भी काशी दो कौमों को एक साथ भाईचारे का संदेश देती है|

भारत रत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालय की मानद उपाधियों से अलंकृत, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पदमविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं बल्कि अजेय संगीत यात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे | नब्बे वर्ष की आयु में 21 अगस्त 2006 में शहनाई की दुनिया के नायक ने इस दुनिया से अंतिम विदा ली |

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. बिस्मिल्ला खाँ संगीत के रियाज के लिए कहाँ जाते थे?

(क) नाना के घर

(ख) काशी विश्वनाथ मन्दिर

(ग) बालाजी के मंदिर

(घ) घर के छत पर

2. रसलून और बतूलन के गाने पर किसे ख़ुशी मिलती है?

(क) बच्चों को

(ख) बिस्मिल्ला खाँ को

(ग) अमीरूद्दीन को

(घ) श्रोताओं को

3. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म स्थान कहाँ है?

(क) काशी

(ख) डुमराँव

(ग) पटना

(घ) इनमें से कोई नहीं

4. अमीरूद्दीन के शहनाई गुरु कौन थे?

(क) बिस्मिल्लाह खाँ

(ख) रसलूनबाई

(ग) अलीबख्श खाँ

(घ) पिता

5. बिस्मिल्ला खाँ खुदा से क्या माँगते हैं?

(क परिवार की सलामती

(ख) सच्चे सुर का वरदान

(ग) अपनी ख़ुशी

(घ) शहनाई ।

उत्तर: 1. (ग) बालाजी के मंदिर 2. (ख) बिस्मिल्ला खाँ को 3. (ख) डुमराँव 4. (ग) अलीबख्श खाँ 5. (ख) सच्चे सुर का वरदान

लघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के लिए सर्वोच्च सम्मान पाकर भी नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते - 'मेरे मालिक एक सुर बख्श दे।' इससे उनकी कौन-सी दो विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के लिए सर्वोच्च सम्मान पाकर भी नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते 'मेरे मालिक एक सुर बख्श दें।' इस पंक्ति से उनकी दो विशेषताएँ उभर कर आती है-

(i) बिस्मिल्ला खाँ नमाज पढ़ते हुए खुदा से सच्चे सुर की कामना करते थे।

(ii) वे अपनी शहनाई की प्रशंसा को भी ख़ुदा को समर्पित कर देते थे।

प्रश्न 2. बिस्मिल्ला खाँ की तुलना कस्तूरी मृग से क्यों की गई है?

उत्तर -अपने शहनाई वादन से पूरी दुनिया को मदहोश करने वाले बिस्मिल्ला खाँ अस्सी वर्ष से नमाज अदा करने के बाद सजदे में ईश्वर से एक सुर दान कर देने की प्रार्थना किया करते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि सातों सुरों को ठीक तरह से लगाना उन्होंने अब तक नहीं सीखा है। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने उनकी तुलना कस्तूरी मृग (हिरन) से इसलिए की है, क्योंकि वह भी अपनी नाभि में समाई हुई कस्तूरी की महक से व्याकुल होकर उसे पूरे वन में ढूँढता फिरता है।

प्रश्न 3. मुहर्रम के दिनों में बिस्मिल्ला खाँ क्या बजाते थे और कैसे? बिस्मिल्ला खां मुहर्रम के दिनों में पूरे दस दिनों तक शोक किस प्रकार मनाते थे?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ अपने मजहब के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। अपने परिवार और मजहब की परंपरा के अनुसार खाँ साहब पूरी श्रद्धा से मुहर्रम के शोक में शामिल होते थे। इस अवसर पर उनके खानदान का कोई भी व्यक्ति न तो शहनाई बजाता था और न ही संगीत के किसी कार्यक्रम में शामिल होता था। आठवीं तारीख के दिन खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते और दालमंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौहा बजाते जाते थे। उस दिन राग-रागनियों की अदायगी का निषेध होता था।

प्रश्न 4. बिस्मिल्ला खाँ जवानी के दिनों की कौन-सी बातें याद करते थे? दो का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- सुकून के क्षणों में बिस्मिल्ला खाँ अपनी जवानी के दिनों को याद करते थे। वे अपने रियाज को कम, उन दिनों के अपने जुनून को अधिक याद किया करते थे। उन्हें अपने अब्बाजान और उस्ताद कम याद आते थे, पर पक्का महाल की कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान व गीताबाली और सुलोचना जैसी अभिनेत्रियों ज्यादा याद आती थी।

प्रश्न 5. बिस्मिल्ला खाँ को फ़िल्मों के अतिरिक्त और किस चीज का शौक था ?

उत्तर-बिस्मिल्ला खाँ को फिल्मों के अतिरिक्त कुलसुम हलवाइन की देशी घी वाली कचौड़ियाँ बहुत पसंद थी। वहाँ की संगीतमय कचौड़ी इसलिए पसंद थी, क्योंकि कुलसुम जब कलकलाते भी में कचौड़ी डालती थी, तब छन्न से उठने वाली आवाज में उन्हें आरोह-अवरोह के सारे स्वर दिख जाते थे।

प्रश्न 6. सोदाहरण सिद्ध कीजिए कि बिस्मिल्ला खाँ रियाजी और स्वादी दोनों थे।

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ रियाज़ी और स्वादी, दोनों थे। वह रोज बालाजी के मंदिर में रियाज करने जाते थे और उसी का नतीजा था कि वे आगे चलकर विश्वविख्यात शहनाई वादक बने। खीं साहब, जब फ़िल्म देखने जाते

तो कुलसुम की देसी घी वाली दुकान की संगीतमय कचौड़ियाँ खाना नहीं भूलते थे। कचौड़ियों को तलने की आवाज़ में उन्हें सारे आरोह-अवरोह दिख जाते थे। उन्हें मलाई बरफ व जलेबी खाना भी खूब पसंद था।

प्रश्न 7. "मजहब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ के प्रति भी अपार थी।" "नौबतखाने में इबादत पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर -बिस्मिल्ला खाँ काशी की संस्कृति में रचे-बसे थे। अपने मजहब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथजी के प्रति भी उतनी ही थी। वे जब भी काशी से बाहर रहते थे, तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे। यही नहीं, चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता था और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती थी। वे कहा करते थे कि काशी स्थित गंगा मइया, बाबा विश्वनाथ और बालाजी के मंदिर को छोड़कर भला वे और कहाँ रह सकेंगे, जो उनकी काशी विश्वनाथ के प्रति अपार श्रद्धा को अभिव्यक्त करती है।

प्रश्न 8. बिस्मिल्ला खाँ के सादगीपूर्ण व्यवहार का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर - बिस्मिल्ला खाँ सादगी से रहने में विश्वास करते बार फटी हुई तहमद पहनने पर उनकी एक शिष्य टोकते हुए कहा था, "आपको भारतरत्न जैसा प्रतिष्ठित पुरस्कार भी मिल चुका है, यह फटी तहमद पहनना अच्छा नहीं लगता ।जब भी कोई आता है आप इस तहमद में सबसे मिलते हैं। बिस्मिल्ला खाँ मुस्कुराते हुए प्यार से बोले कि उन्हें यह भारतरत्न उनकी शहनाई वादन पर मिला है, न कि उनकी लुंगिया पर।

प्रश्न 9. बिस्मिल्ला खाँ भौतिक सुख के लिए धन-दौलत सकते थे, किंतु उन्होंने ऐसा न करके संगीत की साधना के साथ-साथ सरल ढंग से जीवन-यापन किया। कैसे?

उत्तर -विश्व प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ अपने बल पर बेशुमार धन-दौलत बटोर सकते थे, किंतु ऐसा न करके सरल ढंग से जीवन व्यतीत किया। भारतरत्न से सम्मानित होने के बावजूद उन्हें फटी पहनने में तनिक भी संकोच नहीं होता था। वे ईश्व धन-दौलत न माँगकर सुर दान करने की प्रार्थना इसी प्रकार, उन्होंने कभी भी काशी छोड़कर कहीं बसने का प्रयास नहीं किया। उनके लिए जीवन में और शहनाई से बढ़कर कोई जन्नत नहीं थी। दुनिया उनकी कला की प्रशंसा करती थी, तो वह सारी तारीफ ईश्वर को अर्पित कर देते थे। उनमें यह सरलता अंतिम तक बनी रही।

संस्कृति

- भदंत आनंद कौसल्यायन

लेखक का परिचय

इनका जन्म सन **1905** में **पंजाब** के **अम्बाला** जिले के **सोहाना** गाँव में हुआ। इनके बचपन का नाम **हरनाम दास** था। इन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलिज से बी.ए. किया। ये बौद्ध भिक्षु थे और इन्होंने देश-विदेश की काफी यात्राएँ की तथा बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। वे गांधीजी के साथ लम्बे अरसे तक वर्धा में रहे। सन **1988** में इनका निधन हो गया।

पाठ का सार

कहते हैं कि सभ्यता और संस्कृति दो ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग अधिक होता है परन्तु समझ में कम आता है। इनके साथ विशेषण लगा देने से इन्हें समझना और भी कठिन हो जाता है। कभी-कभी दोनों को एक समझ लिया जाता है, तो कभी अलग। आखिर ये दोनों एक हैं या अलग। लेखक समझाने का प्रयास करते हुए आग और सुई-धागे के आविष्कार का

उदाहरण देते हैं। वह उनके आविष्कर्ता की बात कहकर व्यक्ति विशेष की योग्यता, प्रवृत्ति और प्रेरणा को व्यक्ति विशेष की संस्कृति कहता है जिसके बल पर आविष्कार किया गया।

अपनी बुद्धि के आधार पर नए निश्चित तथ्य को खोजकर आने वाली पीढ़ी को सौंपने वाला संस्कृत होता है जबकि उसी तथ्य को आधार बनाकर आगे बढ़ने वाला सभ्यता का विकास करने वाला होता है। भौतिक विज्ञान के सभी विद्यार्थी जानते हैं कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया इसलिए वह संस्कृत कहलाया परन्तु वह और अनेक बातों को नहीं जान पाया। आज के विद्यार्थी उन बातों को भी जानते हैं लेकिन हम इन्हें अधिक सभ्य भले ही कहे परन्तु संस्कृत नहीं कह सकते।

मानव हित में काम ना करने वाली संस्कृति का नाम असंस्कृति है। इसे संस्कृति नहीं कहा जा सकता। यह निश्चित ही असभ्यता को जन्म देती है। आज मानव परस्पर कट मरने, आत्मा विनाश के साधन खोज रहा है, वह कल्याण की भावना से कोसों दूर है | मानव हित में निरंतर परिवर्तनशीलता का ही नाम संस्कृति है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. किसे लेखक संस्कृति का परिणाम कहते हैं?

क) सभ्यता ख) आदर्श ग) कालकूट घ) इनमें से कोई नहीं।

2. कौन रूस का भाग्य विधाता है?

क) स्टालिन ख) लेनिन ग) चर्चिल घ) इनमें से कोई नहीं

3. गौतम बुद्ध का गृह त्याग के पीछे क्या भावना रही?

क) मानवता का सुख ख) बौद्ध धर्म की स्थापना

ग) प्रतिष्ठा पाना घ) वन में रहना

4. संस्कृति निबंध में लेखक किसको बहुत बड़ा आविष्कर्ता कह रहे हैं?

क) न्यूटन

ख) जगदीश चरण बोस

ग) होमी जहांगीर बाबा

घ) जिसने सबसे पहले आग का आविष्कार किया।

5. मानव की वह योग्यता जो उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती -

क) असभ्यता ख) असंस्कृति ग) दोनों क और ख घ) अनैतिकता

उत्तर: 1. (क) सभ्यता 2. ख) लेनिन 3. क) मानवता का सुख 4. घ) जिसने सबसे पहले आग का आविष्कार किया। 5. ख) असंस्कृति

लघूत्तरीय प्रश्न

1.संस्कृति' पाठ के आधार पर लिखिए कि मानव संस्कृति के जन्मदाता कौन है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (CBSE 2014, 2012)

उत्तर-प्रस्तुत पाठ के आधार पर मानव संस्कृति के वास्तविक जन्मदाता भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा तथा सर्वस्व त्याग की माना है। आग और सुई-धागे के आविष्कार की प्रेरणा भौतिक है| चाँद तारों के रहस्यों को जानना

ज्ञानेप्सा तथा कल्याण की भावना के वशीभूत होकर लेनिन, कार्ल मार्क्स, सिद्धार्थ आदि के सदृश परहित के कार्य करना ही त्याग है।

2.पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि भौतिक प्रेरणा और ज्ञानेप्सा के अलावा अन्य तत्त्व भी मानव संस्कृति के पिता है।

उत्तर-भौतिक प्रेरणा और ज्ञानेप्सा के अलावा अन्य तत्व भी संस्कृति के माता-पिता है। यदि ऐसा न होता तो माता अपने रोगी बच्चे को सारी रात गोद में लिए बैठी न रहती। कार्ल मार्क्स स्वयं दुःखी रहकर मजदूरों को सुखी देखने का स्वप्न न देखता। रूस का भाग्यविधाता लेनिन अपनी डेस्क में रखे हुए डबल रोटी के सूखे टुकड़ो को स्वयं खाता, दूसरों को न खिलाता। आज से ढाई हजार पूर्व सिद्धार्थ तृष्णा के वशीभूत होकर लड़ती-कटती मानवता को सुखी करने के लिए अपना घर न त्यागते।

3.कार्ल मार्क्स ने क्या स्वप्न देखा था और उसका जीवन किस प्रकार बीता?

उत्तर-मार्क्स विश्व का महान चिंतक था। उसने संधर के कारे मजदूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखा था। इस स्वप्न को पूरा करने के लिए उसने अपना सारा जीवन दुःख में बिता दिया। इस प्रकार, कार्लमार्क्स में भौतिक प्रेरणा व नेप्स से पृथक मानव कल्याणार्थ सर्वस्व त्याग की भावना से जुड़े सांस्कृतिक तत्त्व विद्यमान थे।

4. लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार सिद्धार्थ ने अपना गृह त्याग किस अपेक्षा से किया था? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर-लेखक भंदत आनंद कौसल्यायन के अनुसार, अधिक पाने की लालसा में लड़ते-झगड़ते मनुष्यों को सुख देने की अपेक्षा से ही आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ (जो आगे चलकर गौतम बुद्ध कहलाए) ने गृह त्याग किया था। मानवता का उत्थान करना ही उनका परम लक्ष्य था।

5. 'संस्कृति' पाठ के लेखक ने किन उदाहरणों के आधार पर 'संस्कृति' और 'सभ्यता' के स्वरूप को स्पष्ट किया है? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर- 'संस्कृति' पाठ में सभ्यता को संस्कृति का परिणाम बताया गया है, पाठ में संस्कृति और सभ्यता के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए दिए गए तीन उदाहरण निम्नलिखित है -

(i) आग का आविष्कार-यह योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा संस्कृति है जिसके सहारे आग का आविष्कार हुआ है, और संस्कृति द्वारा की गई आविष्कृत वस्तु आग की सभ्यता है।

(ii) सुई-धागे का आविष्कार- वह योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा व्यक्ति विशेष की संस्कृति है जिसके बल पर सुई-धागे का आविष्कार किया गया और संस्कृति जन्य आविष्कृत वस्तु सुई-धागा सभ्यता का उदाहरण है।

(iii) सिद्धार्थ का गृहत्याग-सिद्धार्थ अर्थात् गौतम बुद्ध के द्वारा तृष्णा के वशीभूत लड़ती कटती मानवता को सुख पहुँचाने के लिए किए गए गृहत्याग की योग्यता अथवा प्रेरणा को संस्कृति तथा उनके द्वारा बताए गए मार्गों पर चलना सभ्यता है।

6. संस्कृति और सभ्यता क्या है? एक सभ्य तथा संस्कृत व्यक्ति में क्या अंतर है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर -मानव की जो योग्यता आग और सुई-धागे का आविष्कार, तारों की जानकारी तथा किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है, वह संस्कृति है। जबकि हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके, हमारे यातायात के साधन, हमारे लड़ने-झगड़ने के तरीके, यह सब हमारी सभ्यता है। अपनी बुद्धि अथवा विवेक से किसी नई चीज को गढ़ने अथवा नए तथ्य का दर्शन करने वाला व्यक्ति संस्कृत कहलाता है और अपने पूर्वजों से उन वस्तुओं तथा तथ्यों को अनायास ही प्राप्त करने वाला व्यक्ति सभ्य कहलाता है।

7. लेखक ने आग और सुई-धागों के आविष्कारों से क्या स्पष्ट किया है? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर -संस्कृति' पाठ के लेखक ने 'आग' और 'सुई-धागे' के आविष्कारों के माध्यम से सभ्यता और संस्कृति की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। लेखक के अनुसार आग अथवा सुई-धागे का आविष्कार करने वाली योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा संबद्ध व्यक्ति विशेष की संस्कृति है, जबकि उसके द्वारा आविष्कृत वस्तु आग और सुई-धागा सभ्यता है। इस प्रकार लेखक ने सभ्यता को संस्कृति का परिणाम माना है।

पद्य खंड

सूरदास के पद

- **सूरदास**

कवि परिचय : सूरदास का जन्म सन् 1478 में माना जाता है | विद्वानों में जन्म स्थान के विषय में मतभेद है | कुछ विद्वान **रुनकता** या **रेणुका** क्षेत्र मानते हैं जबकि कुछ विद्वान दिल्ली के पास **सीही** मानते हैं | सूरदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे| अष्टछाप (आठ कवियों का समूह) के कवियों में सूरदास का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है| वे मंथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट पर रहते हुए श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे | सन् 1583 में **पारसौली** में उनका निधन हुआ |

रचनाएँ : सूर की प्रामाणिक रचनाएँ तीन हैं – **सूरसागर**, **साहित्य लहरी** और **सूर सारावली** | इन तीनों में **सूरसागर** सबसे ज्यादा लोकप्रिय हुआ |

काव्यगत विशेषताएँ : खेती और पशुपालन वाले भारतीय समाज का दैनिक अंतरंग चित्र और मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों का चित्रण सूर की कविता में मिलता है | सूर **वात्सल्य** और **श्रृंगार** के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं |

भाषा शैली: सूर की भाषा ब्रज है| उनके पदों में अद्भुत मिठास, मधुरता और कोमलता है| सूर का सारा साहित्य गेय है | उनकी रचनाओं में संगीत और साहित्य का अद्भुत मेल हुआ है |

पाठ का सार

सूर के पदों में श्रीकृष्ण के प्रति गहरा अनुराग प्रकट हुआ है| यहाँ **सूरसागर** के **भ्रमरगीत** से चार पद लिए गए हैं | कृष्ण ने मथुरा जाने के बाद स्वयं न लौटकर उद्धव के माध्यम से गोपियों के पास संदेश भेजा था | उद्धव ने विरह वेदना में तड़पती गोपियों को निर्गुण ब्रह्म एवं योग का उपदेश देकर उनकी व्याकुलता को शांत करने का प्रयास किया | गोपियाँ ज्ञान मार्ग के बजाय प्रेम मार्ग को पसंद करती थीं | यही कारण था कि गोपियों को उद्धव का संदेश बिल्कुल नहीं भाया | जब गोपियों और उद्धव में तर्क-वितर्क हो रहा था उसी समय वहाँ एक भौंरा आ पहुँचा और यहीं से भ्रमरगीत का प्रारंभ होता है| गोपियाँ भ्रमर के बहाने कृष्ण के मित्र उद्धव को प्रेम-भरा उलाहना देती हैं| कभी-कभी वे व्यंग्य करने लगती हैं|

पहले पद में गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि तुम बड़े ही सौभाग्यशाली हो जो प्रेम-वेम के चक्कर में नहीं पड़े हो | तुमने कभी कृष्ण के प्रेम का स्वाद नहीं चखा है | अत: तुम विरह वेदना को महसूस ही नहीं कर पाते हो | इसलिए गोपियाँ उद्धव से कहती हैं- हे उद्धव! तुम तो बड़े भाग्यवान हो| तुम हमेशा प्रेम रूपी बंधन से दूर रहे हो| तुमने कभी कृष्ण से प्रेम किया ही नहीं| तुम्हारा मन कभी कृष्ण के प्रेम में डूबा ही नहीं है| अत: गोपियाँ उद्धव की तुलना कमल के पत्तों से करती हुई कहती हैं कि जिस प्रकार कमल के पत्ते पानी में तो रहते हैं पर पानी से अछूते हैं| फिर गोपियाँ कहती हैं कि तुम उस घड़े के समान

हो जिसमें तेल लगी हो उस घड़े पर पानी का एक बूँद नहीं लगता | दोनों तुलनाओं का आशय यह है कि उद्धव श्रीकृष्ण के निकट तो हैं पर उसके प्रेम से अछूते हैं| आगे गोपियाँ फिर कहती हैं कि तुमने कभी प्रेम रूपी नदी में पाँव रखा ही नहीं अर्थात तुमने श्रीकृष्ण या किसी से प्रेम किया ही नहीं और न तुम्हारी दृष्टि कृष्ण के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध हुई | यह तो हमीं भोली अबला गोपियाँ हैं जो कृष्ण-प्रेम में इस प्रकार लिपट गई हैं जैसे गुड़ के साथ चींटियाँ लिपट जाती हैं |

दूसरे पद में गोपियाँ श्रीकृष्ण को निष्ठुर कहती हुई उद्धव से कहती हैं कि हमारे मन की प्रेम-भावना मन में ही रह गई है| हमें कृष्ण से प्रेम नहीं मिला, न ही उसके अभाव में हम अपनी भावना व्यक्त कर सकीं | गोपियाँ कहती हैं कि अब तुम ही बताओ, हम अपनी व्यथा किसे जाकर कहें? प्रेम की पीड़ा को कहा भी तो नहीं जा सकता है | हम अब तक श्रीकृष्ण के आने की आशा में तन-मन की व्यथा सह रही थीं| परन्तु अब तुम्हारे द्वारा दिए गए इस योग संदेश को सुन-सुनकर हमारी विरह वेदना और अधिक हो गई है| हम लोग जहाँ से हमारी रक्षा की आश लगाए बैठी थीं वहीं से अब योग-साधना की धारा बही चली आ रही है| गोपियाँ चाह रही थीं कि श्रीकृष्ण उनसे आकर मिलेंगे और उनकी प्रेम-भावना को संतुष्ट करेंगे, परन्तु उन्होंने तो उलटे उनके लिए योग-मार्ग का संदेश भेज दिया, जो उन्हें सदा-सदा के लिए कृष्ण से दूर करना चाहता है| सूरदास गोपियों के माध्यम से कहना चाहते हैं कि अब तो श्रीकृष्ण ने सारी लोक-मर्दायाएँ तज दी हैं | उन्होंने हमारी प्रेम निभाने की बजाय हमें धोखा दिया है| भला हम धैर्य कैसे धारण करें ?

तीसरे पद में गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि उद्धव! हमारे लिए हरि (श्रीकृष्ण) हारिल के पंजों की लकड़ी के समान हैं | जिस प्रकार हारिल पक्षी लकड़ी को किसी हाल में नहीं छोड़ती, उसी भाँति हम भी श्रीकृष्ण को दृढ़ता से पकड़े हुए हैं | हमने मन से, कर्म से, वचनों से कृष्ण को हृदय में दृढ़ता से बसाया हुआ है| हम जागते-सोते, रात-दिन, यहाँ तक कि सपने में भी कन्हैया-कन्हैया नाम की रट लगाए रहती हैं| हम जब तुम्हारे मुँह से योग-साधना की बातें सुनती हैं तो हमें तुम्हारा यह संदेश कड़वी ककड़ी के समान कड़वा और अरूचिकर लगता है| तुम तो हमारे लिए ऐसी बीमारी ले आए हो, जो हमने न तो कभी देखी, न सुनी और न कभी इसका व्यवहार करके देखा| गोपियाँ कहने लगीं-उद्धव! तुम यह योग साधना का संदेश उन लोगों को दो जिनका हृदय और मन अस्थिर है अर्थात जिनका मन भटकता रहता है | हम तो पूर्णरूप से श्रीकृष्ण की दीवानी हैं| हम यह योग-सन्देश लेकर क्या करेंगी?

चौथे पद में गोपियाँ उद्धव से कहती हैं- उद्धव! लगता है, श्रीकृष्ण राजनीति पढ़ आए हैं| अरे भँवरे उद्धव! हम तो तुम्हारी बात कहते-सुनते ही समझ गई कि दाल में कुछ काला है| सब समाचार जान गई हैं| एक तो आप पहले-से ही चतुर और चालाक थे | अब तुम अपने गुरू कृष्ण से राजनीति भी पढ़ ली है | हम श्रीकृष्ण की बुद्धि का बड़प्पन भी जान गए हैं| उन्होंने हमारे के लिए योग संदेश भेजा है | उद्धव जी पहले बड़े लोगों की यह रीति होती थी कि वे औरों की भलाई करते फिरते थे| परन्तु अब न हमें तुम पर विश्वास है, न कृष्ण पर| अब तो केवल हम लोगों की श्रीकृष्ण से प्रार्थना है कि वे हमारे पवित्र मन को वापस लौटा दें जिसे उन्होंने यहाँ से जाते समय चुरा लिया था| परन्तु हमें यह समझ में नहीं आता कि जो कृष्ण औरों को अन्याय से बचाते रहे हैं, वे स्वयं हम पर अन्याय क्यों कर रहे हैं? वे हमें अपना प्रेम न देकर योग-संदेश क्यों भेज रहे हैं? सूर के शब्दों में गोपियाँ कहती हैं- उद्धव! राजधर्म तो यही कहता है कि प्रजा को सताया न जाए| अत: कृष्ण को चाहिए कि वे अपना योग-सन्देश वापस लें और अपने दर्शन दें |

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **गोपियों को 'कड़वी ककड़ी' के समान क्या प्रतीत हो रहा था?**

   क) कृष्ण से वियोग ख) कृष्ण की राजनीति

   ग) उद्धव की बातें घ) योग का संदेश

2. **'हारिल की लकड़ी' किसे कहा गया है?**

   क) कृष्ण को ख) उद्धव को

ग) कमल के पत्ते को ग़) प्रजा को

3. 'तिनहिं लें सौंपों' पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?

क) स्थिर मन वालों की ओर ख) चंचल मन वालों की ओर

ग) ईश्वर भक्तों की ओर घ) गोपियों की ओर

4. 'गुर चाँटी ज्यौं पागी' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार क्या है?

क) अनुप्रास ख) उपमा ग) उत्प्रेक्षा घ) रूपक

5. अपने तन-मन की व्यथा को गोपियाँ किस आशा में सहन कर रही थीं?

क) कृष्ण के आने की आशा में

ख) उद्धव के जाने की आशा में

ग) बलराम के आने की आशा में

घ) सूरदास के आने की आशा में

उत्तर : 1. घ) योग का संदेश

2. क) कृष्ण को

3. ख) चंचल मन वालों की ओर

4. घ) रूपक

5. क) कृष्ण के आने की आशा में

लघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है? *(CBSE 2021)*

उत्तर: गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में वक्रोक्ति है| यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि गोपियाँ उनकी प्रशंसा कर रही हैं| किन्तु वास्तव में वे उनकी व्यंग्य कर रही हैं कि तुम बड़े अभागे हो कि प्रेम का अनुभव नहीं कर सके| न किसी के हो सके, न किसी को अपना बना सके| तुमने प्रेम की अनुभूति की ही नहीं | यह तुम्हारा दुर्भाग्य है|

प्रश्न 2. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं? *(CBSE 2019)*

उत्तर: गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं-

1. उन्होंने कहा कि उनकी प्रेम-भावना उनके मन में ही रह गई है| वे न तो कृष्ण से अपनी बात कह पाती हैं, न अन्य किसी से |
2. वे श्रीकृष्ण के आने के इंतज़ार में जी रही थीं, किन्तु श्रीकृष्ण ने स्वयं न आकर योग-संदेश भिजवा दिया | इससे उनकी विरह-वेदना और अधिक बढ़ गई है|
3. वे श्रीकृष्ण से रक्षा की गुहार लगाना चाह रही थीं, वहाँ से प्रेम का संदेश चाह रही थीं| परन्तु वहीं से योग-संदेश की धारा को आया देखकर उनका दिल टूट गया|
4. वे श्रीकृष्ण से अपेक्षा करती थीं कि वे उनके प्रेम की मर्यादा को रखेंगे| वे उनके प्रेम का बदला प्रेम से देंगे| किन्तु उन्होंने योग-संदेश भेजकर प्रेम की मर्यादा ही तोड़ डाली |

प्रश्न 3. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए? *(CBSE 2012, 2015, 2017)*

उत्तर: गोपियों के अनुसार राजा का धर्म प्रजा की रक्षा करना होना चाहिए | प्रजा को अन्याय से बचाए और उनपर अत्याचार न करे | राजा प्रजा को कभी न सताए |

प्रश्न 4. गोपियों के मन की व्यथा क्या है? वह मन में ही क्यों रह गई? *(CBSE 2020)*

उत्तर: गोपियों के मन की व्यथा है- श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम को प्रकट न कर पाना | कृष्ण उनसे दूर चले गए| वे तड़पती रह गई| वे यदि अपने वियोग की वेदना को किसी से कहना चाहें तो भी नहीं कह सकतीं | कोई उनके प्रेम को समझने वाला नहीं है|

प्रश्न 5. गोपियों को ऐसा क्यों लाता है कि कृष्ण की बुद्धि अब और अधिक बढ़ गई है? (CBSE2016)

उत्तर: श्रीकृष्ण जब मथुरा गए थे तो उन्होंने गोपियों को वचन दिया था कि वे उनसे मिलने अवश्य आएँगे| उन्हें तो आभास ही नहीं था कि कृष्ण प्रेम के स्थान पर योग संदेश भेजेंगे | गोपियाँ जानती थीं कि कृष्ण चतुर तो थे ही, पर अब उन्हें लगता है कि कृष्ण ने राजनीति के बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ लिए हैं और उन्हें पढ़कर उनकी बुद्धि और अधिक बढ़ गई है तभी तो उन्होंने ऐसा किया |

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

- तुलसीदास

कवि परिचय – तुलसीदास का जन्म **उत्तर प्रदेश** के **बाँदा** जिले के **राजापुर** गाँव में सन् 1532 में हुआ था| तुलसी का बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था| जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही माता-पिता से उनका बिछोह हो गया| माना जाता है कि गुरुकृपा से उन्हें रामभक्ति का मार्ग मिला | वे मानव मूल्यों के उपासक कवि थे| सन् 1623 में **काशी** में उनका निधन हो गया |

रचनाएँ – तुलसी की प्रमुख रचनाएँ हैं- **रामचरितमानस अवधी** में**, विनयपत्रिका** एवं **कवितावली ब्रजभाषा** में है| उनकी अन्य रचनाएँ हैं – **गीतावाली, दोहावली, कृष्णगीतावली** आदि| **रामचरितमानस** उत्तरी भारत की जनता के बीच बहुत लोकप्रिय है|

काव्यगत विशेषताएँ – तुलसी के काव्य का एक ही विषय है- मर्यादा पुरूषोत्तम राम की भक्ति| उनके राम शक्ति, शील और सौंदर्य के अवतार हैं| उन्होंने रामचरितमानस में राम के संपूर्ण जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है| उनके राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्शों के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से तुलसी ने नीति, स्नेह, शील, विनय, त्याग जैसे उदात्त आदर्शों को प्रतिष्ठित किया|

भाषा-शैली - अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर उनका समान अधिकार था| उनकी भाषा इतनी सरस है कि आज भी उनकी कविता पाठकों का कंठहार बनी हुई है| उन्होंने महाकाव्य भी लिखा और मुक्तक छंद भी लिखे| उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकार उन्हें विशेष रूप से प्रिय हैं|

पाठ का सार

यह अंश **रामचरितमानस** के **बाल काण्ड** से लिया गया है| सीता स्वयंवर में राम द्वारा शिव-धनुष भंग के बाद मुनि परशुराम को जब यह ख़बर मिली तो वे क्रोधित होकर वहाँ आते हैं| शिव-धनुष को खंडित देखकर वे आपे से बाहर हो जाते हैं| वे अपने गुरू शिव का धनुष भंग करने वाले को मार डालने की धमकी देते हैं| राम के मीठे वचन सुनकर उनका गुस्सा शांत हुआ| इस बीच राम, लक्ष्मण और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ उस प्रसंग को यहाँ प्रस्तुत किया गया है|

शिव-धनुष भंग होने के बाद क्रोधित परशुराम को देखकर श्रीराम उनसे विनयपूर्वक कहते हैं-"हे नाथ! शिवधनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई दास होगा| अब मेरे लिए क्या आज्ञा है?" यह सुनकर क्रोधी मुनि गुस्से में बोले- "सेवक वही होता है जो सेवा का काम करे| शत्रुता का काम करने वाला तो लड़ाई करने योग्य है|" वे धनुष तोड़ने वाले को सहस्रबाहु के समान ही अपना शत्रु बताते हुए कहते हैं, "वह जो भी है इस राज्य सभा में उपस्थित व्यक्तियों से अलग हो जाए अन्यथा यहाँ उपस्थित सभी राजा मेरे क्रोध की बलि चढ़ जाएँगे|" उनके वचनों को सुनकर लक्ष्मण मुसकाए और परशुराम जी का उपहास करते हुए बोले- "हे गोसाई! बचपन में हमने ऐसी-ऐसी बहुत-सी धनुष तोड़ डाले, परन्तु आपने कभी इतना क्रोध नहीं किया | इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों?" यह सुनकर परशुराम अति क्रोधित होकर लक्ष्मण से बोले- "तुम काल के वश में होकर ऐसा बोल रहे हो| जिस धनुष को सारा संसार जानता है उसे तुम साधारण धनुष बता रहे हो|"

इस पद में लक्ष्मण व्यंग्यात्मक रूप से कहते हैं –" हमारे लिए सभी धनुष एक समान हैं और यह तो पुराना है| इसके टूटने पर क्या लाभ और क्या हानि? श्रीराम ने तो इसे बस देखा ही था और उनके छूने मात्र से ही यह टूट गया तो इसमें उनका क्या दोष? आपका गुस्सा तो अकारण ही है|" तब अपने फरसे को दिखाकर परशुराम कहते हैं –" हे दुष्ट ! तुम मेरा स्वभाव नहीं जानते? बालक समझकर मैं तुम्हारा वध नहीं कर रहा और तुम मुझे साधारण मुनि समझ रहे हो| सारा संसार मुझे क्षत्रियकुल का द्रोही और बाल ब्रह्मचारी के रूप में जानता है| अनेक बार मैंने इस धरती से राजाओं के मान-मर्दन को धरती के ब्राह्मणों को दान में दे दी| सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाली मेरे इस फरसे को देखो और अकारण ही मरकर अपने माता-पिता के लिए शोक का कारण मत बनो क्योंकि मेरा यह फरसा तो माँ के गर्भ में पल रहे शिशु को भी मारने में सक्षम है|"

परशुराम के वचन को सुनकर लक्ष्मण हँसते हुए विनम्र वाणी में बोले- "स्वयं को महाबलशाली कहने वाले आप बार-बार मुझे फरसा दिखाकर वैसे ही डराना चाहते हैं जैसे फूँक मारकर पहाड़ को उड़ाना चाह रहे हों | हम काशीफल जैसे निर्बल नहीं है जो आपके तर्जनी दिखाने मात्र से डर जाएँगे|" फिर लक्ष्मण कहते हैं- "कुठार और धनुष-बाण धारण किए हुए आपके वेश को देखकर मैं अभिमानपूर्वक आपसे कुछ नहीं बोला| आपको ब्राह्मण समझकर ही आपके कठोर वचनों को सुनकर भी शांत रहा| हमारे कुल में गाय, ईश्वरभक्त, देवता और ब्राह्मणों पर वीरता नहीं दिखाई जाती क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और उनसे हारने से अपयश मिलता है| अत: यदि आप हमें मारेंगे तो भी हम आपके पैरों पर ही गिरेंगे | आपके तो वचन ही फरसा के समान कठोर हैं तो धनुष-बाण धारण करने का क्या औचित्य है| अगर इन्हें देखकर मैंने कुछ अनुचित कहा है तो हे परम धैर्यवान! मुनिश्रेष्ठ! मुझे क्षमा करें|" यह सुनकर भृगुकुल के मणि समान परशुराम ने क्रोधपूर्ण गंभीर वाणी में आगे कहा |

यह सुनकर परशुराम विश्वामित्र से कहते हैं- "हे कौशिक! यह मूर्ख और कुटिल बालक, काल के वश में होकर अपने ही कुल का नाश कर रहा है| यह सूर्यवंशी बालक चंद्रमा पर कलंक के समान निरा ही उद्दंड और निर्भीक है| क्षण भर में ही यह काल का ग्रास बनाने वाला है| यदि तुम इसे रोकना चाहते हो तो मेरे यश, बल और क्रोध के बारे में बताकर इसे रोक दो|" लक्ष्मण बोले- हे मुनि! आपकी करनी तो आपके ही मुख से मैं अनेक बार सुन चुका हूँ| इस पर भी यदि आपको संतोष नहीं है तो जो भी बचा हुआ है उसे बता दीजिए और असहनीय दुःख से मुक्त हो जाइए| आप गाली देते हुए अच्छे नहीं लगते| शूरवीर युद्ध में अपना पराक्रम दिखाते हैं न कि बातों में| इस प्रकार अपनी वीरता का बखान केवल कायर पुरूष ही करते हैं|"

लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं – "शायद काल पर आपका ही वश है इसलिए आप उसे बार-बार मेरे लिए बुला रहे हैं|" लक्ष्मण की बातों को सुनकर परशुराम फरसे को हाथ में उठाते हुए कहते हैं- "कठोर वचन बोलने वाला यह बालक अब निश्चित ही मरने योग्य है| अब तक तो मैंने इसे बालक समझकर छोड़ा था पर अब ऐसा नहीं होगा|" यह सुनकर विश्वामित्र बोले- "सज्जन पुरूष बालकों के गुण-दोष को नहीं देखते इसलिए इसे क्षमा कीजिए|" यह सुनकर परशुराम कहते

हैं- "मैं फरसा लिए हुए अत्यंत क्रोधी और करूणाहीन हूँ और मेरे सामने गुरू का अपमान करने वाला यह खड़ा हुआ है| अब तक तो आपके विनम्र स्वभाव के कारण मैंने इसे छोड़ा हुआ था, अन्यथा थोड़े ही परिश्रम से इसे मारकर मैं गुरू ऋण से मुक्त हो जाता|" विश्वामित्र मन ही मन हँसते हुए बोले, "यह मुनि तो सबको एक समान ही समझ रहे हैं| सावन के अंधे के समान उन्हें चारों ओर हरा-हरा ही दिखाई दे रहा है तभी लोहे से बनी हुई खांड (तलवार) को गन्ने से बनी हुई चीनी समझ रहे हैं |"

लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं –"हे मुनि! आपके विनम्र स्वभाव के बारे में तो सब जानते ही हैं | अपने माता-पिता के ऋण से तो आप मुक्त हो चुके हैं| अब गुरू ऋण के लिए आप इतने चिंतित हैं| ऐसा लग रहा है कि वह गुरू ऋण हमारे माथे पर ही है और अब तो इसका ब्याज भी बढ़ता जा रहा है इसलिए आप अपने हिसाब-किताब करने वाले को बुला लें ताकि मैं थैली खोलकर आपका सारा ऋण चुका दूँ|" लक्ष्मण के ऐसे कठोर वचन सुनकर परशुराम ने अपना फरसा उठाया तो सभी सभाजन हाहाकार करने लगे| लक्ष्मण बोले, "मैंने आपको ब्राह्मण समझकर छोड़ा हुआ है क्योंकि ऐसा लगता है कि आपको आज तक युद्ध में कोई वीर योद्धा नहीं मिला इसलिए आप घर में ही शेर बने हुए हैं|" लक्ष्मण के ऐसे वचन सुनकर सभासद "अनुचित है, अनुचित है" कहने लगे| तब श्रीराम ने आँख के संकेत से लक्ष्मण को रोका| परशुराम के क्रोध रूपी अग्नि में लक्ष्मण के वचनों ने आहुति का काम किया| उनकी क्रोधाग्नि को बढ़ते हुए देखकर श्रीराम ने जल के समान शीतल वचन कहे|

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'भृगुकुल केतु' किनके लिए प्रयुक्त हुआ है?

क) राम के लिए ख) परशुराम के लिए ग) लक्ष्मण के लिए घ) इनमें से कोई नहीं

2. लक्ष्मण के अनुसार शिव-धनुष तोड़ने में राम निर्दोष हैं क्योंकि –

क) इसके लिए राजा जनक ने कहा था ख) यह सीता स्वयंवर की शर्त थी|

ग) राम ने इस धनुष को छुआ भर था | घ) यह धनुष सड़ा-गला था |

3. 'परसु मोर अति घोर' का क्या अर्थ है?

क) परशुराम अत्यंत प्रचंड है ख) परशुराम का परसा बहुत प्रचंड है|

ग) परशुराम मोर की भाँति प्रचंड है घ) परसा देखकर मोर भाग जाते हैं|

4. 'इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं|' का अर्थ क्या है?

क) यहाँ कोई मूर्ख नहीं है| ख) यहाँ आप पर विश्वास करने वाला कोई नहीं

ग) यहाँ आपके सामने हम छुईमुई की तरह डरपोक नहीं हैं| घ) उपरोक्त सभी

5. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में कौन-सा गुण-सा गुण **है?**

क) माधुर्य गुण ख) प्रसाद गुण ग) ओज गुण घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: 1. ख) परशुराम के लिए 2. ग) राम ने इस धनुष को छुआ भर था | 3. ख) परशुराम का परसा बहुत प्रचंड है| 4. ग) यहाँ आपके सामने हम छुईमुई की तरह डरपोक नहीं हैं| 5. ग) ओज गुण

लघूत्तरीय प्रश्न

1. 'धनुष तोड़ने वाला कोई तुम्हारा दास होगा' – के आधार पर राम के स्वभाव पर टिप्पणी कीजिए | {CBSE 2017}

उत्तर: राम ने यह पंक्ति तब कही थी जब परशुराम अत्यंत क्रोधित होकर सभा में पधारे और पूछने लगे कि शिव जी का धनुष किसने तोड़ा| श्री राम जी का उत्तर उनके विनम्र स्वभाव को दर्शाता है| वे स्थिर, शांत, विनम्र स्वभाव के थे| उनमें सहजता और सरलता के गुण विद्यमान थे| उनके कथन जल के समान शीतल थे|

2. काव्यांश के आधार पर परशुराम के स्वभाव की दो विशेषताएँ लिखिए | {CBSE 2017}

उत्तर: परशुराम स्वभाव से अति क्रोधी थे और अपनी साहस एवं बल पर उन्हें बड़ा अभिमान था| जब उन्हें शिवजी के धनुष के टूटने की ख़बर मिली तो वे क्रोधित होकर सभा में उपस्थित हुए और धनुष तोड़ने वाले को सभा से अलग होने का आहवान करते हैं, नहीं तो सभी राजाओं को मारने की धमकी देते हैं| परशुराम अपने साहस और पराक्रम का बखान करते हुए कहते हैं कि उन्होंने अपनी भुजाओं के बल से अनेक बार पृथ्वी को राजाओं से रहित करके ब्राह्मणों को दान में दिया है और उनका फरसा तो गर्भ में पल रहे शिशुओं का भी नाश करने में सक्षम है|

3. **'साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है'- इस कथन पर अपनी विचार 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद'पाठ के आलोक में लिखिए| {CBSE 2016}**

उत्तर : 'साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है|' इसका उदाहरण हम 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ में देख सकते हैं| लक्ष्मण और परशुराम अत्यधिक बलशाली होने के बाद भी तर्कों के माध्यम से एक-दूसरे को अपमानित करते हैं| लक्ष्मण आग थे तो परशुराम घी| लेकिन श्रीराम पानी थे| इनके पास सब कुछ होते हुए भी खुद को परशुराम का दास बताते हैं| वे अपनी शीतल वाणी से सभी का दिल जीतते हैं| उनकी शीतल वाणी सभी के हृदय को छूती है क्योंकि वे विनम्र हैं|

4. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई? {CBSE 2008, 2015, 2016}

उत्तर : लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई –

1. सच्चा वीर रणभूमि में वीरता दिखाते हैं|
2. वे अपनी प्रशंसा खुद नहीं करते हैं |
3. वे रणभूमि में शत्रुओं का विनाश करते हैं |
4. वे किसी को धमकी नहीं देते परन्तु रणक्षेत्र में उचित जवाब देते हैं|

5. **परशुराम का क्रोध अकारण नहीं था, न ही निरर्थक था- क्यों और कैसे? स्पष्ट कीजिए | {CBSE 2020}**

उत्तर: परशुराम न अपने गुरु का धनुष टूटा हुआ देखा तो उन्हें गुरुभक्ति के कारण स्वाभाविक रूप से क्रोध आया| ऊपर से नन्हें-से बालक लक्ष्मण ने उन्हें जली-कटी सुना दी| अत: उनका क्रोध भड़कना स्वाभाविक था और सार्थक था| अपने गुरु का अपमान देखकर गुरुभक्त को क्रोध आना ही चाहिए| इसमें निरर्थक जैसी कोई बात नहीं|

6. 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर: इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अहंकार नहीं करना चाहिए| अहंकार मनुष्य की महानता तथा उपलब्धि को छोटा कर देता है | लोगों के तथा छोटों के मध्य उसका सम्मान समाप्त हो जाता है| यह पाठ हमें यह भी सिखाता है कि हमें क्रोध करने से बचना चाहिए| यह हमारे बुद्धि और विवेक को नाश कर देता है| क्रोधी व्यक्ति ऐसे कार्य करता है जिससे वह उपहास का पात्र बन जाता जाता है | हमें सदैव विनम्र, शांत एवं कोमल व्यवहार करना चाहिए|

आत्मकथ्य

- जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय:

बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि जयशंकर प्रसाद जी **छायावाद** के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इनका जन्म सन् **1889** में **वाराणसी** में हुआ। कक्षा 8वीं तक की इनकी शिक्षा **काशी** के एक प्रसिद्ध **क्वींस कॉलेज** में

हुई, परंतु अनुकूल स्थितियाँ न होने के कारण इन्हें छोड़ देना पड़ा। बाद में घर पर ही इन्होंने संस्कृत, हिंदी और फारसी भाषा का अध्ययन किया। **चित्राधार**, **कानन कुसुम**, **झरना**, **आँसू**, **लहर**, **कामायनी** आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। कामायनी महाकाव्य के लिए इन्हें **मंगलाप्रसाद पारितोषिक** पुरस्कार दिया गया। इनका साहित्य जीवन की कोमलता, माधुर्य, शक्ति और ओज का साहित्य माना जाता है। इतिहास और दर्शन के प्रति विशेष रुचि के कारण इसकी झलक भी इनके साहित्य में दिखलाई पड़ता है। इनका निधन सन् **1937** में हो गया।

कविता का सार

प्रसाद जी ने अपने मित्रों और प्रशंसकों द्वारा उनसे आत्मकथा लिखने के अनुरोध के उत्तर स्वरूप 'आत्मकथ्य' कविता की रचना की। असहमति के तर्क से पैदा हुई कविता है आत्मकथ्य। आत्मकथ्य कविता में प्रसाद जी ने आत्मकथा लेखन के विषय में अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त किया है। कभी संसार के असारता और निरसता पर विचार करता है। यह रचना प्रेमचंद द्वारा संपादित **हंस'** 'पत्रिका के आत्मकथा विशेषांक में प्रकाशित हुई थी। कवि के अनुसार, उनका जीवन एक व्यथा कथा है। आत्मकथा लिखने लायक बातें उनके पास नहीं है। उनके जीवन की गागर तो रीती अर्थात खाली है। ऐसे में वे आत्मकथा लिखकर स्वयं उपहास के पात्र बन जाएँगे, जो कि वे कतई नहीं चाहते। यह ठीक है कि कवि ने जीवन में कुछ सुख के क्षण अवश्य भोगे हैं, परंतु कवि अपने जीवन के उस मधुर क्षणों की कहानी किसी को नहीं सुनाना चाहते। उसके सुख के सपने कभी साकार नहीं हुए। सुख उसकी बाँहों में आते-आते दूर हो गया। आज वह उन मधुर स्मृतियों के सहारे ही अपने जीवन को बिता रहा है। मित्र लोग आत्मकथा लिखवाकर उसकी कटु स्मृतियों को क्यों उधेडना चाहते हैं? अपनी कथा सुनाने से तो यही अच्छा हैं कि वह औरों की कथाएँ मौन होकर सुनता रहे। उसकी भोली आत्मकथा सुनकर कोई क्या करेगा। वह नहीं चाहता है कि आत्मकथा लिखकर वह अपनी भूली हुई पीडाओं को जगाएँ।

शब्दार्थ -

मधुप - भौंरा , अनंत - असीम ,
मलिन - मैला , उपहास - मजाक ,
दुर्बलता - कमजोरी , गागर - घड़ा ,
रीती - नियम , विडंबना - चिढ़ाना ,
प्रवंचना - ठगी , धोखेबाजी. स्वप्न - सपना ,
आलिंगन - गले लगना , अरुण - लाल रंग ,
उषा - भोर , अनुरागिनि - प्यारी,
स्मृति - याद , पाथेय - संबल ,
पथिक - राही , पंथा - रास्ता ,
कंथा - अंतर्मन ।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि के आलिंगन में आते-आते कौन रह गया ?

(क) माँ ख) पुत्री ग) प्रेमिका घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (ग) प्रेमिका

2. 'रीती गागर' किसका प्रतीकार्थक है?

(क) खाली घड़ा ख) अभावग्रस्त जीवन का प्रतीक

ग) विचार-शून्य मन घ) अपशकुन का प्रतीक

उत्तर: (ख) अभावग्रस्त जीवन का प्रतीक

3. पत्तियों का मुरझाना किस ओर संकेत करता है ?

(क) सूखे की ओर ख) पेड़ के सूखने की ओर

ग) मन में उत्पन्न दुःख और आनंद के भावों के मिट जाने की ओर (घ) मृत्यु की ओर

उत्तर: (ग) मन में उत्पन्न दुःख और आनंद के भावों के मिट जाने की ओर

4. जयशंकर प्रसाद किस वाद के प्रवर्तक कवि थे?

(क) हालावाद ख) प्रयोगवाद ग) छायावाद घ) प्रगतिवाद

उत्तर: (ग) छायावाद

5. कवि की मौन व्यथा हृदय में क्या कर रही है?

(क) किसी भूचाल की प्रतीक्षा कर रही है ख) जागने का इंतजार कर रही है

(ग) थककर सो रही है (घ) हृदय को पीड़ित कर रही है

उत्तर: (ग) थककर सो रही है

6. 'कथा' शब्द का प्रयोग कवि ने किसके लिए किया है?

(क) अपने मित्रों के लिए (ख) अपने जीवन इतिहास के लिए

(ग) अपने अंतर्मन के लिए (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (ग) अपने अंतर्मन के लिए

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'आत्मकथ्य' कविता की प्रतीक योजना पर टिप्पणी कीजिए ।

उत्तर- 'आत्मकथ्य' कविता में कवि ने प्रतीकों का अत्यंत सुंदर प्रयोग करते हुए अपनी जीवन गाथा का वर्णन किया है। कवि मधुप अर्थात् भौंरे को स्वयं के प्रतीक रूप में, मुरझाकर गिरने वाली पत्तियों को जीवन में समाप्त होती खुशियों के रूप में प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त मधुर चाँदनी रातों को अपनी प्रेमिका के संग बिताए गए सुखद पलों के प्रतीक रूप में प्रयोग किया है।

2. 'आत्मकथ्य' कविता के आधार पर प्रसाद जी के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए ।

उत्तर- प्रस्तुत कविता में कवि जयशंकर प्रसाद के भावुक, निष्कपट, सीधे-सादे व सरल गुणों से परिपूर्ण व्यक्तित्व का पता चलता है, जो न तो अपने जीवन के निजी पलों को उजागर करके हँसी का पात्र बनना चाहता है और न ही दूसरों के छल - कपटपूर्ण आचरण को उजागर कर उन्हें निंदा का पात्र बनाना चाहता है।

3. प्रसाद जी ने अपनी कविता का शीर्षक 'आत्मकथा' न लिखकर 'आत्मकथ्य' क्यों रखा है?

उत्तर- प्रसाद जी ने अपनी कविता का शीर्षक 'आत्मकथा' न लिखकर 'आत्मकथ्य' रखा क्योंकि 'आत्मकथा' में जीवन के आरंभ से लेकर लिखने के समय तक का वर्णन और 'आत्मकथ्य' का अर्थ है- स्वयं के बारे में कहने योग्य। प्रस्तुत कविता में कवि ने अपने संपूर्ण जीवन वृत्तांत न बताकर, अपने जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं को बहुत संक्षेप में स्पष्ट किया है, जिन्हें वह

कहने योग्य समझता है, इसलिए इस कविता का शीर्षक आत्मकथा के बजाए 'आत्मकथ्य' रखा है।

4. 'आत्मकथ्य' कविता में प्रसाद जी ने जीवन के किस पक्ष का वर्णन किया है?

उत्तर- प्रसाद जी ने इसमें अपने जीवन के यथार्थ और अभाव पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति करते हुए यह बताया है कि उसके जीवन की कथा एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की साधारण कथा है। उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे महान और रोचक मानकर लोग उसका आनंद ले सकें एवं उससे प्रेरणा ले सकें।

5. कवि अपने दिल को खोलकर क्यों नहीं दिखाना चाहता?

उत्तर- कवि अपने दिल को खोलकर इसलिए नहीं दिखाना चाहते, क्योंकि उसके जीवन में सुख के पल कभी नहीं आए। उनका जीवन अभावों से ग्रस्त था, वे अपने जीवन की दुर्बलताओं को दिखाकर लोगों के समक्ष उपहास का कारण नहीं बनना चाहते थे।

6. 'आत्मकथ्य' कविता के आधार पर 'थकी सोई है मेरी मौन व्यथा' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति द्वारा कवि का आशय अपने जीवन के अनेक वेदनाओं से है। अपनी वेदनाओं एवं पीड़ाओं को सहते-सहते कवि थक चुके हैं। अब वह अपनी वेदनाओं को मौन ही रखना चाहते हैं। उसकी वेदना एवं व्यथा अब अतीत बन चुकी है और वह अपने अतीत को कुरेद कर और दुःखी होना नहीं चाहते।

7. 'आत्मकथ्य' कविता में कवि ने 'आत्मकथा' के लिए किस विशेषण का प्रयोग किया है और क्यों?

उत्तर- 'आत्मकथ्य' कविता में कवि प्रसाद ने आत्मकथा के लिए 'भोली' विशेषण का प्रयोग किया है, क्योंकि जयशंकर प्रसाद जी की आत्मकथा में अत्यंत सरल, सहज व साधारण कथा है तथा स्वयं प्रसाद जी भी स्वभाव से सरल, निष्कपट, ईमानदार हैं। उनके इन्हीं गुणों की अभिव्यक्ति उनकी आत्मकथा में हुई है।

8. कवि मन रूपी भौंरे से क्या कह रहा है?

उत्तर- कवि मन रूपी भौंरे से कहता है कि हे मेरे मन ! तू गुनगुना कर कौन-सी कहानी कहने को कह रहा है? मेरे जीवन को सुख पहुँचाने वाली खुशियों एक-एक करके मेरा साथ छोड़कर चली गई हैं। मेरा जीवन अनंत अभावों और व्यथाओं से भरा हुआ है। इसमें ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे सुनकर लोग प्रेरित हो सकें।

उत्साह

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

जीवन परिचय- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म **बंगाल** के **महिषादल** में सन **1899** में हुआ। वह मूलतः **गढ़ाकोला** (जिला उन्नाव) उत्तर प्रदेश के निवासी थे। निराला की औपचारिक शिक्षा नौवीं तक **महिषादल** में ही हुई। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का ज्ञान अर्जित किया। वह संगीत और दर्शनशास्त्र के भी गहरे अध्येता थे। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द की विचारधारा ने उन पर विशेष प्रभाव डाला । निराला का पारिवारिक जीवन दुखों और संघर्षो से भरा था । आत्मीय जनों के असामयिक निधन ने उन्हें भीतर तक तोड़ दिया। साहित्यिक मोर्चे पर भी उन्होंने अनवरत संघर्ष किया। सन **1961** में उनका देहांत हो गया।

प्रमुख काव्य रचनाएँ - **अनामिका**, **परिमल**, **गीतिका**, **कुकुरमुत्ता** और **नए पते** । उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध लेखन में भी उनकी ख्याति अविस्मरणीय है। निराला रत्नावली के आठ खंडों में उनका संपूर्ण साहित्य प्रकाशित है। काव्यगत विशेषताएँ निराला विस्तृत सरोकारों के कवि हैं। दार्शनिकता, विद्रोह, क्रांति, प्रेम की तरलता और प्रकृति का विराट तथा उदात्त चित्र उनकी रचनाओं में उपस्थित है। उनके विद्रोही स्वभाव ने कविता के भाव- जगत और शिल्प-जगत में नए प्रयोगों को संभव किया। छायावादी रचनाकारों में उन्होंने सबसे पहले मुक्त छंद का प्रयोग किया। शोषित, उपेक्षित,

पीड़ित और प्रताड़ित जन के प्रति उनकी कविता में जहाँ गहरी सहानुभूति का भाव मिलता है, वहीं शोषक वर्ग और सता के प्रति प्रचंड प्रतिकार का भाव भी।

प्रतिपाद्य - 'उत्साह' कविता एक आह्वान गीत है जो बादल को संबोधित है । बादल निराला का प्रिय विषय है। कविता में बादल एक तरफ पीड़ित -प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाला है, तो दूसरी तरफ वही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति चेतना को संभव करने वाला भी । कवि जीवन को व्यापक और समग्र दृष्टि से देखता है। कविता में ललित कल्पना और क्रांति चेतना दोनों हैं। सामाजिक क्रांति या बदलाव में साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । निराला इसे 'नवजीवन' और 'नूतन कविता के संदर्भों में देखते हैं।

सारांश- इस कविता में कवि बादल से घोर गर्जना के साथ भयंकर बारिश करने की कामना करता है। बादल बच्चों के काले घुंघराले बालों की तरह हैं। कवि बादल से धरती की प्यास बुझाने और सभी को सुखी बनाने का आग्रह करता है। कवि बादल में नवजीवन देने वाली बारिश और तहस-नहस कर देने वाला वज्रपात दोनों रूप देखता है। वह अनुरोध करता है कि बादल कठोर वज्रशक्ति को अपने भीतर छुपा कर सभी में नई स्फूर्ति और नया जीवन डालने के लिए मूसलाधार बारिश करे । आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादल को देखकर कवि को लगता है कि समस्त धरती भीषण गर्मी से परेशान है इसलिए अनजान दिशाओं से आकर काले बादल उसे शीतलता प्रदान करना चाहते हैं।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. 'उत्साह'कविता में किसका आह्वान किया गया है?

क. किसानों का ख. धरती का ग. हवा का घ. बादल का

2. कविता में विकल और उन्मन कौन था?

क. पक्षी ख. पेड़-पौधे ग. मानव घ. सभी

3. कवि बादलों को गरजने के लिए क्यों कहता है?

क. क्योंकि मानव गर्जन से उत्साहित होता है

ख. गरजना क्रांति का प्रतीक है।

ग. बादल नूतन कविता का प्रतीक है।

घ. उपरोक्त सभी

4. बादलों को किसकी उपमा दी गई है?

क. गरजते बादल की ख. विप्लव बादल की

ग. काले बादल की घ. काले घुँघराले बालों की

5. कवि बादलों के माध्यम से मानव को क्या प्रदान करना चाहता है?

क. जीवन की नई-नई प्रेरणाएँ ख. आध्यात्मिक सोच

ग. प्राकृतिक सुंदरता घ. करुणा एवं दया का भाव

उत्तर - 1.घ. बादल का 2.ग. मानव 3.घ. उपरोक्त सभी 4.घ. काले घुँघराले बालों की
5.क.जीवन की नई-नई प्रेरणाएँ

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. कवि बादलों से क्या अनुरोध करते हैं और क्यों? / कवि बादल का आह्वान क्यों करता है?

उत्तर - कवि बादलों से गर्जन करने का अनुरोध करते हैं। कवि बादलों को क्रांति का सूत्रधार मानता है। 'गरजना' विद्रोह का प्रतीक है। कवि बादलों से पौरुष दिखाने की कामना करता है। कवि ने बादल के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।

2. कवि ने बादलों को 'अनंत के घन' कहकर संबोधित किया है,क्यों?

उत्तर - कवि निम्नलिखित कारणों से बादलों को 'अनंत के घन ' कहता है -

i. बादलों का कोई अंत नहीं है। ये अंतहीन है।
ii. बादलों की सर्वव्यापकता की ओर इशारा किया है।
iii. बादल अनंत (ईश्वर) की कृति है।

3. बादल किसका प्रतीक है?

उत्तर - बादल क्रांति का प्रतीक है। समाज में क्रांति रूपी बादल के आगमन से भीषण गर्मी रूपी कठिनाइयाँ समाप्त होगी और सभी जगह उमंग एवं सुखकारी वातावरण छा जाएगा अर्थात क्रांति के बाद नए समाज का सृजन होगा।

4. नई चेतना की काव्य रचना करने वाले कवियों से किस तरह की कविता करने का आह्वान किया गया है?

उत्तर - नई चेतना की काव्य रचना करने वाले कवियों से यह आह्वान किया गया है कि घनघोर बादलों को देखकर उनमें काले घुंघराले सुन्दर बालों की कल्पना कर आनंदित होते हुए भी उनमें छिपी हुई बिजली की छवि को अपने हृदय में धारण करें। उस विद्युत छवि का ध्यान करते हुए वे भी वैसा ही विप्लव का स्वर भरते हुए क्रांति चेतना से युक्त नई कविता लिखें।

5. उत्साह कविता में बादलों के द्वारा कवि ने क्या सन्देश दिया है?

उत्तर - 'उत्साह' कविता में कवि ने बादलों के द्वारा जनसामान्य को संदेश दिया है कि बादलों की गरज सुनकर वे सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्साहित हों तथा नए समाज के लिए विप्लव मचाने को तत्पर रहें , सृजन के लिए विप्लव मचाने को तत्पर रहें।

अट नहीं रही है

प्रतिपादय- 'अट नहीं रही है ' कविता फागुन की मादकता को प्रकट करती है । कवि फागुन की सर्वव्यापक सुंदरता को अनेक संदर्भों में देखता है। जब मन प्रसन्न हो तो हर तरफ फागुन का ही सौंदर्य और उल्लास दिखाई पड़ता है। सुंदर शब्दों के चयन एवं लय ने कविता को भी फागुन की तरह सुंदर एवं ललित बना दिया है।

सारांश - इस कविता में कवि ने फागुन महीने का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है। फरवरी-मार्च के महीने में वसंत ऋतु का आगमन होता है। पेड़ से पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और उन पर नए पत्ते भर जाते हैं। चारों तरफ रंग-बिरंगे फूलों की बहार छा जाती है। उनकी सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। इस अनोखी प्राकृतिक सुंदरता से कवि अपनी आंखें हटा नहीं पा रहा है। इस मौसम में बाग-बगीचों और वनों के सभी पेड़-पौधे नए पत्तों से लद गए हैं। कहीं लाल रंग से,तो कहीं हरे रंग से पेड़ की डालियाँ अनगिनत फूलों से भर गई हैं जिससे कवि को ऐसा लगता है जैसे प्रकृति देवी ने अपने गले में रंग-बिरंगे और सुगंधित फूलों की माला पहन रखी हो। इस सर्वव्यापी सुंदरता का कवि को कहीं ओर-छोर नजर नहीं आ रहा है। इसलिए कवि कहता है कि फागुन की सुंदरता अट नहीं रही है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'अट नहीं रही है' कविता में किस ऋतु का वर्णन किया गया है?

(क) वर्षा ऋतु का (ख) शीत ऋतु का (ग) वसंत ऋतु का (घ) ग्रीष्म ऋतु का

2. 'बाल कल्पना के से पाले' इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है? -

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) अतिशयोक्ति अलंकार

3. 'अट नहीं रही है' कविता की 'पाट पाट शोभा श्री पंक्ति में पाट-पाट का क्या अर्थ है?

(क) जगह-जगह (ख) घर-घर (ग) द्वार-द्वार (घ) बार-बार

4. पाट-पाट' में कौन-सा अलंकार है?

(क) उत्प्रेक्षा (ख) पुनरुक्तिप्रकाश (ग) मानवीकरण (घ) श्लेष

5. पत्तों से लदी डाल पर कौन-कौन से रंगों की छटा बिखरी हुई है?

(क) हरी-काली (ख) लाल-पीली (ग) पीली-भूरी (घ) हरी-लाल

उत्तर– 1. (ग) बसंत ऋतु का 2. (ख) उपमा अलंकार 3. (क) जगह-जगह
4. (ख) पुनरुक्तिप्रकाश 5. (घ) हरी-लाल

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

1) कवि की आँखें किससे नहीं हट रहीं है और क्यों?

उत्तर - कवि की आँखें फागुन माह की शोभा से नहीं हट रही है क्योंकि फागुन मास की शोभा अत्यंत मनोरम, सुहावनी लगने लगती है। चारों तरफ मादक हवाएँ चलने लगती हैं। पक्षी आकाश में पंख फडफडाकर उड़ते हैं। इन सुहावने दृश्यों के कारण फागुन माह की शोभा से आँखें हट नहीं रही हैं।

2) 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर फागुन में उमड़े प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- फागुन का सौंदर्य अन्य ऋतुओं और महीनों से बढ़कर होता है। इस समय चारों ओर हरियाली छा जाती है। खेतों में कुछ फसलें पकने को तैयार होती हैं। सरसों के पीले फूलों की चादर बिछ जाती है। लताएँ और डालियाँ रंग-बिरंगे फूलों से सज जाती हैं। प्राणियों का मन उल्लासमय हुआ जाता है। ऐसा लगता है कि इस महीने में प्राकृतिक सौंदर्य छलक उठता है।

3) 'फागुन की साँस' से कवि का क्या तात्पर्य है? संसार पर उसका क्या प्रभाव पड़ रहा है?

उत्तर - फागुन की साँस से कवि का तात्पर्य तेज और मादक फागुनी हवा के चलने से है। कवि के अनुसार फागुन की मतवाली हवा इतनी तेज चल रही है जैसे फागुन लंबी-लंबी साँस भर रहा हो। उस हवा का प्रभाव अत्यधिक गहरा है, अर्थात धरती के कोने कोने में हवा का असर है।

4) 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर फागुन की मस्ती का वर्णन कीजिए।

उत्तर - 'अट नहीं रही है' कविता में फागुन की मस्ती और शोभा का वर्णन हुआ है। फागुन में कहीं सुगंधित हवाएँ है,कहीं फूलों की शोभा है,कहीं पक्षियों की उन्मुक्त उड़ाने हैं,कहीं वृक्षों पर रंग-बिरंगे फूल,पत्ते उग आए हैं सब जगह मानो शोभा ही शोभा बिखरी हुई है।

5) फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तर- फागुन माह में प्रकृति के साथ-साथ मानव में भी एक प्रकार की मादकता और मस्ती छा जाती है। फागुन में वसंत का आगमन होता है। मौसम अत्यधिक सुहावना होता है। प्रकृति सौन्दर्य से भर जाती है। पेड़-पौधों में नए कोपलें फूटने लगती हैं। वे हरे लाल पतों से लद जाते हैं। चारों ओर रंग-बिरंगे सुगंधित फूल खिले होते हैं। फागुन में शीतल,मंद,सुगंधित

बयार चलती है जिससे संपूर्ण वातावरण में मस्ती और मादकता व्याप्त हो जाती है । अन्य ऋतुओं में कभी ठिठुरन होती है,कभी गर्मी से संपूर्ण प्राणी जगत व्याकुल होते हैं और वर्ष ऋतु में हर जगह जल ही जल और कीचड़ ही कीचड़ होती है ।

यह दंतुरित मुसकान

- नागार्जुन

जीवन परिचय- नागार्जुन का जन्म **1911** ई० की ज्येष्ठ पूर्णिमा को **बिहार** के **सतलखा** में हुआ था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था। बाद में नामकरण के बाद इनका नाम वैद्यनाथ मिश्र रखा गया। छह वर्ष की आयु में ही इनकी माता का देहांत हो गया। इनके पिता इन्हें कंधे पर बैठाकर अपने संबंधियों के यहाँ, एक गाँव से दूसरे गाँव आया-जाया करते थे। इस प्रकार बचपन में ही इन्हें पिता की लाचारी के कारण घूमने की आदत पड़ गयी और बड़े होकर यह घूमना उनके जीवन का स्वाभाविक अंग बन गया। इन्होंने अपनी विधिवत संस्कृत की पढ़ाई बनारस जाकर शुरू की। वहीं इन पर आर्य समाज का प्रभाव पड़ा और फिर बौद्ध दर्शन की ओर झुकाव हुआ। उन दिनों राजनीति में सुभाष चंद्र बोस इन्हें प्रिय थे। इन्होंने बनारस से निकलकर कोलकाता और फिर दक्षिण भारत घूमते हुए, लंका के विख्यात 'विद्यालंकार परिवेण' में जाकर बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ नागार्जुन राजनीतिक आंदोलनों में भी प्रत्यक्षतः भाग लेते रहे। स्वामी सहजानंद से प्रभावित होकर इन्होंने बिहार के किसान आंदोलन में भाग लिया और मार खाने के अतिरिक्त जेल की सजा भी भुगती। चंपारण के किसान आंदोलन में भी इन्होंने भाग लिया। वस्तुतः वे रचनात्मकता के साथ-साथ सक्रिय प्रतिरोध में विश्वास रखते थे। कविता, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, निबन्ध, बाल-साहित्य सभी क्षेत्र में इन्होंने अपनी कलम चलाई। नागार्जुन सही अर्थों में भारतीय मिट्टी से बने आधुनिक कवि हैं। इन्हें कई सारे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जैसे - **भारत भारती सम्मान**, **मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, राजेन्द्र शिखर सम्मान** एवं **साहित्य अकादमी पुरस्कार** आदि|

पाठ का सार

यह 'दंतुरित मुसकान' कविता में छोटे बच्चे की मनोहारी मुसकान देखकर कवि के मन में जो भाव उमड़ते हैं उन्हें कविता में अनेक बिंबों के माध्यम से प्रकट किया गया है। कवि का मानना है कि इस सुंदरता में ही जीवन का संदेश है। इस सुंदरता की व्याप्ति ऐसी है कि कठोर से कठोर मन भी पिघल जाए। इस दंतुरित मुसकान की मोहकता तब और बढ़ जाती है जब उसके साथ नजरों का बाँकपन जुड़ जाता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'यह दंतुरित मुसकान' नामक कविता के कवि का क्या नाम है?

क. तुलसीदास ख. नागार्जुन ग. निराला घ. सूरदास

उत्तर ख. नागार्जुन

2**. कवि ने किसकी मुसकान को दंतुरित मुसकान कहा है?**

क. वृद्ध की ख. युवक की ग. बच्चे की घ. युवती की

उत्तर ग. बच्चे की

3. बच्चे की दंतुरित मुसकान किसमें भी जान डाल देगी?

क. रोगी में ख. पक्षी में ग. कमजोर में घ. मृतक में

उत्तर घ. मृतक में

4. जलजात किसे कहते हैं?

क. बादल ख. वर्षा ग. कमल घ. मछली

उत्तर ग. कमल

5. कवि की झोंपड़ी में क्या खिल रहे थे?

क. जलजात ख. गुलाब ग. गेंदा घ. फूल

उत्तर क. जलजात

लघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न: 1 बच्चे की 'दंतुरित मुसकान' का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर - कवि बच्चे के नए-नए निकले दाँतों की मधुर मुसकान पर मोहित हो जाता है। उसे लगता है कि यह मुसकान एक मृत व्यक्ति में भी प्राण डाल देगी। इस सुंदरता को देखकर तो कठोर-से-कठोर व्यक्ति का दिल भी पिघल जाएगा। उसे ऐसा लग रहा है मानो कमल का सुंदर फूल तालाब को छोड़कर उसकी झोंपड़ी में आकर खिल गया हो।

प्रश्न: 2 बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

उत्तर- बच्चे की मुसकान में निश्छलता और मासूमियत होती है। उसके मन में किसी के लिए कोई दुर्भावना नहीं होती। उसकी मुसकुराहट में प्रसन्नता, प्रशंसा और मस्ती का भाव रहता है, जबकि बड़े व्यक्ति की मुसकान में चालाकी छिपी रहती है। उसमें स्वार्थ तथा किसी के प्रति दुर्भावना भी हो सकती है, इसलिए बच्चे की मुसकान की तुलना ईश्वर की मुसकान से की जाती है।

प्रश्न: 3 कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को किन-किन बिबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर - कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है-

(i) बच्चे के नए-नए निकले दोनों की मधुर मुसकान तो एक मृत व्यक्ति में भी प्राणों का संचार कर देती है।

(ii) बच्चे के धूल से सने हुए शरीर को देखकर ऐसा लगता है मानो कमल का सुंदर फूल तालाब को छोड़कर झोपड़ी में आकर खिल गया हो।

(iii) बच्चे का स्पर्श इतना कोमल है कि बाँस या बबूल से भी शेफालिका के फूल झड़ने लग जाएँगे।

प्रश्न: 4 "मृतक मे भी डाल देगी जान" के माद्यम से कवि क्या कहना चाहते है ?

उत्तर: इसके माद्यम से यह बताना चाहते है कि बच्चें की मुसकान इतनी मनोहर व प्रिय होती है कि मरे व्यक्ति में भी जान डाल देती है अर्थात् जीवन से निराश, हताश तथा पूर्णतः उदासीन व्यक्ति के मन को प्रफुल्लता तथा खुशी से भर देती है।

प्रश्न: 5 "छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी मे खिल रहे जलजात" के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते है ?

उत्तर - बच्चें के धूल से सने शरीर को देखकर कवि को लगता है मानो कमल का सुंदर फूल तालाब को छोड़कर उसकी झोंपड़ी में आकर खिल गया हो यह मुसकान इतनी मधुर और मोहक है कि इसमें कठोर हृदय को भी पिघला देने की शक्ति होती है।

प्रश्न: 6 बच्चा किसी को घूरकर क्यों देखता है? कवि बच्चे की ओर से आँखें फेर लेने को क्यों कहता है ?

उत्तर- जब बच्चा पहली बार किसी को देखता है, तो वह उसे पहचान नहीं पाता और पहचान न पाने के कारण उसे घूरकर देखता है। कवि बच्चे की ओर से आँखें फेर लेने के लिए इसलिए कहता है, क्योंकि उसे लगता है कि पहचान पाने के कारण बच्चा उसे लगातार घूर रहा है, जिसके कारण वह थक गया होगा।

प्रश्न :7 'छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे जलजात" पंक्ति में अलंकार बताते हुए यह भी बताइए कि 'कमल' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है ?

उत्तर - उत्प्रेक्षा अलंकार , कमल शब्द का प्रयोग दंतुरित मुस्कान युक्त बच्चे के लिए किया गया है।

फसल

पाठ का सार

फसल सुप्रसिद्ध कवि नागार्जुन द्वारा रचित गंभीर भावों की प्रस्तुति हुई एक प्रभावशाली कविता है। ग्रामीण धरती की महिमा भी और मिट्टी की रचना भी - शक्ति की गरिमा भी कविता को सुनकर ही लहलहाती हुई फसल का सुंदर नैसर्गिक दृश्य सामने आता है। परंतु फसल को जन्म देने में किन-किन तत्वों का योगदान होता है, इस तथ्य को नागार्जुन ने इस कविता में अत्यंत भावपूर्ण शब्दों में अभिव्यक्त किया है। कवि ने यह स्पष्ट किया कि सृष्टि के लिए प्रकृति और मनुष्य दोनों का सहयोग आवश्यक है। यह कविता इस दौर में आधुनिक जीवन-शैली और उपभोक्ता-संस्कृति से जुड़ी हुई है, जो हमें कृषि-संस्कृति के करीब ले जाती है। यह हमें कृत्रिमता और चमक-दमक भरी दुनिया से प्राकृतिक प्रकृति का साक्षात्कार कराती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. मिट्टी का गुणधर्म किसे कहा गया है?

(क) जल (ख) फसल (ग) हवा (घ) धूप

उत्तर(ख) फसल

प्रश्न 2.कवि के अनुसार फ़सलें किसका रूपांतरित हुई?

(क) खनिज लवणों का (ख) खनिज लवणों का (ग) खनिज लवणों का (घ) सूर्य की किरण का

उत्तर (घ) सूर्य की किरण का

प्रश्न 3. किसके कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा बतायी गई है?

(क) किसान के (ख) व्यापारी के (ग) कवि के (घ) जन-साधारण के

उत्तर(क) किसान के

प्रश्न4. कवि ने 'संदली' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है?

(क) मिट्टी के लिए (ख) फसल के लिए (ग) पानी के लिए (घ) वायु के लिए

उत्तर(क) मिट्टी के लिए

प्रश्न 5. फसल की पैदावार किसके जादू के कारण होती है ?

(क) काली-संदली मिट्टी के मिश्रण द्वारा (ख) रासायनिक खाद द्वारा

(ग) नदियों के पानी द्वारा (घ) चाँद की किरणों द्वारा

उत्तर (ग) नदियों के पानी द्वारा

लघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. फ़सल उगाने में किसानों के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- फ़सल उगाने में प्रकृति के विभिन्न तत्व हवा, पानी, मिट्टी अपना योगदान देते हैं, परंतु किसानों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। सारी परिस्थितियाँ फ़सल उगाने योग्य होने पर भी किसान के अथक श्रम के बिना फ़सल तैयार नहीं हो सकती है। इससे स्पष्ट है कि किसानों का योगदान सर्वाधिक है।

प्रश्न 2. फसल को "हाथों के स्पर्श की गरिमा " और "महिमा" कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर - "हाथों के स्पर्श की गरिमा" और "महिमा" कहकर कवि किसान की अथक मेहनत को सम्मानित करते हैं। क्योंकि किसान की लगन व कठिन परिश्रम के बिना खेतों में फसल नहीं उग सकती हैं। फसल के फलने-फूलने में एक या दो नहीं बल्कि लाखों-करोड़ों किसानों के हाथों के स्पर्श की गरिमा विद्यमान होती है। कवि कहते हैं कि मिट्टी और पानी के पोषक तत्व तथा सूरज की उर्जा भी तभी सार्थक होती है ,जब किसानों के हाथों का स्पर्श इसे गरिमा प्रदान करता हैं।

प्रश्न 3. कवि के अनुसार फसल क्या है ?

उत्तर - कवि के अनुसार नदियों के पानी का जादू फसल के रूप दिखाई देता हैं क्योंकि बिना पानी के फसल का उगना नामुकिन हैं। करोड़ों किसानों की दिन - रात की मेहनत का नतीजा फसल के रूप में मिलता हैं। भूरी, काली व खुशबूदार हल्की पीली मिट्टी यानि अलग - अलग प्रकार की मिट्टी के पोषक तत्व और सूरज की किरणें भी अपना रूप बदल कर इन फसलों के अंदर समाहित रहती हैं। क्योंकि सूरज की रोशनी और हवा में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड गैस को अवशोषित कर ही पौधे अपनी पत्तियों के दवारा भोजन बनाते हैं। असल में संक्षेप में कहा जाए तो फसल करोड़ों किसानों की लगन व मेहनत का नतीजा , नदियों के पानी का जादू , मिट्टी में पाए जाने वाले जरूरी अवयव , सूर्य की किरणें व हवा में पायी जाने वाली कार्बन

डाइऑक्साइड गैस के मिलन का नतीजा है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए-

"रूपांतर है सूरज की किरणों का

सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का !"

उत्तर - भोजन बनाने के लिए पौधों को सूरज की रोशनी व हवा की आवश्यकता होती है। सूरज की किरणें भी अपना रूप बदल कर इन फसलों के अंदर समाहित रहती हैं। क्योंकि सूरज की रोशनी और हवा में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड गैस को अवशोषित कर ही पौधे अपनी पत्तियों के दवारा भोजन बनाते हैं। जिसे कविता में कवि ने सूरज की किरणों का परिवर्तित रूप और हवा की भावों के साथ पैरों को उठाते , गिराते एवं हिलाते हुए नाचने का नाम दिया हैं। इसीलिए कवि कहते हैं कि एक ओर जहाँ सूरज की किरणें अपना रूप बदल कर इन फसलों के अंदर समाहित है वही दूसरी ओर हवा की थिरकन भी इन पौधों को फलने - फूलने में मदद करती हैं।

प्रश्न 5. मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

उत्तर-मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी निम्नलिखित भूमिका हो सकती है:

१. अधिक से अधिक वृक्षों को लगाए।

२. कारखानों को सीमित किया जाए।

३. प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करें।

४. फसलों को उगाने के लिए रसायनिक तत्वों का उपयोग ना करें।

संगतकार

- मंगलेश डबराल

कवि का परिचय: मंगलेश डबराल का जन्म सन **1948** में **टिहरी गढ़वाल**, **उत्तरांचल** के **काफलपानी** गाँव में हुआ और शिक्षा देहरादून में । दिल्ली आकर हिंदी पेट्रियट, प्रतिपक्ष और आसपास में काम करने के बाद ये पूर्वग्रह सहायक संपादक के रूप में जुड़े। इलाहबाद और लखनऊ से प्रकाशित अमृत प्रभात में भी कुछ दिन नौकरी की, बाद में सन **1983** में **जनसत्ता** अखबार में साहित्य संपादक का पद संभाला। कुछ समय **सहारा समय** में संपादक रहने के बाद आजकल **नेशनल बुक ट्रस्ट** से जुड़े हैं।

पाठ का सार

इस कविता में कवि ने गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की महत्ता का स्पष्ट किया है। कवि कहते हैं कि मुख्य गायक के गंभीर आवाज़ का साथ संगतकार अपनी कमजोर किन्तु मधुर आवाज़ से देता है। अधिकांशत ये मुख्य गायक का छोटा भाई, चेला या कोई रिश्तेदार होता है जो की शुरू से ही उसके साथ आवाज़ मिलाता आ रहा है। जब मुख्य गायक गायन करते हुए सुरों की मोहक दुनिया में खो जाता है, उसी में रम जाता है तब संगतकार ही स्थायी इस प्रकार गाकर समां बांधे रखता है जैसे वह कोई छूटा हुआ सामान सँजोकर रख रहा हो। वह अपनी टेक से गायक को यह उन दिनों की याद दिलाता है जब उसने सीखना शुरू किया था।

कवि कहते हैं बहुत ऊँची आवाज़ में जब मुख्य गायक का स्वर उखड़ने लगता है और गला बैठने लगता है तब संगतकार अपनी कोमल आवाज़ का सहारा देकर उसे इस अवस्था से उबारने का प्रयास करता है। वह मुख्य गायक को स्थायी गाकर हिम्मत देता है की वह इस गायन जैसे अनुष्ठान में अकेला नहीं है। वह पुनः उन पंक्तियों को गाकर मुख्य गायक के बुझते हुए स्वर को सहयोग प्रदान करता है। इस समय उसके आवाज़ में एक झिझक से भी होती है की कहीं उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर से ऊपर ना पहुँच जाए। ऐसा करने का यह नही है की उसके आवाज़ में कमजोरी है बल्कि वह आवाज़ नीची रखकर मुख्य गायक को सम्मान देता है। इसे कवि ने महानता बताया है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1 गायक के पीछे-पीछे उसके स्वर को कौन दोहराता है?

क) गरीब ख) संगतकार ग) बच्चा घ) इनमें से कोई नहीं

2. कवि संगतकार द्वारा अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से कम रखने को क्या मानता है?

क) समझदारी ख) ईमानदारी ग) मनुष्यता घ) चालाकी

3. तारसप्तक में गाने के कारण कवि को कैसा अनुभव होता है?

क) बहुत ख़ुशी होती है| ख) थकान

ग) उत्साह कम होने लगता है घ) गाने की इच्छा समाप्त हो जाती है।

4. मुख्य गायक को धीरज बँधाने का काम प्रायः कौन करता है?

(क) उसकी माँ ख) श्रोता ग) संगतकार घ) इनमें से कोई नहीं

5. ऊँचे स्वर में गाए गए सरगम को क्या कहते हैं?

क) तालसरगम ख) तारसप्तक ग) तालसप्तक घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर; 1. ख) संगतकार 2. ग) मनुष्यता 3. ग) उत्साह कम होने लगता है 4. ग) संगतकार 5. ख) तारसप्तक

लघूत्तरीय प्रश्न

1.गायकों को गायन के दौरान कौन-कौन-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

उत्तर-गायक को गायन के दौरान निम्नलिखित कठिनाइयों सामना करना पड़ता है-

(i) अत्यधिक उतार-चढ़ाव वाले रागों को गाते समय उनका गला बैठ जाता है।

(ii) गायन के दौरान जटिल तानों को गाते समय वह सरगम को लाँघकर अनहद में भटक जाते हैं।

(iii) तारसप्तक जैसे रागों को गाते समय जब उनका गला बैठने लगता है, तो वे निराश एवं हताश होने लगते हैं।

2.गाए जा चुके राग को फिर से गाने की पृष्ठभूमि किस प्रकार तैयार होती है?

उत्तर-मुख्य गायक जब गायन के दौरान किसी राग को गा चुका होता है, तब संगतकार उस राग को पुनः गाकर सुर को ऐसी जगह पर पहुँचा देता है जहाँ से मुख्य गायक उस राग से फिर से गा सकता है। उस प्रकार संगतकार अपनी गायन शैली से गाए जा चुके राग के लिए पुनः गान हेतु पृष्ठभूमि तैयार करता है।

3. 'संगतकार' किस प्रकार के व्यक्ति का प्रतीक है? 'संगतकार' कविता के आधार पर समझाइए ।

उत्तर-संगतकार ऐसे व्यक्ति का प्रतीक है जो स्वयं पृष्ठभूमि में रहकर संबद्ध व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और वह सर्वाधिक प्रभावी व्यक्ति की सफलता में हर संभव सहयोग करता है। उदाहरणार्थ-संगीत के कार्यक्रम की प्रस्तुति के दौरान संगतकार मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिलाकर उसके गायन को प्रभावी व सफल बनाता है. किंतु उसे ऐसा करते समय सदा इसका ख्याल रखना होता है कि उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर पर भारी न पड़ जाए।

4.मुख्य गायक एवं संगतकार के मध्य जुड़ी कड़ी अगर टूट जाए तो उसके क्या परिणाम हो सकते है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मुख्य गायक एवं संगतकार के मध्य जुड़ी कड़ी अगर टूट जाए तो मुख्य गायक का गायन पूर्ण नहीं हो पाएगा। जब मुख्य गायक अपने सुरों से भटकने लगेगा या उसका गला बैठने लगेगा, तो स्थायी को कोई संभालने वाला नहीं होगा और इससे मुख्य गायक का उत्साह क्षीण हो जाएगा।

5.'संगतकार' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'संगतकार' कविता का मुख्य उद्देश्य मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार अथवा नायक के सहयोगियों की भूमिका के महत्त्व पर प्रकाश डालना है। इस कविता के माध्यम से कवि ने यह संवेदनशीलता विकसित करने का प्रयास किया है कि नायक की सफलता में सहायक प्रत्येक व्यक्ति का अपना विशेष महत्त्व है। उनके बिना नायक सफलता के चरम बिंदु पर नहीं पहुँच सकता। संगतकारों की विनम्रता मानवीयता का परिचायक है, इसे हमें उनकी कमज़ोरी नहीं, अपितु समर्पण और त्याग समझना चाहिए।

माता का अँचल

-शिवपूजन सहाय

परिचय:

शिवपूजन सहाय का जन्म 9 अगस्त 1893, गांव उनवांस, शाहाबाद, बिहार में हुई तथा मृत्यु- 21 जनवरी 1963 को पटना में हुई। हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार, सम्पादक और पत्रकार थे। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1960 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

पाठ का सार

“नास्ति मातृसमं त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया।।“ अर्थात, माता के समान कोई छाया नहीं है, माता के समान कोई सहारा नहीं है। माता के समान कोई रक्षक नहीं है और माता के समान कोई प्रिय चीज नहीं है।
माता का अँचल कहानी मातृ-प्रेम (ममता) का अनूठा (बेजोड़) उदाहरण है। माता का अंचल पाठ में बताया गया है कि एक नन्हे बच्चे को सारे जहाँ की खुशियाँ, संतुष्टि, सुरक्षा और शांति की अनुभूति केवल माँ के आँचल तले ही मिलती है।

शिवपूजन सहाय के बचपन का नाम "तारकेश्वरनाथ” था। मगर घर में उन्हें "भोलानाथ" कहकर पुकारा जाता था। भोलानाथ अपने पिता को "बाबूजी" व माता को "मइयाँ " कहते थे। बचपन में भोलानाथ का अधिकतर समय अपने पिता के सानिध्य में ही गुजरता था। वो अपने पिता के साथ ही सोते, उनके साथ ही जल्दी सुबह उठकर स्नान करते और अपने पिता के साथ ही भगवान की पूजा अर्चना करते थे। वो अपने बाबूजी से अपने माथे पर तिलक लगाकर खूब खुश होते थे। और जब भी भोलानाथ के पिताजी रामायण का पाठ करते तब भोलानाथ उनके बगल में बैठ कर अपने चेहरे का प्रतिबिंब आईने में देख कर बहुत खुश होते। पर जैसे ही उनके बाबूजी की नजर उन पर पड़ती। तो वो थोड़ा शर्माकर, थोड़ा मुस्कुरा कर आईना नीचे रख देते थे। उनकी इस बात पर उनके पिता भी मुस्कुरा उठते थे।

पूजा अर्चना करने के बाद भोलानाथ राम नाम लिखी कागज की पर्चियों में छोटी -छोटी आटे की गोलियां रखकर अपने बाबूजी के कंधे में बैठकर गंगा जी के पास जाते। और फिर उन आटे की गोलियां को मछलियों को खिला देते थे। उसके बाद वो अपने बाबूजी के साथ घर आकर खाना खाते। भोलानाथ की मां उन्हें अनेक पक्षियों के नाम से निवाले बनाकर बड़े प्यार से खिलाती थी। भोलानाथ की माँ भोलानाथ को बहुत लाड-प्यार करती थी। वह कभी उन्हें अपनी बाँहों में भर कर खूब प्यार करती, तो कभी उन्हें जबरदस्ती पकड़ कर उनके सिर पर सरसों के तेल से मालिश करती ।

उस वक्त भोलानाथ बहुत छोटे थे। इसलिए वह बात- बात पर रोने लगते। इस पर बाबूजी भोलानाथ की मां से नाराज हो जाते थे। लेकिन भोलानाथ की मां उनके बालों को अच्छे से संवार कर, उनकी एक अच्छी सी गुँथ बनाकर उसमें फूलदार लड्डू लगा देती थी और साथ में भोलानाथ को रंगीन कुर्ता व टोपी पहना कर उन्हें "कन्हैया" जैसा बना देती थी।

भोलानाथ अपने हमउम्र दोस्तों के साथ खूब मौज मस्ती और तमाशे करते । इन तमाशों में तरह- तरह के नाटक शामिल होते थे। कभी चबूतरे का एक कोना ही उनका नाटक घर बन जाता तो, कभी बाबूजी की नहाने वाली चौकी ही रंगमंच बन जाती और उसी रंगमंच पर सरकंडे के खंभों पर कागज की चांदनी बनाकर उनमें मिट्टी या अन्य चीजों से बनी मिठाइयों की दुकान लग जाती जिसमें लड्डू, बताशे, जलेबियां आदि सजा दिये जाते थे। और फिर जस्ते के छोटे-छोटे टुकड़ों के बने पैसों से बच्चे उन मिठाइयों को खरीदने

का नाटक करते थे । भोलानाथ के बाबूजी भी कभी-कभी वहां से खरीदारी कर लेते थे। ऐसे ही नाटक में कभी घरोंदा बना दिया जाता था जिसमें घर की पूरी सामग्री रखी हुई नजर आती थी। तो कभी-कभी बच्चे बारात का भी जुलूस निकालते थे। जिसमें तंबूरा और शहनाई भी बजाई जाती थी। दुल्हन को भी विदा कर लाया जाता था। कभी-कभी बाबूजी दुल्हन का घूंघट उठा कर देख लेते तो, सब बच्चे हंसते हुए वहां से भाग जाते थे। बाबूजी भी बच्चों के खेलों में भाग लेकर उनका आनंद उठाते थे। बाबूजी बच्चों से कुश्ती में जानबूझ कर हार जाते थे। बस इसी हँसी खुशी में भोलानाथ का पूरा बचपन मजे से बीत रहा था।

एक दिन की बात है सारे बच्चे आम के बाग़ में खेल रहे थे। तभी बड़ी जोर से आंधी आई। बादलों से पूरा आकाश ढक गया और देखते ही देखते खूब जम कर बारिश होने लगी। काफी देर बाद बारिश बंद हुई तो बाग के आसपास बिच्छू निकल आए जिन्हें देखकर सारे बच्चे डर के मारे भागने लगे । संयोगवश रास्ते में उन्हें मूसन तिवारी मिल गए । भोलानाथ के एक दोस्त बैजू ने उन्हें चिढ़ा दिया। फिर क्या था बैजू की देखा देखी सारे बच्चे मूसन तिवारी को चिढ़ाने लगे। मूसन तिवारी ने सभी बच्चों को वहाँ से खदेड़ा और सीधे पाठशाला चले गए। पाठशाला में उनकी शिकायत गुरु जी से कर दी। गुरु सभी बच्चों को स्कूल में पकड़ लाने का आदेश दिया। सभी को पकड़कर स्कूल पहुंचाया गया। दोस्तों के साथ भोलानाथ को भी जमकर मार पड़ी।

जब बाबूजी तक यह खबर पहुंची तो, वो दौड़े-दौड़े पाठशाला आए। जैसे ही भोलानाथ ने अपने बाबूजी को देखा तो वो दौड़कर बाबूजी की गोद में चढ़ गए और रोते-रोते बाबूजी का कंधा अपने आंसुओं से भिगा दिया। गुरूजी की मान मिनती कर बाबूजी भोलानाथ को घर ले आए।

भोलानाथ काफी देर तक बाबूजी की गोद में भी रोते रहे। लेकिन जैसे ही रास्ते में उन्होंने अपनी मित्र मंडली को देखा तो वो अपना रोना भूलकर मित्र मंडली में शामिल हो गए। मित्र मंडली उस समय चिड़ियों को पकड़ने की कोशिश कर रही थी। भोलानाथ भी चिड़ियों को पकड़ने लगे। चिड़ियाँ तो उनके हाथ नहीं आयी। पर उन्होंने एक चूहे के बिल पानी डालना शुरू कर दिया। उस बिल से चूहा तो नहीं निकला लेकिन सांप जरूर निकल आया। सांप को देखते ही सारे बच्चे डर के मारे भागने लगे। भोलानाथ भी डर के मारे भागे । और गिरते-पड़ते जैसे-तैसे घर पहुंचे। सामने बाबूजी बैठ कर हुक्का पी रहे थे। लेकिन भोलानाथ जो अधिकतर समय अपने बाबूजी के साथ बिताते थे, उस समय बाबूजी के पास न जाकर सीधे अंदर अपनी मां की गोद में जाकर छुप गए । डर से काँपते हुए भोलानाथ को देखकर मां घबरा गई । माँ ने भोलानाथ के जख्मों की धूल को साफ कर उसमें हल्दी का लेप लगाया। डरे व घबराए हुए भोलानाथ को उस समय पिता के मज़बूत बांहों के सहारे व दुलार के बजाय अपनी मां का आंचल ज्यादा सुरक्षित व महफूज़ लगने लगा ।

<u>प्रश्न - अभ्यास</u> -

1.'माता का आँचल' नामक पाठ में लेखक ने तत्कालीन समाज के पारिवारिक परिवेश का जो चित्रण किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर- प्रस्तुत पाठ के आधार पर लेखक ने तत्कालीन समाज का चित्रण करते हुए वहाँ की जीवन शैली का उल्लेख किया है। वहाँ का वातावरण सामूहिक है। लोगों के बीच आत्मीयता की भावना है। लोग प्रकृति के करीब तथा बच्चे आधुनिक यंत्रों, मोबाइल फोन, कंप्यूटर इत्यादि पर समय व्यतीत करने के बजाय शारीरिक खेल

खेलते हैं। बच्चे अपने परिवार के सदस्यों के साथ अत्यंत घुल-मिलकर रहते थे। उस समय बचपन से ही बच्चों को खेल-खेल में उन सभी बातों को सिखाया जाता था, जिससे बच्चे बड़े होकर अपने कार्यक्षेत्र में कुशल बन सकें और व्यावहारिक भी बन सकें।

2. 'माता का आँचल' पाठ में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया गया है। आप ग्रामीण जीवन व शहरी जीवन में क्या अंतर पाते हैं?

उत्तर- 'माता का आँचल' पाठ में लेखक ने ग्रामीण परिवेश का चित्रण करते हुए एक ओर वहाँ की जीवन शैली का वर्णन करते हुए सामूहिक वातावरण, लोगों के मध्य विद्यमान आत्मीयता की भावना, लोगों का प्रकृति के निकट होने, बच्चों के आधुनिक यंत्रों जैसे मोबाइल फोन, कंप्यूटर इत्यादि पर समय व्यतीत करने की अपेक्षा शारीरिक खेल खेलने का वर्णन किया है। वहीं दूसरी ओर लेखक ने शहरी जीवन शैली का उल्लेख करते हुए लोगों के एकल जीवन यापन करने की प्रवृत्ति को दिखाते हैं। शहर में लोगों के मध्य आत्मीयता की कमी दिखती है। माता-पिता दोनों के रोजगार में प्रवृत्त होने के कारण वे अपने बच्चों पर उतना ध्यान नहीं दे पाते, जितना ग्रामीण माता-पिता । इस प्रकार ग्रामीण व शहरी जीवन में अत्यधिक अंतर दिखाई देता है।

3. 'माता का आँचल' शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक दीजिए ।

उत्तर- 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर बालक भोलानाथ का अधिक जुड़ाव अपने पिता के साथ दर्शाया गया है, परंतु जब वह साँप को देख कर डर जाता है तब वह पिता की अपेक्षा माता की गोद में छिपकर ही शांति व सुरक्षा का अनुभव करता है।

माता के साथ बच्चे का ममत्व का रिश्ता होता है। भोलानाथ का अपने पिता से अपार स्नेह था, परन्तु विपत्ति के समय जो शांति और प्रेम की छाया उसे अपनी माँ की गोद में जाकर मिली, वह शायद उसे पिता से प्राप्त नहीं हो पाती। लेखक ने इसीलिए पिता-पुत्र के प्रेम की बहुलता को दर्शाते हुए भी इस कहानी का शीर्षक 'माता का आँचल' रखा है। जो कि पूर्णतः उपयुक्त व सार्थक है। वैसे इस कहानी के अन्य शीर्षक इस प्रकार हो सकते हैं- 'माँ की ममता' अथवा 'वात्सल्य प्रेम' |

4. इस उपन्यास के अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तर- तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति में आपसी प्रेम, भाईचारा और सहयोग था। बच्चे अपने परिवार के सदस्यों के साथ अत्यंत घुल-मिल कर रहते थे।

ग्रामीण परिवेश में बचपन से खेल-खेल में उन सभी बातों को सिखाया जाता था जिससे बच्चे बड़े होकर अपने कार्य क्षेत्र में दक्षता हासिल कर सकें और व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति कर सकें।

आज की ग्रामीण संस्कृति में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई देते हैं-

(i) सादगी का स्थान चकाचौंध और बनावटीपन ने ले लिया है। व्यवहार और बातचीत में सादगी के स्थान पर चालाकी तथा धूर्तता आ गई है।

(ii) सुख - दुःख में परिवार के सदस्य पहले की तरह इकट्ठा नहीं होते हैं। अब संबंधों में अपनत्व का स्थान धन और स्वार्थ ने ले लिया है।

(iii) घरों में बच्चे अपने सगे-संबंधियों की जगह पर टेलीविज़न और वीडियो खेल को अधिक महत्त्वपूर्ण मानने लगे हैं।

(iv) 'परिवार' की परिभाषा 'परिवार के सभी सदस्य नहीं बल्कि 'मैं, मेरी पत्नी और मेरे बच्चे' तक सीमित हो गई है।

5. 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर लेखक के पिताजी की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-

(क) लेखक के पिताजी धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे।

(ख) वे प्रात:काल उठकर नहा-धोकर पूजा करतें तथा लेखक को भी नहला-धुलाकर पूजा पर बिठा लेते।

(ग) बच्चे के प्रति अत्यधिक जुड़ाव का भाव होना।

(घ) वे स्वभाव से अत्यंत सरल, भोले, ममतामय तथा जीवों के प्रति दया भाव रखने वाले उच्चकोटी के व्यक्ति थे।

6. 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर लिखिए कि माँ बच्चे को 'कन्हैया' का रूप देने के लिए किन-किन चीजों से सजाती थीं? इससे उनकी किस भावना का बोध होता है? आपकी राय से बच्चों का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए?

उत्तर- भोलानाथ की माँ भोलानाथ के सिर में बहुत-सा सरसों का तेल डालकर बालों को तर कर दिया करती थी, फिर उसका उबटन करती । वह भोलानाथ की नाभि और माथे पर काजल का टीका लगाती, उसकी चोटी गूँथती, कुरता-टोपी पहनाकर उसमें फूलदार लट्टू बाँधती और उसे रंगीन कुरता- टोपी पहनाकर कन्हैया बना देती। इससे भोलानाथ के प्रति माँ के लाड-प्यार की भावना का बोध होता है।

बच्चों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे भी अपनी माँ के प्रति आदर-सम्मान का भाव रखें व उनकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाएँ ।

साना-साना हाथ जोड़ि

- मधु कांकरिया

परिचय-

मधु कांकरिया का जन्म 23 मार्च 1957 को कोलकाता में हुआ। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम. ए. की शिक्षा प्राप्त की और कोलकाता से ही कंप्यूटर प्लेसमेंट में रखा गया।

मधु कांकरिया हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिका, कथाकार और उपन्यासकार हैं। उन्होंने बहुत सुन्दर यात्रा-वृत्तांत भी लिखा है। उनके विचारों और संवेदनाओं की नवीनता और समाज में व्याप्त अनेक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ, महानगर की घुटन और असुरक्षा के बीच युवाओं में नशे की आदतें, लालबत्ती क्षेत्र की पीड़ा नारी अभिव्यक्ति उनके विषय के विषय रहे हैं। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह- चिड़िया ऐसे मरती है, काली चील, फाइल, उसे बुद्ध ने काटा , अंतहीन मरुस्थल , और अंत में यीशु, बीतते हुए, भरी दोपहरी के अँधेरे।

उपन्यास- खुला गगन के लाल तारे, सुखते चिनार, सलाम आखिरी, पत्ता खोर, सेज पर संस्कृत, हम यहाँ थे, ढलती सांझ का सूरज।

यात्रा वृतान्त- बुद्ध, पत्थर और पहाड़, शहर जादू, बंजारा मन और बंदिशे, साना-साना हाथ जोड़ि

पाठ का सार

'साना-साना हाथ जोड़ि' की लेखिका मधु कांकरिया जी ने अपने यात्रा वृतांत के बारे में इसमें बताया है। यह यात्रा सिक्किम की राजधानी गंतोक और यूथनांक के बीच थी। लेखिका जब इस शहर में उतरी वह हैरान हो गई। उनका हैरान होने का कारण सितारों की झिलमिलाहट में जगमगाता इतिहास और वर्तमान के संधि स्थल पर खड़ा मेहनतकश बादशाहों का शहर गंतोक की सुंदरता थी।

इस सुंदरता ने लेखिका के मन में भीतर-बाहर शून्य स्थापित कर दिया था। उन्होंने इस यात्रा के दौरान एक नेपाली युवती से प्रार्थना के बोल "साना-साना हाथ जोड़ि गर्दहु प्रार्थना" सीखें जिसका अर्थ था छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूं कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो। लेखिका ने अगले दिन यूथनांक जाने का निश्चय किया था। जैसे प्रातःकाल में उनकी नींद खुली वह बालकनी की ओर दौड़ी क्योंकि वहां के लोगों ने उन्हें बताया था कि मौसम साफ होने पर कंचनजंघा साफ दिखाई देती है। कंचनजंगा तू ना दिखे परंतु इतने सारे फूल देखे कि वह लिखती हैं "मानो ऐसा लगा कि फूलों के बाग में आ गई हूं।" यूथनांक जोकि गंगटोक से 149 किलोमीटर की दूरी पर था वहां जाने के लिए ड्राइवर कम गाइड जितेन नार्गे के साथ निकलती हैं।

लेखिका जब आ रही थी तब उन्हें गदराए पाईन, नुकीले पेड़, पहाड़ दिखे इसके साथ ही दिखी सफेद बौद्ध पताकाएं जोकि शांति व अहिंसा के प्रतीक होती हैं और बुध की मान्यता के अनुसार जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तब 108 श्वेत पताकाएं लहराई जाती है जिन पर मंत्र लिखे होते हैं। कई बार नए कार्य के प्रारंभ में भी पताकाएं फहरा दी जाती है परंतु वह रंगीन होती है। अब गाइड नॉर्वे के साथ लेखिका की जीप उस जगह पहुंची जहां गाइड फिल्म की शूटिंग हुई थी यह की जगह- कवी लॉन्ग स्टॉक। उन्हीं रास्तों के भीतर लेखिका मधु जी की एक कुटिया की तरफ नजर पड़ी जहां उन्होंने धर्म चक्र को घूमते देखा।

इस प्रेयर व्हील के बारे में नार्वे ने बताया कि इसको घुमाने से पाप धुल जाते हैं ऐसा माना जाता है। अब पर्वतों, घाटियों, नदियों की सुंदरता से आगे बढ़कर लेखिका ने फेन उगलता झरना देखा जिसका नाम- सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल था। लेखिका लिखती है- पहली बार एहसास हुआ.... जीवन का आनंद है यही चलायमान सौंदर्य। वहां उन्होंने पहाड़ तोड़ती तथा बच्चे को पीठ पर बांधकर पत्ते बीनती महिलाओं को देखा। वापस लौटते समय भी जीप में नॉर्वे ने कई जानकारियां दी। उसने गुरु नानक के फुटप्रिंट और खेदुम एक पवित्र स्थल के बारे में बताया। तभी लेखिका ने कहा गंगटोक बहुत सुंदर है तब नॉर्वे ने कहा मैडम गंतोक कहिए जिसका अर्थ पहाड़ होता है।

लघूत्तरीय प्रश्न:

1. 'साना-साना हाथ जोड़ि ' पाठ के आधार पर गंतोक के मार्ग के उस प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए, जिसे देखकर लेखिका को अनुभव हुआ - "जीवन का आनंद है यही चलायमान सौंदर्य"।

उत्तर॰ - प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को असीम आत्मीय नैसर्गिक सुख की अनुभूति होती है। ये दृश्य शांत थे। इन दृश्यों की शांति समूचे परिदृश्य को समोए हुई थी। ये दृश्य लेखिका को रोमांचित व पुलकित करते थे। गंतोक के मार्ग के इन अद्‌भुत व अनूठे दृश्यों ने लेखिका में जीवनी शक्ति का अनुभव करा दिया था। लेखिका को ऐसा अनुभव हुआ मानो वह देश और काल से परे धारा बनकर बह रही हो। उसे ऐसा लगने लगा कि उसके अन्तर्मन की समस्त तामसिकताएँ व वासनाएँ उसके बहाव के साथ ही नष्ट हो गई हों। वह चाहती है कि वह चिरकाल तक इसी तरह बहते हुए असीम आत्मीय आनंद का अनुभव करती रहे।

2. कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उत्तर॰ - किसी बौद्‌ध की मृत्यु होती है, तो उसकी आत्मा की शांति के लिए 108 श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं। कई बार किसी नए कार्य अथवा शुभ अथवा मांगलिक कार्य के अवसर पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं। श्वेत पताकाएँ जहाँ शोकको द्‌योतित करती हैं, वहीं रंगीन पताकाएँ शुभ अवसर की ओर संकेत करती हैं।

3. सिक्किमी नवयुवक ने सिक्किम में 'स्नोफॉल' की कमी का क्या कारण बताया?

उत्तर॰ - सिक्किमी नवयुवक ने लेखिका को जानकारी दी कि धीरे-धीरे यहाँ 'स्नोफ़ॉल' कम होता जा रहा है, जिसका कारण बढ़ता हुआ प्रदूषण है। प्रदूषण के अन्य बुरे प्रभाव भी यहाँ महसूस किए जा रहे हैं। बढ़ते वायु-प्रदूषण के कारण लोगों को श्वास लेने में कठिनाई हो रही है। स्वच्छ वायु न मिलने से लोग बीमार पड़ रहे हैं। यहाँ पर वायु-प्रदूषण के साथ साथ जल-प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। शीतल और पवित्र नदियाँ प्रदूषित हो गई हैं। परिणामस्वरूप पेट की अनेक बीमारियाँ फैल रही हैं।

4. सिक्किमी नवयुवक ने 'कटाओ' के विषय में क्या जानकारी दी?

उत्तर - सिक्किमी नवयुवक ने बताया कि 'कटाओ' 'टूरिस्ट प्लेस' नहीं है। इस कारण वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य अछूता है और 'कटाओ' का व्यवसायीकरण नहीं हो पाया है। यह स्विटज़रलैंड की तरह सुंदर है। यहाँ कोई दुकान भी नहीं खुली है। फलतः प्रदूषण की न्यूनता है। अतः यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को एक तरह से सौंदर्य का वरदान प्राप्त हुआ है।

5. सिक्किम यात्रा के दौरान आदिवासी युवतियों को देखकर लेखिका के मन में क्या विचार उत्पन्न हुए? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर॰ -सिक्किम यात्रा के दौरान लेखिका 'मधु कांकरिया' ने देखा कि कुछ पहाड़ी औरतें कुदाल और हथौड़ों से पत्थर तोड़ रही हैं। उनका यह काम अत्यंत खतरनाक व कठिन था। गाइड ने बताया कि यह आम जनता है, जो इसी प्रकार का जोखिम-भरा जीवन जीती है। लेखिका को लगा कि ये औरतें बहुत कम लेकर समाज को बहुत अधिक लौटाती हैं। उसने यह भी देखा कि इनके बच्चे भी वहाँ पढ़ाई न करके मवेशी चराते हैं, पानी भरते हैं। वास्तव में, पहाड़ों पर रहने वालों का जीवन अत्यंत कठिनाइयों से भरा होता है। जो पहाड़ हमें घूमने जाने पर अति सुंदर दिखाई पड़ते हैं और हमारा मन मोह लेते हैं, वे वहाँ पर रहने वालों के लिए सहायक नहीं होते।

रास्तों को चौड़ा बनाने, पहाड़ों को सुंदर बनाने और चाय के बागानों के सौंदर्य के लिए ये औरतें ही दिन-रात काम करती हैं।

6. **आज की पीढ़ी कुदरत की खूबसूरती को बिगाड़ रही है, उसे रोकने समझाने केलिए आप क्या करेंगे? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर. -आज की पीढ़ी कुदरत की खूबसूरती को बिगाड़ रही है, 'साना-साना हाथजोड़ि' के संदर्भ में लेखिका के अनुसार पर्वतों पर कम होती बर्फ व प्राकृतिकअसंतुलन के लिए प्रदूषण जिम्मेदार है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिएउसे प्रदूषण से मुक्त करना होगा। युवा पीढ़ी को इसमें अपना योगदान देना होगा।आज की पीढ़ी को समझाना होगा कि वन-कटाई के स्थान पर वृक्षारोपण कोमहत्त्व दिया जाना चाहिए।

7. "साना-साना हाथ जोड़ि गर्दहु प्रार्थना" का अर्थ क्या है? लेखिका ने इस प्रार्थना को कहाँ सुना?

उत्तर. - "साना-साना हाथ जोड़ि गर्दहु प्रार्थना" सीखें जिसका अर्थ है छोटे छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूं कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो।इसे लेखिका ने एक नेपाली युवती से सुना था।

मैं क्यों लिखता हूँ

- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

जीवन परिचय:- **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन** 'अज्ञेय' का जन्म **7 मार्च 1911** को **उत्तर प्रदेश** के **कसया (आधुनिक कुशीनगर)** में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई जहाँ उन्हें संस्कृत, फ़ारसी, अँग्रेज़ी और बांग्ला भाषा और साहित्य की शिक्षा दी गई। हिंदी साहित्य में उनकी प्रतिष्ठा एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न कवि, संपादक, ललित-निबंधकार और उपन्यासकार के रूप में है। इसके साथ ही उन्होंने अपने यात्रा वृतांत, अनुवाद, आलोचना, संस्मरण, डायरी, विचार-गद्य एवं नाटक से भी हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। इनकी मृत्यु **4 अप्रैल 1987** को हुई।

पाठ का सार:

मैं क्यों लिखता हूं के लेखक में कृतिकार के स्वभाव और अनुशासन दोनों का ही महत्व दिखा रहा है। लेखक अज्ञेय ने प्रत्यक्ष अनुभव और अनुभूति में अंतर बताते हुए कहा है कि अनुभव तो घटित का होता है, पर अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उसे सत्य को मिला लेता है जो कृतिकार के साथ घटित नहीं हुआ है। प्रस्तुत पाठ अज्ञेय द्वारा लिखित है। इस पाठ में अज्ञेय ने अपने लिखने के कारणों पर प्रकाश डाला है। लेखक क्यों लिखता है यह प्रश्न बहुत कठिन है। इसका उत्तर देते हुए लेखक कहता है कि मैं इसलिए लिखता हूँ कि

स्वयं जानना चाहता हूं कि क्यों लिखता हूँ लिखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता। लिखकर ही लेखक उस अभ्यांतर व्यवस्था को पहचानता है जिसके कारण उसने लिखा । अज्ञेय भी उस आंतरिक व्यवस्था से मुक्ति पाने के लिए तटस्थ होकर उसे देखने और पहचान लेने के लिए लिखता है। कुछ लेखक प्रसिद्धि मिल जाने के बाद कुछ बाहर की व्यवस्था से भी लिखते हैं। बाहर का दबाव वास्तव में दबाव नहीं बल्कि भीतरी प्रकाश होता है। लेखन में रचनाकार के स्वभाव और आत्मानुशासन का बहुत अधिक महत्व होता है। कुछ लेखक बाहरी दबाव के बिना लिख ही नहीं पाते अज्ञेय उनकी तुलना करते हुए कहता है कि वे उन व्यक्तियों के समान हैं, जो आंख खुल जाने के बाद भी घड़ी के अलार्म बजने का इंतजार करते हैं। अज्ञेय को कभी बाहरी दबाव की जरूरत नहीं पड़ी।

अज्ञेय भीतरी विवशता का वर्णन करते हुए अपने जीवन के बारे में बताता है कि वह विज्ञान का विद्यार्थी रहा है। उसे अणु और रेडियोधर्मिता का पुस्तकीय ज्ञान तो था पर जब हिरोशिमा में अणु गिरा तो उसके प्रभावों का ऐतिहासिक प्रमाण भी सामने आ गया। विज्ञान के दुरुपयोग के प्रति लेखक की बुद्धि का विद्रोह संभव था इसीलिए लेखक ने बौद्धिक व्यवस्था के कारण नहीं अनुभूति के कारण लेख लिखा। लेखक एक उदाहरण देते हुए कहता है कि युद्ध मे सैनिक बेवजह हजारों मछलियां मार देते हैं, जबकि उन्हें थोड़ी सी मछलियों की आवश्यकता होती है।

जब लेखक जापान गया तो वह हिरोशिमा के अस्पताल में भी गया और अणु बम से आहत लोगों को देखकर दुख का अनुभव हुआ। लेखक को प्रत्यक्ष अनुभव भी हुआ पर वह अनुभव से ज्यादा अनुभूति को मानते थे क्योंकि अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को पा लेती है जो वास्तव में रचनाकार के सामने कभी हुआ ही नहीं। फिर एक दिन सड़क पर लेखक ने जले हुए पत्थर पर जली उजली छाया देखी। विस्फोट के समय कोई वहां खड़ा रहा होगा और रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणों ने पत्थर को झुलसा दिया और उस व्यक्ति को भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। उस समय लेखक को प्रत्यक्ष अनुभूति हुई कि मैं स्वयं हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया। इसी से लेखक के मन में विवशता जागी जिसने उसको लिखने के लिए प्रेरित किया । अज्ञेय ने हिरोशिमा पर भारत लौट कर रेलगाड़ी में बैठे- बैठे एक कविता लिखी । यह कविता अच्छी है या बुरी इसके बारे में लेखक को नहीं पता परंतु लेखक ने अपनी अनुभूति प्रकट की है।

लघूत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1. 'मैं क्यों लिखता हूँ।' प्रश्न के उत्तर में अज्ञेय ने क्या कहा है ? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर:- लेखक 'अज्ञेय' जी ने 'मैं क्यों लिखता हूँ ? के उत्तर में कहा है कि वह अपने मन की विवशता को पहचानते हैं। अतः वह लिखकर उससे मुक्ति पाना चाहते हैं। वह इसलिए भी लिखना चाहते हैं, ताकि स्वयं को जान और पहचान सकें। उनके मन में जो विचारों की छटपटाहट व बेचैनी होती है। उससे मुक्ति पाने के लिए वे लिखना चाहते हैं। वे यह भी जानते हैं कि कई बार व्यक्ति प्रसिद्धि पाने, धन अर्जन करने व संपादक की विवशता या दवाब के कारण भी लिखता है। पर वे स्वयं की पहचान करके व अपने विचारों को तटस्थ रखकर सबके समक्ष प्रस्तुत करने व आत्मसंतुष्टि के लिए लिखते हैं।

प्रश्न 2. 'मैं क्यों लिखता हूँ ?' प्रश्न के उत्तर में 'अज्ञेय' के किसी एक तर्क का उल्लेख कीजिए।

उत्तर:- मैं क्यों लिखता हूँ ?' के प्रश्न के उत्तर में 'अज्ञेय' ने अनेक तर्क दिए हैं। उनमें से प्रमुख हैं- वह इसलिए लिखते हैं क्योंकि वे स्वयं यह जानना चाहते हैं कि वे क्यों लिखते हैं? लिखकर ही वह अपने मन के अंदर की बेचैनी या भावों को प्रकट करते हैं। वे लिखकर अपने अंदर की छटपटाहट से आज़ादी पाना चाहते हैं। वे तटस्थ रहकर अपने अंदर के विचारों को जानने के लिए लिखते हैं।

प्रश्न 3. इस निबंध के आधार पर लिखिए कि वैचारिक मतभेदों को भुलाकर दो समुदायों में एक-दूसरे के प्रति आदर की भावना कैसे बढ़ाई जा सकती है?

उत्तर:- वैचारिक मतभेदों को भुलाकर दो समुदायों में एक-दूसरे के प्रति आदर की भावना बढ़ाने के लिए हमें एक दूसरे के विचारों का, एक दूसरे की रीति-रिवाज़ों और परंपराओं का सम्मान करना चाहिए। एक दूसरे के तीज-त्योहार मनाने की स्वतंत्रता का अधिकार प्रत्येक समुदाय को होना चाहिए। जाति, धर्म और समुदाय के आधार पर किसी में कोई अंतर करना उचित नहीं है। सभी समुदाय के लोगों को समान अवसर प्रदान करना चाहिए। हर समुदाय के लोगों के विचार और सोच में अंतर हो सकता है, परंतु हमें यह भाव त्यागना होगा कि हमारी सोच उससे बड़ी है और उसकी सोच छोटी है। जब हम सभी समुदायों के प्रति मान-सम्मान का, बराबरी का और उनकी स्वतंत्रता का ध्यान रखेंगे, तो सभी मतभेदों को भुलाकर शांति से रह पाएंगे।

प्रश्न 4. लेखक की आभ्यंतर विवशता क्या होती है ? 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए।

उत्तर:- लेखक की आभ्यंतर विवशता यह है कि वह स्वयं को पहचानने के लिए लिखता है। लेखक लिखकर अपने मन के अंदर की विवशता को जानना चाहता है। जो विचार उसके अंदर छटपटाहट पैदा कर रहे हैं, उन्हें जानने के लिए लिखता है। लेखक मानता है कि कई बार बाहरी तत्वों जैसे- आर्थिक विवशता, संपादक का आग्रह प्रसिद्धि पाने या बनाए रखने के लिए भी लिखा जाता है। परंतु लेखक तटस्थ रहकर, आंतरिक विचारों से मुक्ति पाने के लिए अपनी अनुभूति के आधार पर लिखता है।

प्रश्न 5. इस पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक को लिखने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त होती है?

उत्तर:- इस **पाठ में अज्ञेय जी अपनी आंतरिक विवशता को प्रकट करने के लिए लिखते हैं। वे तटस्थ होकर यह देखना चाहते हैं कि उनका मन क्या सोचता है। वे लिखकर मन की बेचैनी और उसकी छटपटाहट से मुक्ति पाने के लिए लिखते हैं। वे स्वयं को जानने और समझने व पहचानने के लिए लिखते हैं। वे यह भी मानते हैं कि कई बार कुछ लेखक आर्थिक कारणों से भी लिखते हैं या कुछ संपादक के** दबाव **और प्रसिद्धि की कामना के लिए भी लिखते हैं।**

प्रश्न 6. 'मैं क्यों लिखता है' प्रश्न का लेखक ने क्या उत्तर दिया है। पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर:- लेखक 'अज्ञेय' जी ने 'मैं क्यों लिखता हूँ?' के उत्तर में कहा है कि वह अपने मन की विवशता को पहचानते हैं। अतः वह लिखकर उससे मुक्ति पाना चाहते हैं। वह इसलिए भी लिखना चाहते हैं, ताकि स्वयं को जान और पहचान सकें। उनके मन में जो विचारों की छटपटाहट व बेचैनी होती है, उससे मुक्ति पाने के लिए वे लिखना चाहते हैं। वे यह भी जानते हैं कि कई बार व्यक्ति प्रसिद्धि पाने, धन अर्जन करने व संपादक की विवशता या दवाब के कारण भी लिखता है। पर वे स्वयं की पहचान करके व अपने विचारों को तटस्थ रखकर सबके समक्ष प्रस्तुत करने व आत्मसंतुष्टि के लिए लिखते हैं।

प्रश्न 7. रचनाकार के लिए अनुभूति के अतिरिक्त बाहरी दबाव भी लिखने के कारण बनते हैं। 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के लेखक पर कौन-कौन से दबाव थे ?

उत्तर:- रचनाकार के लिए अनुभूति के अतिरिक्त बाहरी दबाव भी लिखने का कारण बनते हैं। 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक के मन में भीतरी विवशता से प्रेरित होकर ऐसी अनुभूति जागृत होती है कि वह अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल हो उठता है। इस आंतरिक विवशता या प्रेरणा के अतिरिक्त बाहरी दबाव भी लिखने का कारण बनता है। हिरोशिमा पर लिखी लेखक की कविता उसके आंतरिक एवं बाह्य दवाव का परिणाम है। लेखक ने हिरोशिमा में हुए भीषण नर-संहार की पीड़ा को वहाँ जाने से पहले अनुभव किया था। लेकिन जापान यात्रा के दौरान उन्होंने उस विनाशलीला के दुष्प्रभावों का साक्षात्कार भी किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने हिरोशिमा पर कविता लिखी। यह अभिव्यक्ति उनकी यात्रा के बाद बाह्य दबावों एवं आंतरिक अनुभूति दोनों के कारण से हुई। अतः आंतरिक अनुभूति के साथ बाह्य दबावों में भी लेखक को लिखने के लिए बाध्य किया।

प्रश्न 8. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के लेखक ने अपने लिखने का क्या कारण बताया है?

उत्तर:- लेखक 'अज्ञेय' जी ने 'मैं क्यों लिखता हूँ?' के उत्तर में कहा है कि वह अपने मन की विवशता को पहचानते हैं। अतः यह लिखकर उससे मुक्ति पाना चाहते हैं। वह इसलिए भी लिखना चाहते हैं, ताकि स्वयं को जान और पहचान सकें। उनके मन में जो विचारों की छटपटाहट व बेचैनी होती है। उससे मुक्ति पाने के लिए वे लिखना चाहते हैं। वे यह भी जानते हैं कि कई बार व्यक्ति प्रसिद्धि पाने, धन अर्जन करने व संपादक की विवशता या दबाव के कारण भी लिखता है। पर वे स्वयं की पहचान करके व अपने विचारों को तटस्थ रखकर सबके समक्ष प्रस्तुत करने व आत्मसंतुष्टि के लिए लिखते हैं।

प्रश्न 9. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है ?
उत्तर - मानव जाति का एक संवेदनशील युवा वह होता हैं, जो मानव जाति की उन्नति के लिए अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभाए, एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में अपनी निम्नलिखित भूमिका निभा सकता हैं-

(क) प्रदूषण फैलाने वाली वास्तुओं के बारे लोगों को जागरूक कर वातावरण को साफ़ रखना।

(ख) विज्ञान द्वारा बनाये गए हथियारों का उपयोग मनुष्य की भलाई के लिए करना चाहिए।

(ग) भ्रूण-हत्या और सामाजिक बुराइयों के बारे में आम जनता को जागरूक करना चाहिए |

(घ) अश्लील कार्यक्रमों और आयोजनों का विरोध करना चाहिए|

(ड़) विज्ञान के बुरे और अच्छे भेदों को पहचानते हुए उनका मनुष्य की भलाई के लिए काम करना चाहिए|

(च) परमाणु हथियारों की खोज, अंग प्रत्यारोपण और अमानवीय वैज्ञानिक खोजों पर प्रतिबंध लगाना और रोकने और उसे रोकने का प्रयास करना चाहिए|

प्रश्न 10. लेखक ने अपने लिखने का क्या कारण बताया है ?

उत्तर:- लेखक ने अपने लिखने पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि वह अपने भीतर की विवशता से मुक्ति पाने के लिए लिखते हैं | वह अपनी आंतरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए तटस्थ होकर उसे देखने और पहचानने के लिए लिखते हैं अज्ञेय जी स्वीकार करते **हैं वह बाह्य दबाव** में **आकार बहुत कम लिखते हैं** |

प्रश्न 11. अणु बम के बिस्फोट के प्रभाव को देखकर भी लेखक ने तत्काल कुछ क्यों नहीं लिखा?

उत्तर:- अज्ञेय जी ने हिरोशिमा में हुए अणु बम के बिस्फोट के प्रभाव को प्रत्यक्ष देखा फिर भी कुछ नहीं लिखा क्योंकि **लेखक की अनुभूति में थोड़ी कसर थी और अनुभूति के अभाव में लिख लिखने से उतनी सार्थकता नहीं आती जितनी अनुभूति होने पर होती** |

रचनात्मक लेखन

अनुच्छेद लेखन

1.देश के विकास में बाधक बेरोज़गारी

संकेत बिंदु -
प्रस्तावना
बेरोज़गारी के कारण
बेरोज़गारी के परिणाम
बेरोज़गारी का अर्थ
समाधान के उपाय
उपसंहार

प्रस्तावना - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश को कई समस्याओं से दो-चार होना पड़ा है। इन समस्याओं में मूल्य वृद्धि, जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी आदि प्रमुख हैं। इनमें बेरोजगारी का सीधा असर व्यक्ति पर पड़ता है। यही असर व्यक्ति के स्तर से आगे बढ़कर देश के विकास में बाधक सिद्ध होता है।

बेरोज़गारी का अर्थ - 'रोज़गार' शब्द में 'बे' उपसर्ग और 'ई' प्रत्यय के मेल से 'बेरोज़गारी' शब्द बना है, जिसका अर्थ है वह स्थिति जिसमें व्यक्ति के पास काम न हो अर्थात जब व्यक्ति काम करना चाहता है और उसमें काम करने की शक्ति, सामर्थ्य और योग्यता होने पर भी उसे काम नहीं मिल पाता है। यह देश का दुर्भाग्य है कि हमारे देश में लाखों-हज़ारों नहीं बल्कि करोड़ों लोग इस स्थिति से गुजरने को विवश हैं।

बेरोज़गारी के कारण - बेरोज़गारी बढ़ने के कई कारण हैं। इनमें सर्वप्रमुख कारण हैं- देश की निरंतर बढ़ती जनसंख्या। इस बढ़ती जनसंख्या के कारण सरकारी और प्राइवेट सेक्टर द्वारा रोज़गार के जितने पद और अवसर सृजित किए जाते हैं वे अपर्याप्त सिद्ध होते हैं। परिणामतः यह समस्या सुरसा के मुँह की भाँति बढ़ती ही जाती है। बेरोज़गारी बढ़ाने के अन्य कारणों में अशिक्षा, तकनीकी योग्यता, सरकारी नौकरी की चाह, स्वरोज़गार न करने की प्रवृत्ति, उच्च शिक्षा के कारण छोटी नौकरियाँ न करने का संकोच, कंप्यूटर जैसे उपकरणों में वृद्धि, मशीनीकरण, लघु उद्योग-धंधों का नष्ट होना आदि है।

इनके अलावा एक महत्त्वपूर्ण निर्धनता भी है, जिसके कारण कोई व्यक्ति चाहकर भी स्वरोज़गार स्थापित नहीं कर पाता है। हमारे देश की शिक्षा प्रणाली भी ऐसी है जो बेरोजगारों की फौज़ तैयार करती है। यह शिक्षा सैद्धांतिक अधिक प्रयोगात्मक कम है जिससे कौशल विकास नहीं हो पाता है। ऊँची-ऊँची डिग्रियाँ लेने पर भी विश्वविद्यालयों और कालेजों से निकला युवा स्वयं को ऐसी स्थिति में पाता है जिसके पास डिग्रियाँ होने पर भी काम करने की योग्यता नहीं है। इसका कारण स्पष्ट है कि उसके पास तकनीकी योग्यता का अभाव है।

समाधान के उपाय - बेरोज़गारी दूर करने के लिए सरकार और बेरोज़गारों के साथ-साथ प्राइवेट उद्योग के मालिकों को सामंजस्य बिठाते हुए ठोस कदम उठाना होगा। इसके लिए सरकार को रोजगार के नवपदों का सृजन करना चाहिए। यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि नवपदों के सृजन से समस्या का हल पूर्णतया संभव नहीं है, क्योंकि बेरोजगारों की फ़ौज बहुत लंबी है जो समय के साथसाथ बढ़ती भी जा रही है। सरकार को माध्यमिक कक्षाओं से तकनीकी शिक्षा अनिवार्य कर देना चाहिए ताकि युवा वर्ग डिग्री लेने के बाद असहाय न महसूस करे। सरकार को स्वरोजगार को प्रोत्साहन देने के लिए बहुत कम दरों पर कर्ज देना चाहिए तथा युवाओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था करते हुए इन उद्योगों का बीमा भी करना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह लघु एवं कुटीर उद्योगों के अलावा पशुपालन, मत्स्य पालन आदि को भी बढ़ावा दे। प्राइवेट उद्यमियों को चाहिए कि वे युवाओं को अपने यहाँ ऐसी सुविधाएँ दे कि युवाओं का सरकारी नौकरी से आकर्षण कम हो। युवा वर्ग को अपनी सोच में बदलाव लाना चाहिए तथा उनकी उच्च शिक्षा बाधक नहीं बल्कि सफलता के मार्ग का साधन है जिसका प्रयोग वे समय आने पर कर सकते हैं। अभी जो भी मिल रही है उसे पहली सीढ़ी मानकर शुरुआत तो करें। इसके अलावा उच्च शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा अवश्य ग्रहण करें ताकि स्वरोजगार और प्राइवेट नौकरियों के द्वार भी उनके लिए खुले रहें।

बेरोज़गारी के परिणाम - कहा गया है कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। बेरोज़गार व्यक्ति खाली होने से अपनी शक्ति का दुरुपयोग असामाजिक कार्यों में लगाता है। वह असामाजिक कार्यों में शामिल होता है और कानून व्यवस्था भंग करता है। ऐसा व्यक्ति अपना तथा राष्ट्र दोनों का विकास अवरुद्ध करता है। 'बुबुक्षकः किम् न करोति पापं' भूखा व्यक्ति कौन-सा पाप नहीं करता है अर्थात भूखा व्यक्ति चोरी, लूटमार, हत्या जैसे सारे पाप कर्म कर बैठता है। अत: व्यक्ति को रोज़गार तो मिलना ही चाहिए।

उपसंहार-बेरोज़गारी की समस्या पूरे देश की समस्या है। यह व्यक्ति, समाज और देश के विकास में बाधक सिद्ध होती है। जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने के साथ ही इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है। बेरोज़गारी कम करने में सरकार के साथ-साथ समाज और युवाओं की सोच में बदलाव लाना आवश्यक है।

2. मेक इन इंडिया

संकेत बिंदु:

परिचय

योजना का प्रारंभ
मेक इन इंडिया के मुख्य बिंदु
विकास की राह
उपलब्धियाँ
वर्तमान में प्रासंगिकता
भविष्य की रुपरेखा
महत्त्व और लाभ
उपसंहार
परिचय

जैसा कि हम जानते हैं कि भारत एक विकासशील देश है और यहाँ की 70% से अधिक जनसँख्या गांवों में निवास करती है और जीविकोपार्जन के लिए खेती पर ही निर्भर हैं | किन्तु मात्र खेती से ही हमारा विकास नहीं हो सकता, जिस तेजी के साथ भारत में जनसँख्या बढ़ रही हैं, जिस तेजी के साथ हम संसाधनों का उपभोग कर रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि हमें शीघ्र ही नए रोजगार के अवसर पैदा करने होंगे तभी हम विश्वगुरु बनने के सपने को पूरा कर पाएंगे | अतः इसी सोच के साथ देशव्यापी स्तर पर विनिर्माण क्षेत्र में विकास करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन से 25 सितंबर, 2014 को 'मेक इन इंडिया' पहल की शुरुआत की गई थी।

'मेक इन इंडिया' पहल का एक मुख्य उद्देश्य भारत में रोज़गार के अवसरों को बढ़ाना था । उस योजना के तहत मुख्य रूप से देश के युवाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया और यह रुपरेखा भी निर्धारित की गई की कैसे देश में उद्यमशीलता को बढ़ावा देना है। इसका दृष्टिकोण निवेश के लिए अनुकूल माहौल बनाना, आधुनिक और कुशल बुनियादी संरचना, विदेशी निवेश के लिए नये क्षेत्रों को खोलना और सरकार एवं उद्योग के बीच एक साझेदारी का निर्माण करना है।

योजना का प्रारंभ प्रधानमंत्री बनने से पहले ही माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने एक सपना देखा था - एक ऐसे भारत का सपना जहाँ कोई बेरोजगार ना हो, जहाँ भुखमरी ना हो, जहाँ गरीबी ना हो, जहाँ हर बच्चे को बेहतर शिक्षा मिले, कोई बेघर ना हो, हर क्षेत्र में तरक्की हो और भारत फिर से सोने की चिड़िया कहलाये, और अपने इसी सपने को साकार करने के लिए मोदी जी ने मेक इन इंडिया' पहल की शुरुआत की | ताकि देश में बने उत्पादों को बढ़ावा मिले | इसके पूर्व मोदी जी ने गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए जो कायापलट की वो हम सबके सामने प्रत्यक्ष हैं | मोदी जी इस बात को भली भांति समझते हैं कि किसी भी देश की तरक्की में वहाँ के प्रत्येक नागरिक का महत्वपूर्ण योगदान होता है, और उन्होंने देश के कई राज्यों में भम्रण कर यह पाया कि यहाँ अनेक ऐसे उत्पाद हैं जो पूरी दुनिया में और कही निर्मित नहीं हुए और ऐसे स्वदेशी उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिलनी चाहिए | बस यही से उन्होंने मेक इन इंडिया योजना शुरू करने की ठानी और 25 सितंबर 2014 को 'मेक इन इंडिया' की घोषणा की | जिसके तहत कई विदेशी कम्पनियों को भारत में निर्मित विभिन्न उत्पादों को क्रय करने के लिए अवसर उपलब्ध कराया गया | जिससे भारत को विदेशी आय भी प्राप्त हो साथ में यहाँ के उत्पादों को वैश्विक पहचान भी मिले और रोजगार के नए अवसर भी पैदा हो
मेक इन इंडिया के अंतर्गत न केवल विदेशी पूंजी बल्कि विदेशी तकनीक और डिजाइन भी उपयोग में लिए जा रहे हैं | इस प्रकार कोई भी विदेशी कंपनी भारत में निवेश कर, भारतीय श्रम शक्ति के सहारे अपनी तकनीक

और डिज़ाइन का उपयोग कर भारत में उत्पादित करने के लिए निवेश करती हैं तो इसे मेक इन इंडिया की श्रेणी में रखा जा सकता हैं |

मेक इन इंडिया के मुख्य बिंदु

वर्ष 2014 में केंद्र सरकार ने देश में विनिर्माण को प्रोत्साहित करने और विनिर्माण में निवेश के माध्यम से अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाने के उद्देश्य से 'मेक इन इंडिया' पहल की शुरुआत की थी। भारत सरकार ने मेक इन इंडिया के तरह 25 क्षेत्रों को सुनिश्चित किया हैं जिनमें घरेलू श्रम, संसाधनों और विदेशी निवेश के जरिए उत्पाद निर्मित किये जाए और विदेशी कम्पनियों पर प्रत्यक्ष निर्भरता को कम किया जा सके।

विकास की राह

'मेक इन इंडिया' पहल की शुरुआत देशव्यापी स्तर पर विनिर्माण क्षेत्र के विकास के उद्देश्य से की गई थी। इस पहल के माध्यम से भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सरकार ने मुख्यतः 3 उद्देश्य निर्धारित किये हैं :

अर्थव्यवस्था में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिये इसकी विकास दर को 12-14 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक बढ़ाना। वर्ष 2022 तक अर्थव्यवस्था में विनिर्माण क्षेत्र से संबंधित 100 मिलियन रोज़गारों का सृजन करना।

यह सुनिश्चित करना कि सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान वर्ष 2025 (जो कि संशोधन से पूर्व वर्ष 2022 था) तक बढ़कर 25 प्रतिशत हो जाए।

इस पहल के तहत केंद्र और राज्य सरकारें भारत के विनिर्माण क्षेत्र को मज़बूत करने के लिये दुनिया भर से निवेश आकर्षित करने का प्रयास कर रही हैं।

निवेशकों पर पड़ने वाले बोझ को कम करने के लिये सरकार काफी प्रयास कर रही है। इन्हीं प्रयासों के तहत व्यावसायिक संस्थाओं की सभी समस्याओं को हल करने के लिये एक समर्पित वेब पोर्टल की व्यवस्था भी की गई है।

उपलब्धियाँ

'मेक इन इंडिया' पहल में विनिर्माण क्षेत्र के विकास पर काफी ध्यान दिया जा रहा है, जो न केवल व्यापार क्षेत्र को बढ़ावा देगा, बल्कि नए उद्योगों की स्थापना के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर को भी बढ़ाएगा। विदित हो कि योजना की शुरुआत के कुछ समय बाद ही वर्ष 2015 में भारत ने अमेरिका और चीन को पीछे छोड़ते हुए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया था।

ऑटो मोबाइल - इस योजना के क्रियान्वयन से भारत में आयात-निर्यात पर प्रतिबन्ध को न्यूनतम किया गया जिससे विदेशी निर्यातक जैसे यूरोप, अमेरिका, जापान जैसे प्रमुख ऑटोमोटिव बाजार और विशाल घरेलु बाजार भौगोलिक रूप से भारत के करीब आये हैं | हाल ही में भारी उघोग और सार्वजानिक उघम मंत्री ने इंदौर में NATRAX (हाई स्पीड ट्रैक) का उद्घाटन किया है जो एशिया का सबसे लंबा ट्रैक हैं | इससे अब दुपहिया से लेकर भारी ट्रेक्टर वाहनों का परीक्षण भारत में ही किया जा सकेगा, इससे हमारी विदेशो पर निर्भरता कम होगी।

मीडिया एवं मनोरंजन - गत वर्षो में बढ़ती ऑनलाइन आबादी के साथ, ऑनलाइन गेमिंग और डिजिटल मीडिया में 43 प्रतिशत वृध्दि के आसार हैं | ओटीटी के आने से लोगो में मनोरंजन का अनुपात बढ़ा हैं |और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में 150 प्रतिशत की वृध्दि हुई हैं | कई विदेशी कंपनियों ने निवेश किया हैं जैसे वाल्ट डिज्नी, ब्लैकस्टोन, ब्लूमबर्ग, सोनी, बीबीसी आदि |

निर्माण - निर्माण अन्य उघोगों को आगे बढ़ाने और भारत के समग्र विकास में बहुत बड़ी भूमिका निभाता हैं| इसलिए सरकार खुले एफडीआई, बुनियादी ढाचा क्षेत्र के लिए बड़े बजट आवंटन, स्मार्ट सिटी मिशन, जैसी केंद्रीय नीतियों के माध्यम से बुनियादी ढांचे और निर्माण सेवाओ के विकास पर ध्यान केन्द्रित कर रही है।

कल्याण - हाल ही में सरकार ने आयुष क्षेत्र में 100% विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अनुमति दी हैं जिससे बड़ी संख्या में विदेशी कंपनिया भारत की तरफ आकर्षित होंगी | जिससे आयुष अस्पतालों और दवा केन्द्रों को उन्नत किया जा सकेगा और गुणवत्ता वाले कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकेगी |

वर्तमान में प्रासंगिकता

'मेक इन इंडिया' मुख्य रूप से विनिर्माण उद्योगों पर आधारित है, इसलिये यह विभिन्न कारखानों की स्थापना की मांग करता है। इस पहल के तहत विदेशी कंपनियों को भारत में उत्पादन करने के लिये प्रेरित किया गया है, जिसके कारण भारत के छोटे उद्यमियों पर असर देखने को मिला हैं। चूँकि इस पहल का उद्देश्य विनिर्माण क्षेत्र के तीन प्रमुख कारकों- निवेश, उत्पादन और रोज़गार में वृद्धि करना था। अतः इसका मूल्यांकन भी इन्हीं तीनों के आधार पर किया जा सकता है।

निवेश - पिछले पाँच वर्षों में अर्थव्यवस्था में निवेश की वृद्धि दर काफी धीमी रही है। यह स्थिति तब और खराब हो जाती है, जब हम विनिर्माण क्षेत्र में पूंजी निवेश पर विचार करते हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार, अर्थव्यवस्था में कुल निवेश को प्रदर्शित करने वाला सकल स्थायी पूंजी निर्माण (GFCF) जो कि वर्ष 2013-14 में GDP का 31.3 प्रतिशत था, वर्ष 2017-18 में घटकर 28.6 प्रतिशत हो गया। महत्त्वपूर्ण यह है कि इस अवधि के दौरान कुल निवेश में सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी कमोबेश समान ही रही, जबकि निजी क्षेत्र की हिस्सेदारी 24.2 प्रतिशत से घटकर 21.5 प्रतिशत हो गई

उत्पादन - औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) विनिर्माण क्षेत्र के उत्पादन में होने वाले परिवर्तन का सबसे बड़ा सूचक है। यदि अप्रैल 2012 से नवंबर 2019 के मध्य औद्योगिक उत्पादन सूचकांक के आँकड़ों पर गौर करें तो ज्ञात होता है कि इस दौरान मात्र 2 ही बार डबल डिजिट ग्रोथ दर्ज की गई, जबकि अधिकांश महीनों में यह या तो 3 प्रतिशत से कम थी या नकारात्मक थी। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विनिर्माण क्षेत्र में अभी भी उत्पादन वृद्धि नहीं हो पाई है।

विकास दर - इस पहल के तहत विनिर्माण क्षेत्र के लिये काफी महत्त्वाकांक्षी विकास दर निर्धारित की गई थी। विश्लेषकों का मानना है कि 12-14 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर औद्योगिक क्षेत्र की क्षमता से बाहर है। ऐतिहासिक रूप से भारत के विनिर्माण क्षेत्र ने कभी भी इतनी विकास दर प्राप्त नहीं की है।

उक्त तीनों कारकों के आधार पर 'मेक इन इंडिया' पहल का मूल्यांकन करने पर ज्ञात होता है कि यह पहल इच्छा के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाई है।

विश्लेषकों के अनुसार, इस पहल के संतोषजनक प्रदर्शन न कर पाने का मुख्य कारण यह था कि यह विदेशी निवेश पर काफी अधिक निर्भर थी, इसके परिणामस्वरूप एक अंतर्निहित अनिश्चितता पैदा हुई क्योंकि भारत में उत्पादन की योजना किसी और देश में मांग और पूर्ति के आधार पर निर्धारित की जा रही थी।

भविष्य की रुपरेखा

भारत सरकार को उद्योगों, विशेष रूप से विनिर्माण उद्योगों के विकास के लिये अनुकूल वातावरण बनाने हेतु और अधिक प्रयास करने होंगे।

भारतीय अर्थव्यवस्था देश में मजबूत विकास और व्यापार के समग्र दृष्टिकोण में सुधार और निवेश के संकेत के साथ आशावादी रुप से बढ़ रही है । सरकार के नये प्रयासों एवं पहलों की मदद से निर्माण क्षेत्र में काफी

सुधार हुआ है । निर्माण को बढ़ावा देने एवं संवर्धन के लिए शुरु की गई इस योजना से, भारत को महत्वपूर्ण निवेश एवं निर्माण, संरचना तथा अभिनव प्रयोगों के वैश्विक केंद्र के रुप में बदला जा सकता हैं ।

'मेक इन इंडिया' पहल के संबंध में देश एवं विदेशों से सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है। जापान, चीन, फ्रांस और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने भारत की विभिन्न औद्योगिक परियोजनाओं में निवेश करने हेतु अपनी दिलचस्पी दिखायी है।

निर्माण को बढ़ावा देने के लिए लक्ष्य

मध्यम अवधि में निर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर में प्रति वर्ष 12-14% वृद्धि करने का उद्देश्य |

2022 तक देश के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण की हिस्सेदारी में 16% से 25% की वृद्धि |

विनिर्माण क्षेत्र में वर्ष 2022 तक 100 मिलियन अतिरिक्त रोजगार के अवसर पैदा करना |

समावेशी विकास के लिए ग्रामीण प्रवासियों और शहरी गरीबों के बीच उचित कौशल का निर्माण |

घरेलू मूल्य संवर्धन और निर्माण में तकनीकी गहराई में वृद्धि।

भारतीय विनिर्माण क्षेत्र की वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ाना |

विशेष रूप से पर्यावरण के संबंध में विकास की स्थिरता सुनिश्चित करना |

महत्त्व और लाभ

'मेक इन इंडिया' इंडिया' एक क्रांतिकारी विचार है जिसने निवेश एवं नवाचार को बढ़ावा देने, बौद्धिक संपदा की रक्षा करने और देश में विश्व स्तरीय विनिर्माण बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लिए प्रमुख नई पहलों की शुरूआत की है। इस पहल नें भारत में कारोबार करने की पूरी प्रक्रिया को आसान बना दिया है। नई प्रक्रिया में गति और पारदर्शिता को काफी बढ़ाया हैं। अब जब व्यापार करने की बात आती है तो भारत कई विदेशी कंपनियों को आकर्षित करता है। अब भारत ऐसे सभी निवेशकों के लिए आसान और पारदर्शी प्रणाली उपलब्ध करवा रहा है जो स्थिर अर्थव्यवस्था और आकर्षक व्यवसाय के अवसरों की तलाश कर रहे हैं। भारत में निवेश करने के लिए यह सही समय है जब यह देश सभी को विकास और समृद्धि के मामले में बहुत कुछ प्रदान कर रहा है

उपसंहार

इस योजना की शुरुआत हुए आज पाँच वर्ष से भी अधिक बीत चुका है और इस दौरान देश का विनिर्माण क्षेत्र एवं अर्थव्यवस्था दोनों काफी परिवर्तित हुए हैं। प्रशासनिक मशीनरी के कुशल और शीघ्र स्वस्थ होने पर ही कारोबारी माहौल बनाना संभव हो पाएगा। देखा जाए तो प्रक्रिया और नियामक मंजूरी के लिये भारत में बहुत कठिनाइयाँ हैं। यह विदेशी निवेश में बाधा उत्पन्न करता है इसलिये विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिये एक संतुलित पर्यावरण की आवश्यकता है, जिसमें पारदर्शी कानून, नियमों में स्थिरता होना ज़रूरी है। इस पर ठोस दिशा-निर्देशों के साथ उचित निर्णय लेने की ज़रूरत है। भूमि अधिग्रहण भारत में एक बड़ा मुद्दा है। यह निवेशकों के लिये निवेश से विमुख होने का एक बड़ा कारण है।

भूमि अधिग्रहण कानून, सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों के बीच राजनीतिक मुद्दा बन गया है। हाल ही के भूमि अधिग्रहण बिल में संशोधन पर, अवसरवादी राजनीति, संवेदनशील मुद्दे हावी हो गए। निवेश बढ़ाने के लिये भूमि अधिग्रहण की बाधाओं को दूर करने के लिये उचित परामर्श प्रक्रिया की ज़रूरत है।

श्रमिकों का भी विनिर्माण में अपना महत्त्व है। भारत में निवेश करने के लिये निवेशक पुरातन श्रम कानूनों को एक बाधा रूप में देखते हैं। श्रम के विषय पर अक्सर विविध हितधारकों में राजनीतिक आधार के साथ एक संकीर्ण कदम उठाने की प्रवृत्ति है। इसलिये विनिर्माण क्षेत्र के विकास के लिये उद्योग और श्रमिकों के अनुकूल कानून बनाने की जरूरत है।

3.नई शिक्षा नीति पर निबंध

संकेत बिंदु:

परिचय

नई शिक्षा नीति की विशेषताए

नई शिक्षा नीति के उद्देश्य

निष्कर्ष

परिचय: 29 जुलाई 2020 को कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में नई शिक्षा नीति बनाई गई। यह शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा की गई उत्कृष्ट पहल है। वर्ष 2030 तक इस नीति को पूर्ण रूप से लागू करने की आशा है। उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है।

नई शिक्षा नीति की विशेषताएँ

नई शिक्षा नीति सीखने के लिए पुस्तकों का बोझ बढ़ाने के बजाय व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ाने पर ज्यादा केंद्रित है। छात्रों को पाठ्यक्रम के विषयों के साथ-साथ सीखने की इच्छा रखने वाले पाठ्यक्रम का चयन करने की भी स्वतंत्रता होगी, इस तरह से कौशल विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।यह 10+2 सिस्टम को 5+3+3+4 संरचना के साथ बदल देता है, जिसमें 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 साल की प्री-स्कूलिंग होती है।

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य

नई शिक्षा निति का मुख्य उद्देश्य एक बच्चे को कुशल बनाने के साथ-साथ, जिस भी क्षेत्र में वह रुचि रखता हैं, उसी क्षेत्र में उन्हें प्रशिक्षित करना है। इस तरह, सीखने वाले अपने उद्देश्य, और अपनी क्षमताओं का पता लगाने में सक्षम होते हैं। नई शिक्षा नीति में शिक्षक की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रक्रियाओं के सुधार पर भी जोर दिया गया है।

निष्कर्ष

वर्तमान शिक्षा प्रणाली वर्ष 1986 की मौजूदा शिक्षा नीति में किए गए परिवर्तनों का परिणाम है। इसे शिक्षार्थी और देश के विकास को बढ़ावा देने के लिए लागू किया गया है। नई शिक्षा नीति बच्चों के समग्र विकास पर केंद्रित है। इस नीति के तहत वर्ष 2030 तक अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का लक्ष्य है।

अभ्यास के लिए

कक्षा दसवीं

1. सत्यमेव जयते

   संकेत बिंदु: * भाव * झूठ के पांव नहीं होते *सत्य ही परम धर्म

2. हिंदी हमारी पहचान

   संकेत बिंदु: * मातृभाषा के रूप में *संपर्क भाषा के रूप में * हिंदी का भविष्य

3. भारत का प्राकृतिक सौंदर्य

संकेत बिंदु: * पावन एवं गौरवमय देश भारत * भारत का प्राकृतिक सौंदर्य* ऋतुओं का अनुपम उपहार

अपने विचारों या भावनाओं को लिखित रूप में दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने के संबंध में पत्र लेखन का कौशल महत्वपूर्ण है। अपने सभी संबंधियों, पदाधिकारीयों, मित्रों, संपादकों आदि से जोड़ने की कला पत्र लेखन कहलाती है। पत्र लेखन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है जो लोगों को समाज से जोड़कर रखती है। एक अच्छा पत्र व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रदर्शित करने में सहायक होता है।

औपचारिक व अनौपचारिक पत्र लिखने के लिए ध्यान देने योग्य बातें :

*पत्र लिखते समय लिखने वाले तथा पत्र प्राप्त करने वाले का नाम व पता दिनांक के साथ लिखा जाना चाहिए।

*पत्र का विषय स्पष्ट होना चाहिए अनावश्यक बातों को पत्र में नहीं लिखना चाहिए।

*पत्र लिखते समय क्रमबद्धता का विशेष ध्यान दिया जाना।

*पत्र का आकर संक्षिप्त होना चाहिए तथा विषय के अनुकूल होना चाहिए कम शब्दों में अधिक बात कहने की कोशिश करनी चाहिए।

*पत्र अधूरा नहीं होना चाहिए पत्र को इस प्रकार समाप्त करना चाहिए कि पत्र का संदेश स्पष्ट हो सके।

पत्र मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं-

1. **औपचारिक पत्र** 2. **अनौपचारिक पत्र**

1. **औपचारिक पत्र** - औपचारिक पत्र उन लोगों को लिखे जाते हैं जिनसे हमारा निजी या पारिवारिक संबंध नहीं होता है। सरकारी तथा व्यावसायिक कार्यों से संबंध रखने वाले पत्र औपचारिक पत्रों के अंतर्गत आते हैं। औपचारिक पत्र के अंतर्गत निम्नलिखित पत्र को शामिल किया जाता है:

* **आवेदन पत्र/प्रार्थना पत्र**
* **कार्यालयी पत्र**
* **संपादकीय पत्र**
* **शिकायती पत्र**
* **व्यवसायिक पत्र**
* **किसी अधिकारी को पत्र**

औपचारिक पत्र का प्रारूप-

1. प्रेषक का नाम एवं पता
2. औपचारिक पत्र लिखने की शुरुआत बाईं ओर से की जाती है।
3. सर्वप्रथम सेवा में शब्द लिखकर पत्र पाने वाले का नाम पद लिखकर आने वाले के लिए उचित संबोधन का प्रयोग किया जाता है जैसे श्रीमान, मान्यवर, आदरणीय आदि
4. इसके बाद पत्र पाने वाले का पता कंपनी का नाम लिखा जाता है
5. इसके बाद पत्र में दिनांक लिखा जाता है
6. विषय के अंतर्गत पत्र किसके संबंध या संदर्भ में लिखा जा रहा है, लिखते हैं
7. विषय लिखने के बाद एक बार फिर पत्र पाने वाले के लिए संबोधन का प्रयोग किया जाता है
8. मुख्य विषय वस्तु के अंतर्गत विषय का विस्तार से वर्णन किया जाता है

9.मुख्य विषय का अंत होने के पश्चात धन्यवाद के साथ औपचारिक रूप में भवदीय/ भवदीया प्रार्थी/प्रार्थिनी ,विनीत आदि का प्रयोग किया जाता है

10. पत्र के अंत में जो पत्र लिख रहा है उसका पूरा नाम लिख दिया जाता है।

11. प्रश्न में पता नहीं होने पर पति के स्थान पर काल्पनिक पता लिखना चाहिए यदि प्रश्न पत्र में नाम का उल्लेख न हो तो नाम की जगह कखग लिखना चाहिए

कार्यालय पत्र का प्रारूप

प्रेषक का नाम.....

पता .....

सेवा मे

कार्यालय प्रमुख का पदनाम .....

विभाग का नाम .....

स्थान .....

दिनांक .....

विषय .....

सम्बोधन .....

विषयवस्तु

.....

.....समापन

धन्यवाद ज्ञापन

भवदीय

लिखने वाले का नाम/हस्ताक्षर .....

पता .....

संपादक के नाम पत्र

प्रेषक का नाम.....

पता .....

सेवा मे .....

समाचार पत्र का नाम .....

समाचार पत्र का पता .....

दिनांक .....

विषय .....

सम्बोधन

प्रारंभ ....मुख्य विषयवस्तु

.....

.....समापन

धन्यवाद ज्ञापन

भवदीय

लिखने वाले का नाम/हस्ताक्षर .....

पता .....

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

प्रेषक का नाम.....

पता .....

दिनांक .....

सम्बोधन .....

अभिवादन .....

प्रारंभ ....मुख्य विषयवस्तु

.....

.....समापन

अभिनिवेदन

प्रेषक का नाम .....

पता .....

अनौपचारिक पत्र- सभी संबंधियों, मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों आदि को लिखे हुए पत्र अनौपचारिक पत्र कहलाते है। इन्हें व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है। अनौपचारिक पत्रो की भाषा आत्मीय एवं हृदय को स्पर्श करने वाली होती है।

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप:

*सबसे पहले बाईं ओर भेजने वाले का पता लिखा जाता है।

*प्रेषक के पते के नीचे तिथि लिखी जाती है।

*जिसे पत्र लिखा जा रहा है , बड़ा है तो पूजनीय, आदरणीय जैसे शब्दों के साथ उनसे संबंध लिखते हैं। जैसे पूजनीया माताजी। यदि अपने से छोटे या बराबरी वाले को पत्र लिखा जा रहा है तो उनके नाम के साथ प्रिय बंधुवर इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

*इसके बाद पत्र का मुख्य भाग दो या तीन अनुच्छेद में लिखा जाता है।

*पत्र के अंत में आपका प्रिय तुम्हारा स्नेही का प्रयोग करके प्रेषक के हस्ताक्षर किए जाते है।

उदाहरण 1.

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु प्रार्थना पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
नई दिल्ली
दिनांक :

विषय: आर्थिक सहायता हेतु प्रार्थना

मान्यवर,

कल स्कूल के सूचना पत्र पर सूचना निकली थी कि योग्य छात्र-छात्राओं को निर्धन कोष से सहायता देने हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रित किए जाते हैं तद्नुसार में यह प्रार्थना पत्र आपकी सेवा भेज रहा। मैं कक्षा 9 ' ब' का छात्र हूं। मैं आठवीं कक्षा में 90% अंक प्राप्त किए थे। मेरे पिताजी प्राइवेट कंपनी में काम करते थे। विगत चार माह से पिताजी बेरोजगार हो गए हैं। इस समय घर का खर्च चलाना कठिन हो रहा है। मेरे लिए आगामी मास की फीस जमा करना संभव नहीं है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे निर्धन छात्र कोष से फीस दिलवाने की व्यवस्था की जाए जिससे मैं यह शिक्षण सत्र पूरा कर सकूं। आपकी अति कृपा होगी।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
क.ख.ग.
कक्षा 9 ब

उदाहरण 2.

अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारी को क्षेत्र में समय से सफाई न होने का शिकायती पत्र लिखिए।

मयूर विहार
नई दिल्ली
सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी महोदय
दिल्ली नगर निगम
दिनांक: ××•××•××××

विषय: समय से क्षेत्र की सफाई न होना।

महोदय,

आपसे से सविनय निवेदन है कि लाजपत नगर क्षेत्र में पिछले एक महीने से सफाई की समुचित व्यवस्था नहीं हो पा रही है।सफाई कर्मचारी समय से नहीं आते हैं। सफाई कर्मचारी सप्ताह में एक-दो दिन के लिए आते हैं लेकिन सफाई के कार्य को पूरा नहीं करते है। सड़कों पर कूड़े के अंबार लग गए हैं तथा नालियों में पानी सड़ रहा है। पूरे क्षेत्र में दुर्गंध से रहना दुश्वार हो रहा है। मक्खी और मछली का बोलबाला है। क्षेत्र में डेंगू फैलने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

पता आपसे प्रार्थना है कि इस चित्र की सफाई निरीक्षक को उचित निर्देश देकर इस व्यवस्था को दूर करने की कृपा करें।

सधन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

अध्यक्ष

समाज कल्याण समिति

उदाहरण 3.

ऐतिहासिक भ्रमण पर जाने के लिए अनुमति प्राप्त करने हेतु पिताजी को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

दिल्ली

दिनांक:××•××•××××

पूज्य पिताजी

सादर चरण स्पर्श

आपका पत्र मुझे प्राप्त हुआ। पत्र को पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि घर पर सब ठीक है। हमारे स्कूल की छात्रों को दीपावली अवकाश में एक ऐतिहासिक भ्रमण के लिए जाया जा रहा है राजस्थान के जयपुर क्षेत्र में स्थित है। वहां पर बहुत सारी ऐतिहासिक इमारतें हैं जिनको हमें देखने का मौका मिलेगा। शैक्षणिक भ्रमण से वापस आने के बाद इस भ्रमण पर आधारित एक रिपोर्ट लिखना होगा।

आदरणीय पिताजी कृपया मुझे इस भ्रमण पर जाने की अनुमति प्रदान करें तथा खर्च हेतु ₹1000 शीघ्र भेजने का कष्ट करें। माता जी को चरणस्पर्श। छोटे भाई को स्नेह।

आपका प्रिय पुत्र

क.ख.ग.

संदेश - लेखन

संदेश को अंग्रेजी भाषा में **'मैसेज'** कहा जाता है। संदेश लेखन का अर्थ है- अभिप्रेरित बात कहना या महत्त्वपूर्ण संक्षिप्त सूचना देना। "किसी व्यक्ति विशेष या समूह द्वारा किसी व्यक्ति को या समूह को बताई जाने वाली अभिप्रेरित बात या महत्त्वपूर्ण संक्षिप्त सूचना को संदेश कहते हैं।" नोट पाठ्यक्रम में संदेश-लेखन के लिए 5 अंक निर्धारित किए गए हैं।

संदेश लेखन के प्रकार

संदेश लेखन के सामान्य तौर पर दो प्रकार हैं-

1. औपचारिक संदेश- ऐसे संदेश, जो कार्यालयी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किसी कार्यालय के अधिकारी आदि को लिखे जाते हैं, वे औपचारिक संदेश कहलाते हैं; जैसे- बैंक, कंपनी, मोबाइल, व्यापार संबंधित या प्रधानमंत्री का देश के नाम संदेश आदि।

2. अनौपचारिक संदेश ऐसे संदेश, जो अपने सगे संबंधी या मित्र को लिखे जाते हैं, वे अनौपचारिक संदेश कहलाते हैं; जैसे- जन्मदिन, सालगिरह आदि के अवसर पर अपने मित्रों या रिश्तेदारों को शुभकामना संदेश लिखना ।

पाठ्यक्रम में मुख्यतः अनौपचारिक संदेशों को शामिल किया गया है, जिसके अंतर्गत हम निम्नलिखित संदेशों का अध्ययन करेंगे-

1. शुभकामना संदेश जन्मदिवस, किसी प्रतियोगिता में उत्तीर्ण होने पर कक्षा में प्रथम आने पर, पदोन्नति होने पर इत्यादि ।

2. पर्व तथा त्योहारों पर दिए जाने वाले संदेश स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, होली, दीपावली, ईद आदि।

3. विशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश पुण्यतिथि, शोक संदेश, भागवत कथा का आयोजन, स्वच्छ भारत अभियान, पर्यावरण दिवस आदि।

संदेश लेखन के अंग

संदेश लेखन के निम्नलिखित अंग माने जाते हैं-

1. शीर्षक संदेश लेखन में शीर्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। संदेश लिखते समय सर्वप्रथम शीर्षक लिखा जाता है। शीर्षक सरल तथा संक्षिप्त होना चाहिए; जैसे– जन्मदिवस पर शुभकामना संदेश।

2. दिनांक शीर्षक लिखने के बाद दिनांक को लिखना चाहिए। दिनांक भी संदेश लेखन का अनिवार्य अंग माना गया है। दिनांक लिखने के कई प्रकार हैं; जैसे- 2 जनवरी, 20XX, 2-1 – 20XX, 2/1/ 20XX आदि।

3. समय दिनांक के बाद समय लिखा जाता है। जिस समय संदेश लिखा जाता है, उसी समय का वर्णन किया जाता है; जैसे- प्रातः 6:00 बजे, शाम 4:00 बजे आदि।

4. अभिवादन अभिवादन का अर्थ है- श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला नमस्कार या वंदना। जिसको संदेश लिखा जा रहा है, उसके प्रति संबंध के अनुसार ही समुचित अभिवादन का प्रयोग करना चाहिए; जैसे- प्रिय मित्र, आदरणीय पिताजी, श्रद्धेय चाचाजी आदि ।

5. मुख्य भाग/विषय-वस्तु संदेश लेखन में मुख्य भाग में विषय का विस्तार किया जाता है तथा कम-से-कम शब्दों में अपनी बात पूर्ण की जाती है। इस प्रकार, मुख्य भाग में महत्त्वपूर्ण जानकारी का वर्णन किया जाता है।

6. प्रेषक 'प्रेषक' का अर्थ है- भेजने वाला। संदेश भेजने वाले को प्रेषक कहा जाता है। संदेश लेखन में मुख्य भाग के बाद प्रेषक का नाम लिखा जाता है।

संदेश लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

| संदेश लेखन करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए-

1. संदेश को हमेशा बॉक्स में लिखा जाना चाहिए।
2. बॉक्स के बीचोंबीच सबसे पहले शुभकामना संदेश/शोक संदेश आदि 'शीर्षक' लिखा जाना चाहिए।
3. बाईं तरफ दिनांक तथा उसके नीचे समय लिखना चाहिए।
4. उसके बाद अभिवादन; जैसे- प्रिय, मान्यवर आदि ।
5. इसके नीचे मुख्य विषय का वर्णन करें। ध्यान रखें कि यह वर्णन ज्यादा लंबा न हो।
6. अंत में प्रेषक यानी भेजने वाले का नाम लिखना चाहिए।
7. संदेश लेखन 40 शब्दों की सीमा में लिखा जाना चाहिए, इसलिए शब्द चयन ऐसा होना चाहिए, जो सरल, संक्षिप्त तथा सारगर्भित हो

यानी मुख्य भाव को कम-से-कम शब्दों में प्रस्तुत कर सके। इसमें विषयानुकूल चित्रों का समावेश भी किया जा सकता है।

8. विषयानुकूल किसी दोहे, श्लोक या शायरी, नारे आदि का प्रयोग भी कर सकते हैं। इनका प्रयोग करने से संदेश का विषय आकर्षक बन जाता है।

संदेश लेखन का प्रारूप

शीर्षक- जन्म दिन पर शुभकामना संदेश

दिनांक–20-10-2023

समय- 10 बजे

अभिवादन- प्रिय मित्र रमेश

मुख्य भाग विषय-वस्तु- तुम्हें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। तुम हमेशा स्वस्थ रहो तथा जीवन में प्रगति करते हुए उन्नति के शिखर छुओ। तुम्हारे जन्मदिन के अवसर पर मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि तुम सुखी और दीर्घायु बनो।

प्रेषक- राम प्रकाश

तुम्हारा मित्र

साधित उदाहरण

1 आपके भाई को राष्ट्रपति द्वारा 'वीर बालक सम्मान' से पुरस्कृत किया गया है, उसे बधाई देने हेतु संदेश लिखिए।

उत्तर-

बधाई संदेश

दिनांक 20 अगस्त, 20XX

समय 7:00 बजे प्रातः

प्रिय अनुज! जानकर अति हर्ष हुआ कि तुमने नदी में कूदकर एक छोटे से बच्चे की जान बचाई। यह अत्यंत सराहनीय कार्य है, जिसके लिए तुम्हें राष्ट्रपति द्वारा 'वीर बालक सम्मान' प्राप्त हुआ है। मेरी तरफ से इस सम्मान के लिए तुम्हें ढेर सारी बधाइयाँ। मेरी ईश्वर से कामना है कि तुम जीवन में इसी प्रकार साहसिक कार्य करते रहो और दूसरों के लिए प्रेरणा बनो।

तुम्हारा अग्रज श्याम सिंह वर्मा

2 ... गभग 40 शब्...

उत्तर-

बधाई सन्देश

दिनांक 20 मार्च, 20XX

समय प्रात: 9 बजे

प्रिय मित्र,

"तुम्हें नीट की परीक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त करने की बहुत-बहुत बधाई।"

सुनकर बड़ा ही हर्ष और गर्व हुआ । मैं तुम्हें इसकी बधाई देता हूँ मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद थी तथा आशा करता हूँ कि तुम इसके बाद भी ऐसे ही मेहनत करोगे और हर परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे। इससे विद्यालय / संस्था एवं पूरे परिवार का गौरव बढ़ेगा। मैंने तुम्हारी सफलता की बात अपने परिवार को बताई तथा इस बातको सुनकर सभी बहुत खुश हुए एवं बधाई भी दी।

तुम्हारा मित्र

रोहित

बधाई सन्देश

दिनांक 30 जनवरी, 20XX

समय प्रातः 8 बजे

प्रिय मित्र

"आज से सूर्य हुए हैं उत्तरायण, शुभ तिथियों का हुआ है आगमन आपके जीवन में शुभ घड़ी आए

बधाई सन्देश

4. विदेश में रहने वाले अपने चाचा-चाची को नव वर्ष की शुभकामना का संदेश लगभग 40 शब्दों में लिखिए।

उत्तर

शुभकामना सन्देश

दिनांक 31 दिसम्बर, 20XX

समय रात्रि 11:155 बजे

प्रिय चाचा/चाची

नमस्कार ।

आपको सपरिवार नूतन वर्ष 2022 की शुभकामनाएँ एवं हार्दिक बधाई।"नया सवेरा नई किरण के साथ नया दिन एक प्यारी सी मुस्कान के साथ आपको नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ ढेर सारी दुआओं के साथ |"

यह वर्ष आपके जीवन में सुख, समृद्धि, यश, प्रसन्नता और सफलता लेकर आए।

आपका प्यार

रोहन

कामना का

उत्तर

शुभकामना सन्देश

दिनांक 18.5.2021

समय प्रातः 10 बजे

प्रिय सहपाठियों,

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि हमारी कक्षा की बोर्ड परीक्षाएँ शीघ्र ही शुरू होने जा रही है। अतः आप सभी को इसके लिए शुभकामनाएँ। परीक्षा के लिए बेहतर से बेहतर तैयारी करे व आत्मविश्वास बनाए रखे। आप सभी की परीक्षाएँ अच्छे से पूर्ण हो जाएँ आप सभी सफलता प्राप्त करें ऐसी ईश्वर से

6 स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशवासियों के लिए शुभकामना संदेश लिखिए।

उत्तर

दिनांक 15 अगस्त, 20XX

समय 6:00 बजे प्रातः

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामना हेतु संदेश

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ देश को स्वतंत्र करवाने के लिए अनेक वीरों ने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। हमें उन वीरों के बलिदान के महत्व को समझते हुए देश की आज़ादी को बनाए रखने का संकल्प लेना चाहिए। आइए इस स्वतंत्रता दिवस के मौके पर हम खुद को अपराध, भ्रष्टाचार, भय और जातिवाद से मुक्त करने का संकल्प लें।

जय भारत

बधाई संदेश

दिनांक 24 मार्च, 20XX

बधाई संदेश

समय 12:00 बजे दोपहर

मेरे प्यारे छोटे भाई ।

आज रक्षाबंधन का शुभ अवसर है, लेकिन दुख की बात है कि तुम मेरे पास नहीं हो। मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है। तुम जल्दी ही घर आ जाओ। इस पावन अवसर पर मैं तुम्हारे कुशलप्रेम, प्रसन्नता और सुरक्षा की कामना करती हूँ। बेशक तुम मुझसे बहुत दूर हो पर मेरे दिल के पास हमेशा रहोंगे। मेरी ताकत का स्तंभ बने रहने के लिए तुम्हारा

धन्यवाद।

तुम छोटे जरूर हो पर मेरा ध्यान हमेशा बड़े भाई की तरह ही रखते हो। मैं बहुत खुशनसीब हूँ कि मुझे तुम्हारे जैसा भाई मिला।

अभ्यास-

1. आपके मित्र की टीम ने राज्य स्तर पर होने वाली क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। इस संबंध में अपने मित्र को बधाई संदेश लिखिए।

2. होली की शुभकामनाएँ देते हुए अपने चचेरे भाई को संदेश लिखिए।

3. गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए देशवासियों को एक संदेश लिखिए।

4. 'स्वच्छ भारत अभियान' विषय के संबंध में जागरूक करते हुए क्षेत्र के निवासियों को एक संदेश लिखिए।

5. महात्मा गाँधीजी की पुण्यतिथि के अवसर पर होने वाले कार्यक्रम का विवरण देते हुए एक शोक संदेश लिखिए।

6. धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इस संबंध में अपने मित्र को जागरूक करते हुए संदेश लिखिए।

7. कोविड-19 महामारी को फैलने से रोकने हेतु सरकार द्वारा नागरिकों को दिया जाने वाला संदेश तैयार कीजिए।

8 अपने मौसेरे भाई के विवाह के उपलक्ष्य में उसे बधाई देते हुए भकामना संदेश लिखिए।

9 धार्मिक एकता के संबंध में समाज को जागरूक करते हुए एक संदेश लिखिए।

10 राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली निबंध प्रतियोगिता के विषय में बताते हुए एक संदेश लिखिए।

11. आपके मित्र ने नया लैपटॉप खरीदा है। इस संबंध में उसे बधाई देते हुए एक संदेश लिखिए।

12.

आपके चचेरे भाई का एस.एस.सी. परीक्षा के द्वारा क्लर्क पद पर चयन हुआ है। इस संबंध में शुभकामना देते हुए एक संदेश लिखिए|

विज्ञापन लेखन

अर्थ और परिभाषा:

सामान्य रूप से विज्ञापन शब्द का अर्थ है **'ज्ञापन कराना'** या **'सूचना देना'। विज्ञापन**, अंग्रेज़ी शब्द **'एडवरटाइजिंग'** का हिंदी पर्याय है, जब किसी वस्तु या सेवा के लिए इसका प्रयोग होता है, तो इसका अभिप्राय लोगों को उस ओर आकृष्ट करना होता है।

इसे **'सार्वजनिक सूचना की घोषणा'** भी कह सकते हैं, क्योंकि यह ऐसी सूचना होती है, जो जन-साधारण के हितों से जुड़ी होती है। विज्ञापन उन समस्त गतिविधियों का नाम है, जिनका उद्देश्य किसी विचार, वस्तु या सेवा के विषय में जानकारी प्रसारित करना है और इससे विज्ञापनकर्ता का उद्देश्य ग्राहक को अपनी इच्छा के अनुकूल बनाना है।

विज्ञापन से ग्राहक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इससे ग्राहक या उपभोक्ता उस विचार, वस्तु अथवा सेवा से स्वयं को जोड़ने लगता है और बाद में उसे अपनाने लगता है।

विज्ञापन की आवश्यकता

औद्योगिकीकरण के दौर में विज्ञापन का जन्म हुआ। आज विज्ञापन, व्यवसाय जगत का एक अनिवार्य अंग बन चुका है। किसी नए उत्पाद के विषय में जानकारी देने, इसकी विशेषताएँ व प्राप्ति स्थान आदि बताने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता पड़ती है। एक ही उत्पाद के क्षेत्र में असंख्य प्रतियोगी आ गए हैं। यदि विज्ञापन का सहारा न लिया जाए, तो सामान्य जनता तक अपने उत्पाद की जानकारी दी ही नहीं जा सकेगी। आज विज्ञापनों के माध्यम से किसी उत्पाद के बाज़ार में आने से पहले ही उसके विषय में उपभोक्ताओं के अंदर जिज्ञासा उत्पन्न कर दी जाती है। इस प्रकार विज्ञापन, आधुनिक युग का विशेषकर औद्योगिक संस्कृति का अभिन्न तत्त्व हो गया है। विज्ञापन विक्रय-व्यवस्था में वस्तु का परिचय कराने, उसकी विशेषताएँ तथा लाभ बताने का काम करके ग्राहक को आकृष्ट करने में उपयोगी भूमिका निभाता है।

विज्ञापन का उद्देश्य:-

विज्ञापन का कोई एक उद्देश्य नहीं होता है, बल्कि इसके अनेक उद्देश्य होते हैं, जिनमें निम्न तीन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं

1. तात्कालिक बिक्री तात्कालिक रूप से अपने उत्पादों की बिक्री करना भी कंपनियों का महत्त्वपूर्ण कार्य होता है।
2. बिक्री के लिए प्रेरित करना कंपनियों का कार्य केवल उत्पाद का उत्पादन करना ही नहीं होता, बल्कि उस उत्पाद की बिक्री करना और बिक्री को बढ़ाना भी होता है।
3. उत्पाद से लोगों को परिचित कराना अपने उत्पाद से परिचित कराने, उसके प्रति उत्सुकता जागृत करने, खरीदने की इच्छा जगाने आदि संबंधी कार्य भी महत्त्वपूर्ण हैं।

विज्ञापन के प्रकार:-

विज्ञापन प्रायः तीन प्रकार से दिए जाते हैं-

(i) मौखिक विज्ञापन व्यक्तिगत प्रचार, रेडियो, आकाशवाणी आदि के माध्यम से किए जाते हैं। इसके अंतर्गत उत्पाद के बारे में जानकारी केवल बोलकर ही दी जाती है।

(ii) लिखित विज्ञापन प्रायः पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते हैं। लिखित विज्ञापन में उत्पाद के बारे में जानकारी लिखकर दी जाती है। लिखित विज्ञापन को डिज़ाइनों, रंगों, स्लोगनों आदि के प्रयोग से प्रभावी तथा आकर्षक बनाया जाता है।

(iii) दृश्य-श्रव्य विज्ञापन के अंतर्गत प्रायः दूरदर्शन में दिखाए जाने वाले विज्ञापन आते हैं। इन विज्ञापनों में उत्पाद के बारे में जानकारी चलचित्रों के द्वारा अत्यंत आकर्षक ढंग से उपभोक्ताओं तक पहुँचाई जाती है। इस माध्यम की पहुँच सबसे अधिक व्यापक है।

आपके निर्धारित पाठ्यक्रम में लिखित विज्ञापनों को स्थान दिया गया है।

विज्ञापन के उदाहरण-

किसी ऑनलाइन कंपनी की ओर से ऑनलाइन शॉपिंग करने हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

अब घर बैठे शॉपिंग कीजिए

कल्पना ऑनलाइन शॉपिंग

| उत्पाद का नाम- अपना ऑनलाइन शॉपिंग

घर बैठे शॉपिंग करने के लिए बस एक क्लिक कीजिए www.alpnashopping.com

सभी उत्पादों पर 30% की छूट जल्दी कीजिए(ऑफर सीमित समयके लिए

साधित उदाहरण

1 आपके बड़े भाई ने बेकरी की एक दुकान खोली है। उसके लिए लगभग 40 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए जिसका विषय है-"मतदानः प्रत्येक नागरिका का अधिकार और कर्त्तव्य" ।
उत्तर

'बेकरी पदार्थ और केक के लिए सब

टेस्टी केक एंड बेकर्स

हमारे यहाँ स्वादिष्ट फ्रेश फ्रूट केक, चॉकलेट केक तथा सभी प्रकार के केक मिलते हैं।

एक बार हमारी बेकरी का केक खाओगे तो हमेशा केक लेने यही आओगे।

पता-दुकान नं. -5, रोहिणी, दिल्ली, दूरध्वनि क्रमांक - 182060

2. आपकी बहन का एक थिएटर-समूह है। वे इस शहर में अपने नए नाटक का मंचन करने जा रही हैं। उसके प्रचार-प्रसार के लिए लगभग 40 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए ।

उत्तर

सरिता थियेटर-समूह 'रंगायन'

ठाकुर का कुआँ

द्वारा नाटक की प्रस्तुति

मूल कहानी - प्रेमचंद

परिकल्पना एवं निर्देशन सरिता शर्मा

नाटक का समय

सोमवार सुबह 10 बजे का रहेगा।

स्थान - सरिता थियेटर क. ख. ग. घ नगर

मेल - Sarita 2534@gmail.com

दूरध्वनि क्रमांक - 11XXXXXX

प्रवेश

निःशुल्क

3 मुख्य चुनाव आयुक्त की ओर से 40 शब्दों का एक विज्ञापन तैयार कीजिए जिसका विषय है- "मतदान : प्रत्येक नागरिक का अधिकार और कर्त्तव्य" ।

उत्तर

मतदानः प्रत्येक नागरिक का अधिकार और कर्त्तव्य

भारत निर्वाचन आयोग की तरफ से सर्वसाधारण से अपील कि जाती है कि आप सभी अपने मत के अधिकार का प्रयोग जरूर करें।

छोड़ों अपने सारे काम

'चला वोट दें।)

पहले चलो करे मतदान

लोकतंत्र का करो सम्मान

शत-प्रतिशत करो मतदान

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जनहित में जारी चुनाव, आयुक्त दिल्ली।

4. आपकी सोसायटी के पास ठेले लगाने वाले व्यक्ति का 10 वर्षीय बच्चा गुम हो गया है। उसके लिए अखबार में 'खोया-पाया' कॉलम के अन्तर्गत एक विज्ञापन 40 शब्दों में तैयार कीजिए ।

उत्तर

गुमशुदा की तलाशगुमशुदा की तलाश

एक बालक, जिसका नाम राहुल है, उम्र 10 वर्ष, रंग गेहुँआ, कद 3 फीट 5 इंच है। ये बालक सुबह अपने घर D-40 जनकपुरी, दिल्ली से लापता है। यह लड़का सफेद रंग की शर्ट और नीले रंग की जीन्स पहने हुए हैं। इसके पिता जी जनकपुरी बाजार में ठेला लगाते हैं। जिस किसी भी सज्जन को उक्त बालक के विषय में कोई जानकारी प्राप्त हो, तो तुरन्त नीचे दिए नंबरों पर सूचना दें।

राजकुमार

सूचना देने वाले व्यक्ति को ईनाम दिया जाएगा।

बैरकपुर, कोलकाता-120

-9950XXXXXX/2615XXXXXX

5. महिलाओं की सहायता हेतु स्थापित संस्था 'सहयोगिनी' के प्रचार-प्रसार के लिए लगभग 40 शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए ।

उत्तर

महिलाओं की सहायता हेतु एक मात्र 'सहयोगिनी' संस्था

महिला सशक्तीकरण को मजबूत करना।

ग्रामीण परिवारों को स्थानीय स्तर पर

रोजगार उपलब्ध कराना।

महिलाएँआत्मनिर्भर बनें।

आत्मनिर्भर का राग गाओ खुद में खूब विश्वास जगाओ।

पता - D - 72 सोदपुर, सहयोगिनी संस्था

उत्तर

मनभावन कम्पनी द्वारा निर्मित

"सोलर कुकर लाइए गैस का खर्चा बचाइए।"

• एक परिवार का भोजन बनाने के लिए पर्याप्त ।

• शुद्ध स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन प्रदूषण रहित पर्यावरण।

• खाना स्वतः धीरे-धीरे पकता है, जलता नहीं है।

• अतः विटामिन, मिनरल आदि नष्ट नहीं होते हैं।

आइए जल्दी आइए हर घर में

होगा अब सोलर कुकर

रविरश्मि कम्पनी द्वारा निर्मित सोलर कुकर

Go Green = Go Solar = SAVE Environment

स्थान-रविरश्मि कम्पनी, गाँधीनगर

Ravirashi@gmail.com Mobile-921530XXXXXX

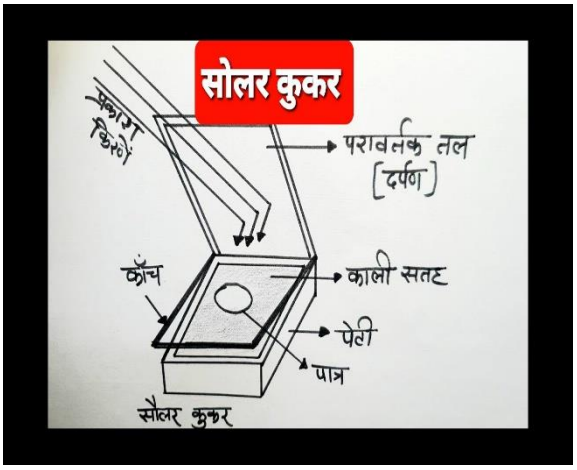

जल्दी कीजिए

स्टॉक सीमित है।

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों से संबंधित विज्ञापन लेखन 40 शब्दों में कीजिए।

1 टेस्टी केक एंड बेकर्स की ओर से अपने उत्पादों के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

2 बॉल पेनों की एक कंपनी 'सफल' नाम से बाजार में आई है उसके लिए एक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार कीजिए।

3 एक फाइनेंस कंपनी की ओर से लोगों को ऋण देने का प्रचार करने हेतु विज्ञापन लेखन कीजिए।

4 एक टूर एंड ट्रैवलर्स कंपनी की ओर से लोगों को कम पैसे में अमरनाथ यात्रा कराने से संबंधित एक विज्ञापन लिखिए। एबीसी कंपनी को 1 वर्ष के अनुबंध पर ए सी मैकेनिक की आवश्यकता है। इसके लिए विज्ञापन लेखन कीजिए।

5 रजिस्टर एवं कॉपियाँ बनाने वाली 'रचना कंपनी' के लिए उत्पाद प्रचार करने हेतु एक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार कीजिए।

6 एक सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट कंपनी की ओर से कम कीमत में नई वेबसाइट बनाने से संबंधित विज्ञापन लेखन कीजिए।

7 आपके पिताजी पुरानी कार बेचना चाहते हैं। इसके लिए पूरा विवरण देते हुए एक विज्ञापन का आलेख लगभग 40 शब्दों में तैयार 'कीजिए।

8 सर्वोदय विद्यालय, बादली में शिक्षकों की भर्ती हेतु विज्ञापन लिखिए। 9 एयरकंडीशनर बनाने वाली एक कंपनी की ओर से ए. सी. एक्सचेंज मेला आयोजित करने से संबंधित एक विज्ञापन लिखिए।

10 राधिका ऑप्टिकल्स की ओर से कंप्यूटर द्वारा लोगों की मुफ्त नेत्रजाँच करने से संबंधित एक विज्ञापन लेखन कीजिए।

11 एक कोचिंग संस्थान द्वारा मेडिकल की तैयारी कराने से संबंधित एक विज्ञापन लिखिए।

12. एक सेल्स कंपनी की ओर से गर्मियों के लिए बच्चों हेतु बनाई गई आकर्षक पोशाकों के प्रचार के लिए एक विज्ञापन लिखिए।

13 चित्रकला प्रदर्शनी के आयोजन हेतु विज्ञापन लेखन कीजिए। 14 किसी प्रकाशक द्वारा अपनी पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के लिए एक विज्ञापन लिखिए |

15 'समर कैंप' की विशेषताओं एवं मुख्य आकर्षण को स्पष्ट करते हुए लोगों को उसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करने हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए ।

16 आपके शहर में विराट हास्य सम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। इसमें देश के प्रसिद्ध हास्य कवि आमंत्रित हैं। इसके प्रचार के लिए एक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार कीजिए ।

ई-मेल (ई-पत्र) लेखन

आज कम्प्यूटर के दौर में ई-मेल के द्वारा ऑनलाइन- पत्र भेजे जाते हैं। ऑनलाइन भेजे जाने वाले पत्र पलक झपकते ही अपने गंतव्य तक पहुँच जाते हैं। इस प्रकार पत्र को इंटरनेट की सहायता से ई-मेल के द्वारा 'प्रेषिती' (प्राप्तकर्ता) तक पहुँचाना 'ऑनलाइन पत्र' या 'ई-पत्र' कहलाता है। ई-मेल दो शब्दों के मेल से बना है ' ई + मेल', 'ई' से अभिप्राय है-इलेक्ट्रॉनिक जबकि मेल का हिन्दी पर्याय है-डाक। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्युत के वेग समान भेजी जाने वाली डाक, इलेक्ट्रॉनिक मेल अथवा ई-मेल कहलाती है।

ऑनलाइन-पत्र भेजने के लिए प्रेषक व प्रेषिती दोनों के पास अपनी वैध 'ई-मेल' आइडी होनी अनिवार्य है। ई-मेल के माध्यम से न केवल संदेशों का बल्कि डिजिटल दस्तावेजों, वीडियो आदि को अटैच (संलग्न) करके किसी दूसरे

ई-मेल पते पर भेजा एवं प्राप्त किया जाता है। वर्तमान समय में सैकड़ों वेबसाइट हैं जो ई-मेल आइडी बनाने की सुविधा उपलब्ध कराती हैं; जैसे-जी-मेल, याहू, रेडिफ मेल, हॉट मेल आदि।

ई-मेल पते के घटक

ई-मेल पते के तीन घटक होते हैं-यूजरनेम (उपयोगकर्ता का नाम), प्रतीक (@) एवं डोमेननेम (जी-मेल, याहू, हॉट मेल आदि)। उदाहरण के तौर पर snehagupta@gmail.com में snehaguptaयूजरनेम है, @ अपने आप में प्रतीक है, जबकि gmail.com डोमेननेम है।

ई-मेल की आवश्यकता

• आज जीवन में प्रतिदिन के कार्यों में व एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने हेतु ई-मेल की आवश्यकता होती है।कम्पनी के उत्पादनकर्ता का ग्राहकों अथवा उपभोक्ताओं के साथ संबंध स्थापित करने के लिए ई-मेल की आवश्यकता होती है। उपभोक्ता शीघ्र ही कम्पनी को उत्पाद से संबंधित समस्याओं से अवगत करा सकता है तथा अपने सुझाव भी दे सकता है।जानकारी अथवा संदेश को किसी भी व्यक्ति तक अति शीघ्र पहुँचाने के लिए ई-मेल की आवश्यकता होती है।

• माउस के एक क्लिक से अपनी शिकायतों, समस्याओं, निमंत्रण, शुभकामनाओं को संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए ई-मेल को प्रयोग में लाया जाता है।ई-मेल एक सुविधाजनक संचार पद्धति है। इसके माध्यम से बिना किसी असुविधा के दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति, सगे-संबंधियों से संपर्क स्थापित करने के लिए ई-मेल की आवश्यकता होती है।

ई-मेल के द्वारा कम खर्च एवं कम समय में संदेश पहुँचाया व प्राप्त किया जा सकता है।

ई-मेल एक सरल व त्वरित संचार का माध्यम होने के कारण आज इसकी उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ई-मेल एक प्रभावी साधन है।

ई-मेल के मुख्य भाग

ई-मेल को क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है अथवा लिखा जाता है, वे ई-मेल के भाग कहलाते हैं। सामान्यतः ई-मेल के भाग निम्नलिखित होते हैं-

1. आरंभ ई-मेल के प्रारंभ में संदेश प्राप्तकर्ता अथवा प्रेषिती का पता लिखता है। 'To' के अंतर्गत जिस व्यक्ति को ई-मेल भेजा जा रहा उसका ई-मेल पता लिखा जाता है; जैसे - To : nehasharma@gmail.com

कभी-कभी ई-मेल भेजते समय दो या दो से अधिक व्यक्तियों को ई-मेल भेजना होता है ऐसे में तीन स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जो निम्न हैं-

(i) To, इसके अंतर्गत उन व्यक्तियों की ई-मेल आईडी को Type किया जाता है जिनको Direct Mail किया जाता है अर्थात् उनको Mail में किया गया सभी Text और Attachementपूर्ण रूप से प्राप्त होता है। (ii) CC का अर्थ है कार्बन कॉपी (Carbon Copy)। इसकेअंतर्गत यदि एक व्यक्ति को ई-मेल भेजना है और यदि आप चाहते हैं कि अन्य दो लोगों को यह पता रहे कि क्या भेजा है तब अन्य दो लोगों का ई-मेल पता CC में डाल सकते हैं जिससे सबका ई-मेल भी एक-दूसरे को दिख जाएगा।

(iii) BCC का अर्थ है ब्लाइंड कार्बन कॉपी (Blind Carbon Copy) | BCC करने से ई-मेल जिस-जिस को किया गया है वह किसी को भी ज्ञात नहीं होता है, गुप्त रहता है।

2. विषय ई-मेल के दूसरे भाग विषय अथवा सब्जेक्ट के अंतर्गत जिस संदेश को लिखा जा रहा है उसे संक्षेप में इसके अंतर्गत बताया जाता है; जैसे- होली की शुभकामनाएँ।

3. संदेश इसके अंतर्गत मूल विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है। मूल विषय ध्यानपूर्वक इसके अंतर्गत लिखा जाता है तथा अनुच्छेद (पैराग्राफ) के मध्य थोड़ी जगह भी छोड़ी जाती है।

4.अटैचमेंट संदेश प्रेषित करते समय यदि किसी दस्तावेज को संदेश अथवा पत्र आदि के साथ संलगित करना होता है तो अटैचमेंट के द्वारा उसे संदेश अथवा पत्र के साथ भेजा जाता है। ध्यान रहे अटैचमेंट का प्रयोग तभी किया जा सकता है जब वह दस्तावेज कम्प्यूटर में सुरक्षित (सेव) हो।

5 अंत ई-मेल में अंत में जब संदेश लिखा जा चुका हो तथा आवश्यकता पड़ने पर अटैचमेंट लगाई जा चुकी हो तत्पश्चात् संबंधित व्यक्ति को संदेश प्रेषित करने के लिए सेंड (Send) के विकल्प का प्रयोग किया जाता है। सेंड के एक क्लिक करने से प्रस्तुत ई-मेल संबंधित व्यक्ति/व्यक्तियों तक पहुँच जाएगी जिसका ई-मेल लिखा गया है।

ई-मेल के प्रकार

ई-मेल का प्रयोग वैयक्तिक अथवा निजी प्रयोग हेतु किया जाता है तथा व्यापार एवं कार्यालय के प्रयोग हेतु अपनी शिकायत, समस्या, उत्पाद खरीदने आदि के लिए भी किया जाता है। इस प्रकार ई-मेल के दो प्रकार होते हैं-

1. औपचारिक ई-मेल (Formal E-mail) 2. अनौपचारिक ई-मेल (Informal E-mail)

1. औपचारिक ई-मेल

औपचारिक ई-मेल उन लोगों को भेजे जाते हैं जिनसे हमारा कोई निजी या पारिवारिक संबंध नहीं होता। किसी संस्था, अधिकारी, व्यापारियों आदि से संपर्क स्थापित करने के लिए भेजे जाने वाले ऑनलाइन संदेश एवं पत्रों को औपचारिक ई-मेल कहा जाता है।

औपचारिक ई-मेल करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

ई-मेल भेजने के प्रारंभ में जिसे संदेश प्रेषित (send) करना होता है, उसका सही व वैध ई-मेल पता लिखा जाना चाहिए।

औपचारिक ई-मेल भेजते समय ई-मेल प्राप्तकर्ता के लिए श्रीमान, मान्यवर, महोदय आदि आदर सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। औपचारिक ई-मेल करते समय विषय-वस्तु को कम शब्दों में लिखने का प्रयास करना चाहिए।

अनुच्छेद (Paragraph) के बीच में उचित स्थान दिया जाना चाहिए। ई-पत्र लिखते समय आवश्यकता पड़ने पर महत्त्वपूर्ण बातों के लिए बुलेट्स आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

ई-मेल द्वारा भेजे गए औपचारिक पत्र में आदर सहित आदि लिखकर पत्र का अंत या समापन करना चाहिए।ई-मेल भेजने से पूर्व अंत में ध्यानपूर्वक पुनः ई-मेल को पढ़ लेना चाहिए।

ई-मेल का जवाब (प्रत्युत्तर) देने हेतु प्रयोग किए जाने वाले वाक्यांश

संबंधियों, मित्रों, पारिवारिक सदस्यों, अधिकारियों, व्यापारियों आदि के द्वारा जब ई-मेल द्वारा संदेश अथवा पत्र भेजा जाता है एवं प्राप्त किया है, तब संबंधित व्यक्ति द्वारा प्राप्त हुए ई-मेल के प्रत्युत्तर में कुछ-न-कुछ वाक्य

कहे जाते हैं जिससे ई-मेल भेजने वाले को यह सुनिश्चित हो |है कि उसके द्वारा भेजा गया ई-मेल उस व्यक्ति को प्राप्त हो गया है।

ई-मेल का उत्तर देने हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले कुछ वाक्यांश के उदाहरण निम्नलिखित हैं-

आपके ई-मेल के लिए धन्यवाद ।

मुझे आपका ई-मेल प्राप्त हो गया है, धन्यवाद।

मुझे खेद है कि मैं कल वापस तुमसे नहीं मिला।

मैं मंगलवार प्रातः 10 बजे बैठक में उपस्थित रहूँगा।

तुमसे अवश्य मिलने आऊँगा।

स्पष्टीकरण के लिए आपका धन्यवाद।

आपके ई-मेल में उल्लेख किए बिंदुओं का मैं पालन करूँगा।

जानकरी के लिए आवेदन संबंधी ई-पत्र लिखिए।

ई-पत्र का प्रारूप (औपचारिक)

- **नौकरी के लिए आवेदन संबंधी ई-पत्र लिखिए**

TO प्रेषिती	Rrrani1234@gmail.com
	CC
	BCC
विषय अथवा सब्जेक्ट	संपादक के पद हेतु आवेदन पत्र

महोदय,

गत दिनों एक समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापन के सन्दर्भ में मैं आपके प्रतिष्ठित संस्थान में संपादक के पद हेतु आवेदन कर रहा हूँ। मेरी शैक्षिक योग्यताओं एवं कार्यानुभवों का विवरण इस ई-मेल में अटैच (संलग्न) है। कृपया इसे प्राप्त करें। आशा है आप मुझे सेवा का एक मौका अवश्य देंगे।

धन्यवाद सहित,

संदेश भेजना / सेंड

भवदीय

संजीत

साधित उदाहरण

1. ध्वनि प्रदूषण की समस्या से अवगत कराते हुए ई-पत्र लिखिए।

उत्तर

TO प्रेषिती	Ramesh2220@gmail.com
विषय	ध्वनिप्रदूषण पर रोक लगाने हेतु।

सेवा में,

नगर योजना अधिकारी,

संत नगर,

दिल्ली |

महोदय,

आजकल हमारे नगर में उद्योगों के बढ़ने के कारण जनसंख्या लगातार बढ़ रही है। कल-कारखानों एवं यातायात का दबाव भी यहाँ अधिक है। सारा दिन कारखानों की आवाजों, ट्रक के भोंपुओं (हॉर्न) की आवाजों आदि के कारण अत्यन्त असुविधा होती है जिसके कारण ध्वनि प्रदूषण होता है साथ ही लोगों का यहाँ रहना दूभर हो गया है।

आपसे प्रार्थना है कि कृपया हमारे क्षेत्र में बढ़ रहे ध्वनि प्रदूषण पर नियंत्रण करने की व्यवस्था करें।

धन्यवाद ।

प्रार्थी

2. ए. टी. एम. कार्ड न मिलने की शिकायत संबंधी ई-पत्र लिखिए।

उत्तर

TO प्रेषिती	debitcard@bobcards.com
FROM/प्रेषक	एटीएम कार्ड न मिलने की शिकायत

सेवा में,

श्रीमान महाप्रबंधक,

बैंक ऑफ बड़ौदा,

शहीद भगत सिंह मार्ग,

कोलाबा, मुंबई-400001

महोदय,

10

BILAL

मेरा खाता नं. .... .. है। मैंने एक माह पहले ए.टी.एम. कार्ड के लिए आवेदन किया था, किंतु यह मुझे अभी तक नहीं मिल सका है। कृपया बताएँ इस देरी की क्या वजह है।

आपसे निवेदन है कि आप मेरा ए.टी.एम. कार्ड शीघ्र से शीघ्र मेरे पते पर भेजने का कष्ट करें।

धन्यवाद ।

भवदीय, पीयूष कुमार

परीक्षा अभ्यास

1. विद्युत विभाग को एक ई-मेल लिखिए जिसमें आपके विद्युत के बिल में अत्यधिक चार्ज लगाने की शिकायत की गई है।
2. आप एक अध्यापक हैं। अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के परिजनों को आगामी 15 जनवरी को आयोजित एक कार्यक्रम में आमंत्रित करने हेतु एक ई-मेल लिखिए।
3. जिलाधिकारी को एक ई-मेल द्वारा अपने क्षेत्र की खाद्य वितरण सामग्री के वितरक के विरुद्ध शिकायत कीजिए ।
4. बेसिक शिक्षा अधिकारी (बी.एस.ए) को एक ई-मेल लिखिए जिसमें आपकी 10th की मार्कशीट में आपके नाम का मिस्प्रिंट की शिकायत की गई हो।
5. शिपिंग कंपनी से सामान के संबंध में पूछताछ करते हुए पत्र लिखिए।
6. भारत संचार निगम लिमिटेड को अपने खराब टेलीफोन की मरम्मत के लिए एक पत्र लिखिए।
7. आयकर अधिकारी को पत्र लिखिए, जिसमें आयकर से माफ़ी एवं पूर्ण मुक्ति के लिए प्रार्थना की गई हो।
8. अपनी कंपनी के निदेशक को पत्र लिखिए, जिसमें ज़रूरी काम निकल आने पर अवकाश लेने हेतु प्रार्थना की गई हो ।
9. ध्वनि प्रदूषण की समस्या से अवगत कराते हुए ई-पत्र लिखिए।
10. ए. टी. एम. कार्ड न मिलने की शिकायत संबंधी ई-पत्र लिखिए।

स्व-वृत्त लेखन

किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अपने बारे में सूचनाओं का सिलसिलेवार संकलन ही स्ववृत्त कहलाता है। इसमें व्यक्ति अपने व्यक्तित्त्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पक्ष को इस प्रकार प्रस्तुत करता है जो नियोक्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी व सकारात्मक छबि प्रस्तुत करता है।

स्ववृत्त में अपनी पूरा परिचय, पता, सम्पर्क सूत्र(टेलीफोन, मोबाइल, ई-मेल आदि), शैक्षणिक व व्यावसायिक योग्यताओं के सिलसिलेबार विवरण के साथ-साथ अन्य संबंधित योग्यताओं, विशेष उपलब्धियों, कार्येत्तर गतिविधियों व अभिरुचियों का उल्लेख होना चाहिए। एक-दो ऐसे सम्मानित व्यक्तियों के विवरण, जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व व उपलब्धियों से परिचित हों, का समावेश भी होना चाहिए।

स्ववृत्त

हाल ही में खींची हुई फ़ोटो यहाँ चिपकाइए

नाम :
पिता का नाम :
माँ का नाम :
जन्म तिथि :
वर्तमान पता :

स्थायी पता :
टेलीफ़ोन नं. :
मोबाइल नं. :
ई-मेल :
भाषाओं का ज्ञान :
शैक्षणिक योग्यताएँ :

क्रम संख्या	परीक्षा/डिग्री डिप्लोमा	संस्थान का नाम	बोर्ड/ महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय	विषय	वर्ष	श्रेणी	प्राप्तांक प्रतिशत
1							
2							
3							
5							
6							
7							

अन्य संबंधित योग्यताएँ
1.
2.
उपलब्धियाँ
1.
2.
3.
कार्येतर गतिविधियाँ और अभिरुचियाँ
1.
2.
3.
4.
सम्मानित व्यक्तियों का विवरण जो मेरे व्यक्तित्व और उपलब्धियों से परिचित हैं।
1.
2.

उद्घोषणा

मैं यह लिखित घोषणा करता हूँ कि मेरे द्वारा प्रदत्त उपरोक्त सभी सूचनाएँ मेरे ज्ञान और विश्वास के आधार पर सत्य और पूर्ण हैं।

स्थान :
दिनांक : हस्ताक्षर

य. र. ल फाउंडेशन उच्च शिक्षा हेतु स्कॉलरशिप प्रदान करती है। अतः उसे भेजने के लिए अपना बायोडॉटा तैयार कीजिए।

स्ववृत्त

नाम : अ.ब.स

पिता का नाम : श्री अक्षय

जन्मतिथि : 12-05-.....

वर्तमान पता : 1490 , अर्बन एस्टेट, कोलकाता

स्थायी पता : यथावता

टेलीफ़ोन नं० : 0181-2228222

मोबाइल नं० : 98xxxxxxxx
ई-मेल : 1980 abc@yahoo.com
शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र० सं०	परीक्षा/डिप्लोमा	बोर्ड	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं	सी०बी०एस०ई०	हिंदी, अंग्रेज़ी, साइंस, संस्कृत, संगीत	प्रथम	69%
2.	बारहवीं	सी०बी०एस०ई०	हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत, गणित, संगीत	प्रथम	71%
3.	स्नातक	पंजाब विश्वविद्यालय	हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत, गणित	प्रथम	75%

अन्य संबधित योग्यताएँ
-कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान
-अंग्रेज़ी व्याकरण का श्रेष्ठ ज्ञान
तिथि : 10-10-2023.....
उद्घोषणा:

मैं यह लिखित घोषणा करता हूं कि मेरे द्वारा प्रदत्त उपरोक्त सभी सूचना मेरे ज्ञान और विश्वास के आधार पर सत्य हैं|

हस्ताक्षर
स्थान

अभ्यास

कल्पना कीजिए कि आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अध्ययन पूरा कर लिया है और किसी प्रसिद्ध अखबार में पत्रकार पद के लिए आवेदन भेजना है। इसके लिए एक आवेवन-पत्र लिखिए।